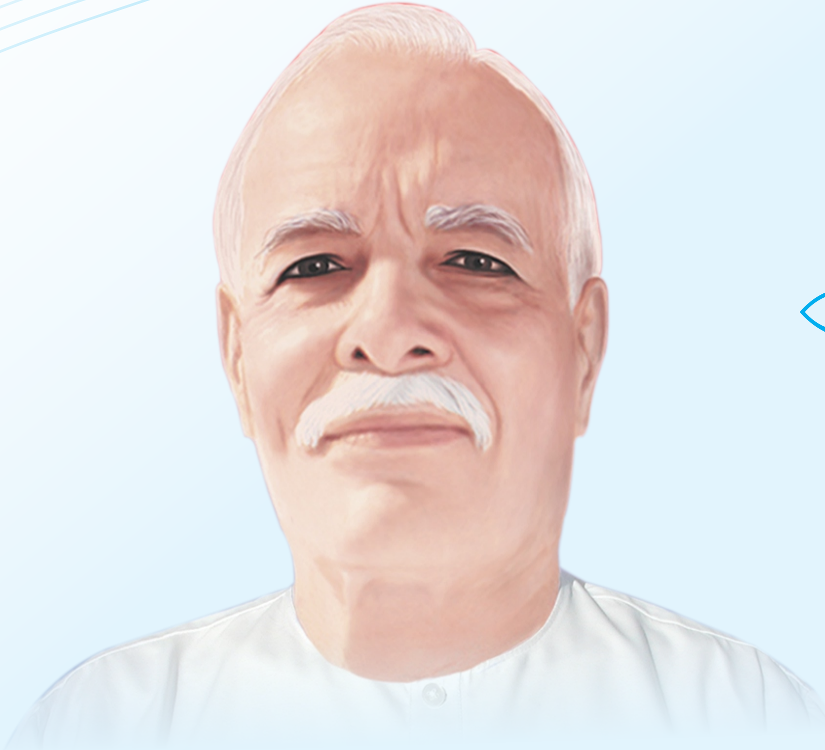

सत्यता

सत्यता

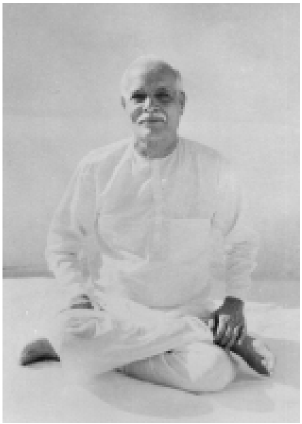

सत्यता

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'सत्यता'** एक है।

प्रस्तावना

परमपिता शिवबाबा जो सत्य स्वरूप हैं और हमें सत् बाप, सत् शिक्षक और सत् गुरु के रूप में आकर सत्य पढ़ाई सरल रूप से हमें पढ़ाते हैं। सत्य स्वरूप में रहने वाली आत्मा को स्वतः ही परमात्म वरदान, आशीर्वाद प्राप्त हो जाते हैं क्योंकि बाबा ने कहा है 'सच्चे दिल पर साहेब राज़ी'। सत्यता को अपनाने वाली आत्मा स्वयं भी 'सच् तो बिढ़ो नच' की स्थिति में सहज रहती है। इस 'सत्यता' विषय पर अव्यक्त बापदादा ने 1969 से 2010 तक जो महावाक्य उच्चारण किये हैं उनका ये बहुत अच्छा संग्रह है।

इसे बार-बार पढ़ने से सत्यता की गुह्यता भी समझ में आती है और सत्यता को धारण करने का बल प्राप्त होता है। आत्मा सहज ही सम्पन्नता की स्थिति में बाबा की समीपता तथा उड़ती कला का अनुभव करती है।

ओम् शान्ति

जरा ध्यान में रखो इतना समय जो बापदादा की गोद में पले और उसमें जो भी कुछ कर्तव्य किया। ऐसे भी है -कोई-काई ने लज्जा के मारे बापदादा से छिपाया है। ऐसे नहीं बाप को पहचान कर सब बाप के आगे रखा है। नहीं। जो समझते हैं -ऐसी भी भूल हुई है। जैसे कोई अपनी दिल से भूल नहीं करते हैं, परन्तु अलबेलाई से हो जाती है। तो यह सबको लिखना है। बापदादा से जिन्होंने बात की है, उन्हों को भी लिखनी है सारी जन्म-पत्री। यह अन्त का समय है ना। 84 का हिसाब-किताब यहाँ ही चूक्तू होता है। 'सच्चाई' और 'सफाई' अक्षर तो कहते हैं, परन्तु सच्चाई और सफाई में भी अन्तर क्या है- उस अर्थ को नहीं समझा है। अब उसकी गहराई में जाकर सारा लिखना है।

(06.07.1969)

आज से यह पक्का करो कि जो कहूँगी सो करुंगी। जो खुद ऐसे बनेंगे उनको देख कर और भी आपे ही करेंगे। आपको मेहनत करने की जरूरत नहीं रहेगी। अब तक तो यही उलहाने मिलते रहते हैं कि- कहते एक हैं,करते तो दूसरा हो। उलाहनों को खत्म करना है। उलाहना खत्म हो फिर क्या बन जायेंगे? अल्लाह (ऊंच) बन जायेंगे। जितना अल्लाह बनेंगे, तो फिर ना चाहते हुए नाम बाला होगा। तो किये हुए कोर्स की यह शिक्षा है मुख्य सार सबसे खौफनाक मनुष्य कौनसा होता है,जिनसे सब डर जाते हैं? दुनिया की बात तो दुनिया में रही, लेकिन इस दैवी परिवार के अन्दर सबसे खौफनाक, नुकसान कारक वो है जो अन्दर एक और बाहर से दूसरा रूप रखता है। वो पर-निन्दक से भी जास्ती खौफनाक है। क्योंकि वो कोई के नजदीक नहीं आ सकता। स्नेही नहीं बन सकता। उनसे सब दूर रहने की कोशिश करेंगे। इसलिए इस भठ्ठी में आप लोगों को यह शिक्षा मिली। इसको सच्चाई और सफाई कहा जाता है। सफाई किस बात में, सच्चाई किस बात में- इनका भी बड़ा गुह्य रहस्य है। सच्चाई-जो करें वो ही वर्णन करें, जो सोचें वहीं वर्णन करें। बनावटी रूप नहीं। मन्सा, वाचा, कर्मणा -तीनों रूप में चाहिए। अगर

मन में कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें भी सच्चाई चाहिए। सफाई-अन्दर में कोई भी विकर्म का किचरा नहीं हो, कोई भी भाव-स्वभाव पुराने संस्कारों का भी किचरा नहीं हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वो ही सच्चा होगा और जो सच्चा होता है उनकी परख क्या होती है? जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले तो वह प्रभुप्रिय होगा, सच्चे पर साहब राजी होता है। तो पहले प्रभुप्रिय होगा, फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा। उसको कोई भी ऐसी नज़र से नहीं देखेगा। उनकी नज़र, वाणी में, उनके कर्म में ऐसी परिपक्वता होगी जो कभी भी ना खुद ही डगमग होगा, ना ही दूसरों को करेगा। जो सच्चा होगा वह प्रिय होगा। कई समझते हैं कि-हम तो सच्चे हैं लेकिन मुझे समझा नहीं जाता है। सच्चा हीरा कभी छिप थोड़ेही सकता है। इसलिए ही यह समझना कि मैं ऐसा हूँ परन्तु मुझे ऐसा समझा नहीं जाता है - यह भी सच्चाई नहीं है। सच्चाई कभी छिप नहीं सकती है और सच्चे सबके प्रिय बन जाते हैं। कई यह भी समझते हैं कि हम नज़दीक नहीं हैं, इसलिए ही प्रख्यात नहीं हैं। लेकिन जो सच्चे और पक्के होते हैं वो दूर होते हुए भी अपनी परख छिपा नहीं सकते, कोई कितना भी दूर हो लेकिन बापदादा के नज़दीक होगा। जो बाप के नज़दीक हैं वो सबके नज़दीक हैं। तो सच्चा बनना। सफाई का सबूत चलन में दिखता है। सिर्फ समझना ही नहीं हैं लेकिन कर्म में करके दिखाना है। जो कर्म हो वो भी दूसरों के सर्विस के निमित्त हो। अपनी मन्सा, वाचा, कर्मणा को चेक करो।

(28.09.1969)

समेटने की शक्ति किसमें हो सकती है? जो सरल स्वभाव वाले होंगे उसमें समेटने की शक्ति सहज आ सकती है। जो सरल स्वभाव वाला होगा वह सभी का सहयोगी भी होगा। जो सभी का स्नेही होता है उनको सभी द्वारा सहयोग प्राप्त होता है। इसलिए सभी बातों का सामना करना वा समेटना सहज ही कर सकता है। और जितना सरल स्वभाव वाले होंगे उतना माया कम सामना करेगी।

वह सभी को प्रिय लगता है। सरल स्वभाव वाले का व्यर्थ संकल्प कभी नहीं चलता, समय व्यर्थ नहीं जाता। व्यर्थ संकल्प न चलने के कारण उनकी बुद्धि विशाल और दूरांदेशी रहती है। इसलिए उनके आगे कोई भी समस्या सामना नहीं कर सकती। जितनी सरलता होगी उतनी स्वच्छता भी होगी। स्वच्छता सभी को अपने तरफ आकर्षित करती है। स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई। सच्चाई और सफाई तब होगी जब अपने स्वभाव को सरल बनायेंगे। सरल स्वभाव वाला बहुरूपी भी बन सकता है।

(06.12.1969)

अब बापदादा ऐसा मास्टर सर्वशक्तिमान बनाने की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं, जो किसके भी सूरत में उसकी स्थिति और संकल्प स्पष्ट समझ सको। शक भी न रहे। स्पष्ट मालूम पड़ जाये। यह है अन्तिम पढ़ाई की स्टेज। साकार रूप में थोड़ी सी झलक अन्त में दिखाई। जो साकार रूप में साथ थे उन्होंने कई ऐसी बातें नोट की हैं। ऐसी ही स्थिति नम्बरवार सभी बच्चों की होनी है। जब ऐसी स्थिति होती जायेगी तब अन्तिम स्वरूप और भविष्य स्वरूप आप सभी की सूरत से सभी को स्पष्ट दिखने में आयेगा। जब तक साक्षात साकार रूप नहीं बने हैं तब तक साक्षात्कार नहीं हो सकता है। इसलिए इस सबजेक्ट पर अति समीप रत्नों को ध्यान देना है। जितना समीप उतना ही स्वयं भी स्पष्ट और दूसरे भी उनके आगे स्पष्ट दिखाई देंगे। जितना-जितना जिसका पुरुषार्थ स्पष्ट होता जाता है उतना ही उनकी प्रालब्ध स्पष्ट होती जाती है, और अन्य भी उनके आगे स्पष्ट होते जाते हैं। स्पष्ट अर्थात् सन्तुष्ट। जितना सन्तुष्ट होंगे उतना ही स्पष्ट होंगे। स्पष्ट बच्चों को साकार रूप में कौन से शब्द कहते थे? साफ और सच्चा। जिसमें सच्चाई और सफाई है वह सदैव स्पष्ट होता है। जब सफाई होती है तो भी सभी वस्तु स्पष्ट देखने में आती है।

(02.04.1970)

सम्पूर्ण वफ़ादार वे कहलायेंगे जिसको संकल्प में भी वा स्वप्न में भी सिवाय बाप के और बाप के कर्त्तव्य वा बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे। ऐसे को सम्पूर्ण वफादार कहते हैं। एक बाप दूसरा न कोई-दूसरी कोई बात स्वप्न में, स्मृति में दिखाई न दे। उसको कहते हैं सम्पूर्ण वफादार। ऐसे फरमानबरदार की प्रैक्टिकल चलन में परख क्या होगी? सच्चाई और सफाई। संकल्प तक सच्चाई और सफाई चाहिए, न सिर्फ वाणी तक। अपने आप को देखना है कि कहाँ तक वफादार और फरमानबरदार बने हैं? अगर एक संग सदा बुद्धि की लगन है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता। बुद्धि की लगन कम होने का कारण अनेक प्रकार के संग के आकर्षण अपने तरफ खींच लेते हैं। तो और संग तोड़, एक संग जोड़-यह पहला-पहला वायदा है। उस वायदे को निभाना, इनको ही सम्पूर्ण वफादार कहा जाता है। समझा?

(22.06.1971)

स्वदर्शन चक्र के अन्दर फिर यह एक दिन का चक्र। शुरू में ड्रिल करते थे तो चक्र के अन्दर चक्र में जाते थे, फिर निकलते थे ना। तो यह बेहद का 5000 वर्ष का चक्र है। उसमें फिर छोटे-छोटे चक्र हैं। तो अपना वह दिनचर्या का चक्र सदैव क्लीयर रहे, मूँझे नहीं। तब चक्रवर्ती राजा बनेंगे। रजिस्टर साफ करना आता है ना। आजकल साइन्स ने भी ऐसी इन्वेन्शन की है, जो लिखा हुआ सभी मिट जाये जो मालूम ही न पड़े। तो क्या साइलेन्स की शक्ति से अपने रजिस्टर को रोज साफ़ नहीं कर सकते हो? इसलिए कहा हुआ है कि बाप के प्रिय वा प्रभु प्रिय वा दैवी लोक दोनों के प्रिय कौन बन सकते? सच्चाई और सफाई वाले प्रभु प्रिय भी है और लोक प्रिय भी और अपने आपको भी प्रिय लगते हैं। सच्चाई -सफाई को सभी पसन्द करते हैं। रजिस्टर साफ रखना-यह भी सफाई हुई ना। और सच्ची दिल पर साहब राजी हो जाता है अर्थात् हिम्मत और याद से मदद मिल जाती है।

(18.07.1971)

कन्ट्रोलिंग पावर के लिए सदैव महान् अन्तर सामने रहे तो आटोमेटीकली जो श्रेष्ठ होगा उस तरफ बुद्धि जायेगी और जो व्यर्थ महसूस होगा उस तरफ बुद्धि आटोमेटिकली नहीं जायेगी। जो भी कर्म करते हो तो महान् अन्तर-शुद्ध और अशुद्ध, सत्य और असत्य, स्मृति और विस्मृति में क्या अन्तर है, व्यर्थ और समर्थ संकल्प में क्या अन्तर है, सब बात में अगर महान् अन्तर करते जाओ तो दूसरे तरफ बुद्धि आटोमेटिकली कन्ट्रोल हो जायेगी और विल -पावर के लिए है महामन्त्र-अगर महान् अन्तर और महामन्त्र यह दोनों ही याद रहें तो कभी बुद्धि को कन्ट्रोल करने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। यह सहज हे। पहले चेक करो अर्थात् अन्तर सोचो फिर कर्म करो। अन्तर नहीं देखते, अलबेले चलते रहते इसलिए कन्ट्रोलिंग पावर जो आनी चाहिए वह नहीं आती। और महामन्त्र से विल -पावर आटोमेटिकली आ जायेगी। क्योंकि महामन्त्र है ही बाप की याद अर्थात् बाप के साथ, बाप के कर्त्तव्य के साथ, बाप के गुणों के साथ सदैव अपनी बुद्धि को स्थित करना। तो महामन्त्र बुद्धि में रहने से अर्थात् बुद्धि का कनेक्शन पावर हाउस से होने के कारण विल-पावर आ जाती है। तो महामन्त्र और महान् अन्तर - यह दोनों की याद रहे तो दोनों पावर्स सहज आ सकती हैं। महामन्त्र और महान अन्तर -दोनों स्मृति में रख फिर ज्ञान का नेत्र चलाने से देखो सफलता कितनी होती है। जैसे सुनाया था न - हंस का कर्त्तव्य क्या होता है। वह सदैव कंकड़ और रत्नों का महान् अन्तर करता है। तो ऐसे ही बुद्धि में सदैव महान् अन्तर याद रहे तो महामन्त्र भी सहज याद आ जायेगा। जब कोई श्रेष्ठ चीज़ को जान जाते हैं तो नीचे की चीज़ से स्वत:ही किनारा हो जाता है। लेकिन अन्तर याद न होने से मन्त्र भी भूल जाता है। और ज्ञान के यन्त्र जो मिले हैं वह पूर्ण रीति सफल नहीं हो पाते। तो अब क्या करेंगे?

(18.07.1971)

स्नेह की शक्ति द्वारा सत्यता की प्रत्यक्षता

बातें सभी स्पष्ट देनी हैं लेकिन स्नेह के साथ। स्नेह मूर्त्त होने से उन्हों को जगतमाता के रूप का अनुभव होगा। जैसे मां बच्चे को भल कैसे भी शब्दों में शिक्षा देती है, तो मां के स्नेह कारण वह शब्द तेज वा कडुवे महसूस नहीं होते। समझते है- मां हमारी स्नेही है, कल्याणकारी है। वैसे ही आप भले कितना भी स्पष्ट शब्दों में बोलेंगे लेकिन वह महसूस नहीं करेंगे। तो ऐसे दोनों स्वरूप के समानता की सर्विस करनी है तब ही सर्विस की सफलता समीप देखेंगे। कहा भी जाओ तो निर्भय होकर। सत्यता की शक्ति स्वरूप होकर, आलमाइटी गवर्मेन्ट के सी.आई.डी. के आफीसर होकर उसी नशे से जाओ। इस नशे से बोलो, नशे से देखो। हम अनुचर हैं, इसी स्मृति से अयथार्थ को यथार्थ में लाना है। सत्य को प्रसिद्ध करना है न कि छिपाना है लेकिन दोनों रूपों की समानता चाहिए। किसको देखते हो वा कुछ सुनते हो तो तरस की भावना से देखते सुनते हो, या सीखने और कॉपी करने के लक्ष्य से सुनते, देखते हो? आजकल के जो भी अल्पसुख भोगने वाली आत्मायें प्रकृति दासी के शो में दिखाई देती हैं, उन्हों के शो को देखकर स्थिति क्या रहती है? यह आत्मायें इस तरीके वा इस रीति - रसम में प्रकृति दासी के रूप में स्टेज पर प्रख्यात हुई हैं इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए वा हमें भी इन्हों के प्रमाण अपने में परिवर्तन करना चाहिए-यह संकल्प भी अगर आया तो उनको क्या कहेंगे? क्या दाता के बच्चे भिखारियों की कॉपी करते? आप के आगे कितने भी पाम्प शो में आने वाली आत्माएं हों लेकिन होवनहार प्रत्यक्ष रूप के भिखारी हैं। इन सभी आत्माओं ने बापदादा के बच्चों से थोड़ी बहुत शक्ति की बूंदो को धारण किया है। आप लोगों के शक्ति की अंचली लेने से आजकल इस अंचली के फल, प्रकृति दासी के फलरूप में देख रहे हैं। लेकिन अंचली लेने वाले को देख सागर के बच्चे क्या हो जाते हैं? प्रभावित। यह सभी थोड़े समय में ही आप लोगों के चरणों में झुकने लिए तड़फेंगे, इसलिए स्नेह के साथ सर्विस का जोश भी होना चाहिए। जैसे शूरू में स्नेह भी था और जोश भी था। निर्भय थे। वातावरण वा वायुमण्डल के

आधार से परे इसलिए एकरस सर्विस का उमंग और जोश था। अभी वायुमण्डल वा वातावरण देख कहां-कहां अपनी रूप-रेखा बदल देते हो। इसलिए सफलता कब कैसे, कब कैसे दिखाई देती है। जब कि कलियुग अन्त की आत्माएं अपनी सत्यता को प्रसिद्ध करने में निर्भय होकर स्टेज पर आती हैं तो पुरुषोत्तम संगमयुगी सर्व श्रेष्ठ आत्माएं अपने को सत्य प्रसिद्ध करने में वायुमण्डल प्रमाण रूप रेखा क्यों बनाती हैं? आप मास्टर रचयिता हो ना। वह सभी रचना हैं ना। रचना को मास्टर रचयिता कैसे देखेंगे? जब मास्टर रचता के रूप में स्थित होकर देखेंगे तो फिर यह सभी कौनसा खेल दिखाई देगा? कौनसा दृश्य देखेंगे? जब बारिस पड़ती है तो बारिस के बाद कौनसा दृश्य देखते हैं? मेढ़क थोड़े से पानी में महसूस ऐसे करते हैं जैसे सागर में हैं। ट्रां-ट्रां.... करते नाचते रहते हैं लेकिन है वह अल्पकाल सुख का पानी। तो यह मेढ़कों की ट्रां-ट्रां करने और नाचने कूदने का दृश्य दिखाई देगा। ऐसे महसूस करेंगे कि यह अभी-अभी अल्पकाल के सुख में फूलते हुए गये कि गये। तो मास्टर रचयिता की स्टेज पर   हरने से ऐसा दृश्य दिखाई देगा। कोई सार नहीं दिखाई देगा। बिगर अर्थ बोल दिखाई देंगे। तो सत्यता को प्रसिद्ध करने की हिम्मत और हुल्लास आता है? सत्य को प्रसिद्ध करने का उमंग आता है कि अभी समय पड़ा है? क्या अभी सत्य को प्रसिद्ध करने में समय पड़ा है? फलक भी हो और झलक भी हो। ऐसी फ़लक हो जो महसूस करें कि सत्य के सामने हम सभी के अल्पकाल के यह आडम्बर चल नहीं सकेंगे।

(27.09.1971)

पाण्डवों का गायन क्या है? गुप्त रहने के बाद प्रत्यक्ष हुए ना। अभी प्रत्यक्ष होना चाहिए। जैसे स्थूल स्टेज पर प्रत्यक्ष होते जा रहे हो, अब अपनी सूक्ष्म स्टेज को प्रत्यक्ष करो। गर्जना की रचना करो। अगर कमजोर रचना करेंगे तो कमजोर रचना को सम्भालने में भी समय लगेगा। पावरफुल रचना होने से सहयोगी बनेंगे। अभी ललकार करनी चाहिए। देवियों के पूजन में ललकार का ही पूजन होता है।

यह पावर की निशानी यादगार रूप में है। जोर-जोर से चिल्लाते हैं। अपने अन्दर के फोर्स को इस रीति प्रसिद्ध करते हैं। देवियों का पूजन चुपचाप नहीं करेंगे। जोर-शोर से करते हैं। तो अब शक्तियों को ललकार और गर्जना करनी चाहिए-अपने सिद्धान्तों को सिद्ध करने में, तब सिद्धि को प्राप्त करेंगे। जब रिवाजी आत्मायें भी निर्भय होकर अपने सिद्धान्त को सिद्ध करने का कितना पुरुषार्थ करती हैं, तो आप लोगों को सिद्धान्तों को सिद्ध करने का कितना जोश होना चाहिए! आप वायुमण्डल के होश में आ जाते हो। आदि का पार्ट फिर से अन्त में गुह्य और गोपनीय रूप से रिपीट करना है। रिवाजी करामात दिखाने वालों की देखो - खुमारी कितनी हाती है! अन्दर में समझते हैं कि यह अल्पकाल का है फिर भी खुमारी कितनी रखते हैं! लेकिन जो सत्य खुमारी है वह कितनी कमालियत दिखा सकती है? उसके आगे उन्हों की खुमारी क्या है? अभी लास्ट कोर्स कौन-सा रहा है? फोर्स रूप बनना है। अभी जगत-माता बहुत बने, अब शक्तिरूप से स्टेज पर आना है। शक्तियां आसुरी संस्कारों को एक धक-से खत्म करती हैं और स्नेही मां जो होती है वह धीरे-धीरे प्यार से पालना करती है। पहले वह आवश्यकता थी लेकिन अभी आवश्यकता है शक्ति रूप बन आसुरी संस्कारों को एक धक से खत्म करना। जैसे वह बलि चढ़ाते है तो पहले श्रृंगार करते हैं, उसमें समय लगता है। लेकिन जब बलि चढ़ती है तो एक सेकेण्ड में। श्रृंगार बहुत किया अब एक धक से वायुमण्डल से भी आसुरी संस्कारों को खत्म करने का फोर्स होना चाहिए। रहमदिल के साथ-साथ शक्तिरूप का रूहाब भी होना चाहिए। सिर्फ रहमदिल भी नहीं। जितना ही अति रूहाब उतना ही अति रहम। शब्दों में भी रहमदिल का भाव हो, ऐसी सर्विस का अभी समय है। यह जो गायन है नज़र से निहाल करने का, वह किसका गायन है? शक्तियों के चित्रों में सदैव नयनों की शोभा आप देखेंगे। और कोई इतनी आकर्षण वाली चीज़ नहीं होती है। नयनों द्वारा ही सब भाव प्रसिद्ध करते हैं। तो यह नज़र से निहाल करना यह सर्विस भी शक्तियों की गाई हुई है।

नयनों की आकर्षण हो, नयनों में रूहानियत हो, नयनों में रूहाब हो, नयनों में रहमदिली हो, ऐसा प्लैन बनाना है।

(09.10.1971)

सभी धारणाओं की बातों में से मुख्य धारणा की कौन-सी बात सभी को देते हो? अव्यक्त बनने के लिए भी प्वाइंट कौन-सी देते हो? बाप को याद करने अथवा रूह-रूहान करने का भी उमंग कैसे उठेगा? उसके लिए मुख्य बात है सच्चाई और सफाई। आपस में एक-दो के भाव को सफाई से जानना आवश्यक है। विशेष आत्माओं के लिए सच्चाई-सफाई शब्द का अर्थ भी गुह्य है। एक-दो के प्रति दिल में बिल्कुल सफाई हो। जैसे कोई बिल्कुल साफ चीज़ होती है तो उनमें सब-कुछ स्पष्ट दिखाई देता है ना। वैसे ही एक-दो की भावना, भाव-स्वभाव स्पष्ट दिखाई दें। जहाँ सच्चाई-सफाई है वहाँ समीपता होती है। जैसे बापदादा के समीप हैं। राज्य सिर्फ एक से तो नहीं चलता है ना, आपस में भी सम्बन्ध में आना है। वहाँ भी आपस में समीप सम्बन्ध में कैसे आयेंगे? जब यहाँ दिल समीप होगी। यहाँ के दिल की समीपता वहाँ समीपता लायेगी। एक-दो के स्वभाव, मन के भाव दोनों में समीपता होनी चाहिए। स्वभाव की भिन्नता के कारण ही समीपता नहीं होती है। कोई रमणीक होगा तो समीपता होगी, कोई आफीशल होगा तो समीपता नहीं। लेकिन यहाँ तो सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनना है ना। यह कला भी कम क्यों? समझो आपके ओरीज्नल संस्कार आफीशल हैं; लेकिन समय, संगठन रमणीकता लाता है, तो यह भी कला होनी चाहिए जो स्वभाव को मिला सकें। ऐसे ही 16 कला सम्पन्न बन सकेंगे। तो मन के भाव को भी मिलाना है और स्वभाव को भी मिलाना है, तब समीप आयेंगे। अभी भिन्नता महसूस होती है। एक-एक के ओरिज्नल स्वभाव अभी फर्क में दिखाई देते हैं, यह सम्पूर्णता की निशानी नहीं है। सब कलायें भरनी चाहिए। फलाने का स्वभाव सीरियस है, यह भी समझो कला कम है। फलाने से यह बात नहीं कर सकते - यह भी कला कम। तो 16 कला

सम्पूर्ण अर्थात् जो सम्पूर्ण स्टेज है वह सर्व कलायें स्वभाव में होनी चाहिए। उसको कहते हैं 16 कला सम्पूर्ण। इस संगठन में स्वभाव को और भाव को समीप लाना है। कभी-कभी कहते हैं ना - यह मेरा स्वभाव है, मेरा कोई यह भाव नहीं है। तो यह मन की भावनायें भी एक-दो में मिलनी चाहिए? जब सम्पूर्णता एक ही है तो भाव और स्वभाव भी मिलने चाहिए। जैसे गायन है - यह एक ही सांचे में से निकले हुए एक ही भाषा बोलते हैं, एक ही ढंग है-यह प्रसिद्ध है ना। वैसे अब यह प्रसिद्ध दिखाई देना चाहिए।

(19.10.1971)

जैसे आजकल की दुनिया में जो विनाशी पद धारण करने वाली विशेष आत्मायें हैं, वह भी अपने हर बोल को चैक कर फिर ही बोलती हैं कि कहीं मेरे द्वारा ऐसा कोई एक बोल भी न निकले, कि जो देश में व साथियों में संघर्ष का आधार बने। ऐसे ही विश्व का कल्याण करने के श्रेष्ठ कार्य में निमित्त बनी आप श्रेष्ठ आत्माएं हो; आपकी विश्व में विशेष स्थिति है। आपको यह भी चैक करना है कि मेरे द्वारा जो भी बोल निकलते है, क्या वह सर्व के व स्वयं के प्रति कल्याणकारी हैं? व्यर्थ की तो बात ही छोड़ दो। लेकिन अभी की स्टेज के अनुसार ऐसा कोई भी शब्द मुख से नहीं निकलना चाहिए जिसमें कल्याण का कार्य समाया हुआ न हो। पहले भी सुनाया था कि आप विशेष आत्माओं के हर बोल के महत्व का यादगार, अब तक भी भक्ति मार्ग में चलता आ रहा है-वह कौन-सा है? आपके हर बोल के महत्व का यादगार भक्ति मार्ग में कौन-सा है? गीता तो ज्ञान का यादगार है-प्रैक्टिकल लाइफ में वह महत्व वर्णन करते हैं। देखो, आजकल की भी जो महान् आत्मायें हैं, तो भक्त लोग उनके हर बोल के पीछे 'सत्य वचन महाराज' कहते हैं। चाहे व्यर्थ हो और चाहे गपोड़ा भी लगता हो फिर भी समझते हैं कि ये महान आत्माओं के बोल हैं, तो यह महत्व रखते हैं। 'सत्य वचन महाराज' का यह यादगार कब से आरम्भ हुआ? पहले यथार्थ प्रैक्टिकल में चलता है, फिर भक्तिमार्ग

में सिर्फ यादगार रह जाता है, यथार्थ नहीं होता है, तो जब भक्तिमार्ग में भी हर बोल का महत्व इतना अभी तक भी है, जो अन्तिम घड़ी तक भी देख व सुन रहे हो तो ऐसे महत्व वाले बोल जिसमें सत्यता तथा विश्व का कल्याण हो क्या ऐसे हर बोल निकलते हैं? दिन प्रति दिन नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो महारथी व महावीर बन रहे हैं, उन्हीं के मुख से निकलने वाले, हर बोल सत्य हो जावेंगे। अभी नहीं होते हैं, क्योंकि अभी तक व्यर्थ और साधारण बोल ज्यादा निकलते हैं।

अब सम्पूर्ण स्थिति की स्टेज व सम्पूर्ण परिणाम (फाइनल रिजल्ट) का समय नजदीक आ रहा है। रिजल्ट आऊट बाप-दादा मुख द्वारा नहीं करेंगे या कोई कागज़ व बोड़ पर नम्बर नहीं लिखेंगे। लेकिन रिजल्ट आऊट कैसे होगी? आप स्वयं ही स्वयं को अपनी योग्यताओं प्रमाण अपने-अपने निश्चित नम्बर के योग्य समझेंगे और सिद्ध करेंगे। ऑटोमेटिकली उनके मुख से स्वयं के प्रति फाइनल रिजल्ट के नम्बर न सोचते हुए भी, उनके मुख से सुनाई देंगे और चलन से दिखाई देंगे। अब तक तो रॉयल पुरुषार्थियों की रॉयल भाषा चलती है, लेकिन थोड़े समय में रॉयल भाषा रीयल हो जावेगी। जैसे कि कल्प पहले का गायन है रॉयल पुरुषार्थियों का-कितना भी स्वयं को बनाने का पुरुषार्थ करें, लेकिन सत्यता रुपी दर्पण के आगे रॉयल भी रीयल दिखाई देगा। तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा। अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जावेगा। ऐसी फाइनल रिजल्ट ऑटोमेटिकली आऊट होगी।

(27.05.1974)

निर्णय शक्ति अपने में लाने के लिए मुख्य पुरुषार्थ कौन-सा चाहिए? इसके लिए मुख्य बात, अपनी बुद्धि की वा लगन की सच्चाई और सफाई चाहिए। कोई भी चीज़ जितनी साफ होती है, तो उतना ही उसमें सब स्पष्ट दिखाई देता है। अर्थात् निर्णय सहज हो सकता है, लेकिन यहाँ सिर्फ सफाई ही नहीं, लेकिन सफाई

भी कौन-सी?-सच्चाई की। जितनी-जितनी बुद्धि की लगन में स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई धारण की हुई है तो उतनी ही निर्णय-शक्ति सहज आ जावेगी। क्या अपने में ऐसी चैकिंग करते हो? याद में रहना बहुत सहज है। याद के साकार स्वरुप का सुख लेने के लिए ही तो यहाँ आते हो ना? लेकिन फिर भी नम्बरवार किस आधार पर होते हैं? यही है सच्चाई और सफाई और इससे ही निर्णय-शक्ति श्रेष्ठ होगी। जितनी निर्णय-शक्ति, उतनी सफलता होगी। सच्चाई और सफाई है- यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन कितनी परसेन्टेज में है, यह चैक करने से नम्बर स्वत: ही निकल आयेगा।

(24.06.1974)

बाप-दादा को सबसे प्रिय कौनसा बच्चा लगता है। बाप को दुनिया वाले क्या समझते हैं, कि बाप भगवान क्या है? गॉड इज ट्रुथ। सत्य को ही भगवान कहते हैं। बाप-दादा सुनाते भी सत्यनारायण की कथा है और स्थापना भी सतयुग की करते हैं। तो बाप को जो सत बाप, सत टीचर, सत गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, तो सत बाप को क्या प्रिय लगता है? - सच्चाई- जहाँ सच्चाई है अर्थात् सत्यता है, वहाँ स्वच्छता व सफाई अवश्य ही होती है। गायन भी है सच्चे दिल पर साहब राजी। दिल तख्तनशीन सर्विसएबल अवश्य है - लेकिन सर्विसएबल की निशानी सम्बन्ध और सम्पर्क में सच्चाई और सफाई, हर संकल्प और हर बोल में दिखाई देगी। अर्थात् ऐसी दिल तख्तनशीन श्रेष्ठ आत्मा का हर संकल्प सत होगा, हर वचन सत होगा। सत अर्थात् सत्य भी और सत अर्थात् सफल भी। अर्थात् कोई भी संकल्प व बोल व्यर्थ व साधारण नहीं होगा। ऐसे सर्विसएबल जिनके हर कदम में, हर समय की निगाह में अर्थात् दृष्टि में सर्व आत्माओं के प्रति नि:स्वार्थ सेवा ही सेवा दिखाई देगी। सोते भी सेवा, जागते भी सेवा और चलते हुए भी सेवा। सिवाय सेवा के स्वप्न में भी कोई बात नहीं होगी। ऐसे सेवाधारी जो अचल और अथक होगा - ऐसा ही बाप-दादा के दिल-तख्तनशीन होता है। समझा, निशानी

क्या होती है? ऐसे दिल तख्तनशीन के लिए विश्व के राज्य का तख्त प्राप्त करना निश्चित ही है। जैसे इन-एडवाँस सीट बुक होती है, ऐसे कल्प-कल्प के लिए राज तख्त निश्चित है।

(02.09.1975)

राइट हैण्ड की विशेषता सदा स्वच्छ अर्थात् शुद्ध और श्रेष्ठ है। जैसे कोई भी श्रेष्ठ व शुद्ध कार्य शरीर के राइट हैण्ड द्वारा ही किया जाता है, ऐसे बाप-दादा के सहयोगी राइट हैण्ड सदा बोल में, कर्म में और सम्पर्क में श्रेष्ठ और शुद्ध अर्थात् प्योर रहते हैं। अर्थात् सदा श्रेष्ठ कार्य अर्थ स्वयं को निमित्त समझ कर चलते हैं। जैसे भुजाओं द्वारा कार्य कराने वाली शक्ति 'आत्मा' है, भुजायें करनहार हैं और आत्मा करावनहार है, ऐसे ही राइट हैण्ड सहयोगी सदैव अपने करावनहार बाप को स्मृति में रखते हुए निमित्त करनहार बनते हैं। स्वयं को करावनहार नहीं समझते, इसीलिये उनके हर कर्म में न्यारेपन, निरहंकारीपन और नम्रतापन के नव-निर्माण की श्रेष्ठता भरी हुई होगी। हर सेकेण्ड, हर संकल्प सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् स्वच्छ होगा, जिसको सच्चाई और सफाई कहते हैं। राइट हैण्ड विशेष शक्तिशाली होते हैं। वैसे कोई भी विशेष बोझ उठाने के लिये राइट हैण्ड ही उठाया जाता है। ऐसे राइट हैण्ड सहयोगी आत्मा सदैव विश्व-कल्याण, विश्व-परिवर्तन के कार्य के जिम्मेवारी का बोझ अर्थात् रिस्पोन्सीबिलिटी अति सहज रीति से उठा सकते हैं। अर्थात् वे अपने को रिस्पॉन्सीबल अनुभव करेंगे, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति अनुभव करेंगे। राइट हैण्ड की विशेषता - कार्य की गति में अर्थात् स्पीड में तीव्रता होती है। ऐसे ही राइट हैण्ड सहयोगी आत्मा भी हर सब्जेक्ट की धारणा में व प्रैक्टिकल स्वरूप को लाने में तीव्र पुरुषार्थी होंगे, सदा एवर-रेडी होंगे। यह है राइट हैण्ड की विशेषता।

लेफ्ट हैण्ड सहयोगी सदा रहते हैं, लेकिन स्वच्छता के साथ-साथ अस्वच्छता अर्थात् संकल्प, वाणी और कर्म में कभी-कभी कुछ-न-कुछ अशुद्धि भी रह

जाती है अर्थात् सम्पूर्ण स्वच्छ नहीं। पुरुषार्थ की गति में भी तीव्रता कम रहती है। करेंगे, सोचेंगे, लेकिन लेफ्ट अर्थात् लेट करेंगे। साथ देंगे, कार्य करेंगे, लेकिन पूरी जिम्मेदारी उठाने की हिम्मत नहीं रखेंगे। सदा उल्लास, हिम्मत रखेंगे, लेकिन निराधार नहीं होंगे। उनकी स्टेज बहुत समय वकील अर्थात् लॉयर की होती है। कायदे ज्यादा सोचेंगे लेकिन फायदा कम पायेंगे। स्वयं, स्वयं के जस्टिस नहीं बन सकेंगे। हर छोटी बात में भी फाइनल जजमेन्ट के लिये जस्टिस की आवश्यकता अनुभव करेंगे। राइट हैण्ड लॉ फुल है, जस्टिस है लेकिन लॉयर नहीं।

(06.02.1976)

इस स्मृति दिवस पर बाप स्नेह का प्रैक्टीकल रूप देखना चाहते हैं। स्नेह की निशानी है - कुर्बानी। जो बाप बच्चों से कुर्बानी चाहते हैं, वह सब जानते भी हो। प्रैक्टीकल स्वरूप स्वयं की कमज़ोरियों की कुर्बानी। इस कुर्बानी के मन से गीत गाओ कि बाप के स्नेह में कुर्बान किया। स्नेह के पीछे कुर्बान करने में कोई मुश्किल व असम्भव बात भी सम्भव और सहज अनुभव होती है। 'अब का स्मृति दिवस समर्थी दिवस के रूप में मनाओ'। स्मृति स्वरूप समर्थ स्वरूप। समझा? बाप उस दिन विशेष देखेंगे कि किस-किस ने कौन-कौन सी कुर्बानी और किस परसेंट और किस रूप में चढ़ाई है। मजबूरी से या मोहब्बत से, नियम प्रमाण नहीं करना। नियम है इसलिए करना है - ऐसे मजबूरी से नहीं करना। दिल के स्नेह का ही स्वीकार होता है। अगर स्वीकार नहीं हुआ तो बेकार हुआ। इसलिए सुनाया कि 'बगुला भगत' नहीं बनना स्वयं को धोखा नहीं देना। सत्य बाप के पास सत्य ही स्वीकार होता है। बाकी सब पाप के खाते में जमा होता है, न कि बाप के खाते में। पाप का खाता समाप्त कर बाप के खाते में भरो; कदम में पद्मों की कमाई कर पद्मापति बनो।

(12.01.1977)

याद रखो, सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी, तो सत्य के साथ की नांव हिलेगी, लेकिन डूब नही सकती। बाप को ज़िम्मेवारी देकर वापिस नहीं ले लो। मैं चल सकूंगा - 'मैं' कहां से आई? मैं-पन मिटाना अर्थात् बाप का बनना। यही ग़लती करते हो, और इसी ग़लती में स्वयं उलझते परेशान होते। मैं करता हूँ, या मैं कर नहीं सकता हूँ, इस देह-अभिमान के 'मैं-पन' का अभाव हो। इस भाषा को बदली करो। जब मैं बाप की हो गई, वा हो गया, तो ज़िम्मेदार कौन? अपनी ज़िम्मेवारी सिर्फ एक समझो - जैसे बाप चलावे वैसे चलेंगे, जो बाप कहे वह करेंगे। जिस स्थिति के स्थान पर बाप बिठाए वहाँ बैठेंगे। श्रीमत में मैंपन की मनमत मिक्स नहीं करेंगे, तो पश्चात्ताप से परे, प्राप्ति स्वरूप और पुरुषार्थ की सहज गति प्राप्त करेंगे अर्थात् सदा सद्बुद्धि प्राप्त करेंगे। अपने को वा दूसरों को देख घबराओ मत। क्या होगा? यह भी होगा? घबराओ नहीं लेकिन गहराई में जाओ। क्योंकि वर्तमान, 'अन्तिम समय समीप के कारण एक तरफ, अनेक प्रकार के रहे हुए हिसाब-किताब, स्वभाव-संस्कार वा दूसरे के सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा बाहर निकलेंगे अर्थात् अन्तिम विदाई लेंगे। तो बाहर निकलते हुए अनेक प्रकार के मानसिक परीक्षाओं रूपी बीमारियों को देख घबराओ नहीं। लेकिन यह अति, अन्त की निशानी समझो। दूसरे तरफ, अन्तिम समय समीप होने के कारण कर्मों की गति की मशीनरी भी तेज़ रफ्तार से दिखाई देगी। धर्मराजपुरी के पहले यहाँ ही कर्म और उसकी सज़ा का बहुत साक्षात्कार अभी भी होंगे - आगे चलकर भी। और सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन, सत्य स्थान के निवासी बन, जरा भी असत्य कर्म किया तो प्रत्यक्ष दंड के साक्षात्कार अनेक वंडरफुल (आश्चर्य) रूप के होंगे। ब्राह्मण परिवार वा ब्राह्मणों की भूमि पर पांव ठहर न सकेंगे, हर दाग स्पष्ट दिखाई देगा, छिपा नहीं सकेंगे। स्वयं अपने ग़लती के कारण मन उलझता हुआ टिका नहीं सकेगा। अपने आप को, अपने आप सजा के भागी बनावेंगे। इसलिए यह सब होना ही है। इसके नालेजफुल बन घबराओ मत। समझा? मास्टर सर्वशक्तिवान

घबराते नहीं हैं।

(03.05.1977)

बाप के समान स्वयं को नालेजफुल अर्थात् ज्ञान का सागर अनुभव करते हो? नालेजफुल अर्थात् सदा सत्य कर्म करने वाले, व्यर्थ नहीं करेंगे। जब सत्य बाप के बच्चे हैं, सतयुग स्थापन करते हैं तो कर्म भी सत्य होने चाहिए। बोल, कर्म, संकल्प सब सत्य होने चाहिए। इसको कहते 'बाप के समान मास्टर नालेजफुल अर्थात् ज्ञान-स्वरूप'।

(14.05.1977)

सब खजानों को जमा करने का मुख्य साधन है - स्वच्छ अर्थात् हमारे बुद्धि और सच्ची दिल। प्योर बुद्धि का आधार है बुद्धि द्वारा बाप को जान, बुद्धि को भी बाप के आगे समर्पण करना। समर्पण करना अर्थात् मेरापन मिटाना। ऐसे बद्धि को समर्पण किया है? शुद्रपन की बुद्धि समर्पण करना अर्थात् देना। तो देने के साथ दिव्य बुद्धि का लेना है। देना ही लेना है। जैसा सौदा करते हैं, तो देकर फिर लेते हैं ना। पैसा देना, वस्तु लेना। वैसे यहाँ भी देना ही लेना है। पहले सब कुछ देना है। कैसे? शुभ संकल्प द्वारा। सब कुछ बाप का है, मेरा नहीं। मेरेपन का अधिकार छोड़ना, इसी को ही समर्पण कहा जाता है। इसी को ही नष्टोमोहा स्टेज कहा जाता है।

(29.05.1977)

1. जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलीएस्ट होगा। होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है - 'बाप से सच्चा बनना'। सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज (सर्वोच्च स्थिति) नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सच्चाई। ऐसे सच्ची दिल वाले दिलवाला बाप के दिलतख्त नशीन हैं और दिलतख्त नशीन बच्चे ही राज्य राज्यतख्त नशीन होते हैं।

2. ऑनेस्ट अर्थात् ईमानदार उसको कहा जाता है जो बाप के प्राप्त खजानों को बाप के डायरेक्शन बिना किसी भी कार्य में नहीं लगावे। अगर मनमत और परमत प्रमाण समय को, वाणी को, कर्म को, श्वांस को वा संकल्प को परमत वा संगदोष में व्यर्थ तरफ गंवाते, स्व-चिन्तन की बजाए परचिन्तन करते हैं, स्वमान की बजाए किसी भी प्रकार के अभिमान में आ जाते हैं, इसी प्रकार से 'श्रीमत' के विरुद्ध अर्थात् श्रीमत के बदले मनमत के आधार पर चलते हैं, उसको ऑनेस्ट वा ईमानदार नहीं कहेंगे। यह सब खजाने बाप-दादा ने विश्व-कल्याण के सेवा अर्थ दिए हैं, तो जिस कार्य के अर्थ दिए है उस कार्य के बजाए अगर अन्य कार्य में लगाते हैं, तो यह अमानत में ख्यानत करना है। इसलिए सबसे बड़ी ते बड़ी प्यूरिटी की स्टेज है - 'ऑनेस्ट बनना'। हरेक अपने आपसे पूछो कि हम कहाँ तक ऑनेस्ट बने हैं।

3. ऑनेस्ट का तीसरा लक्षण है - सदा सर्व प्रति शुभ भावना व सदा श्रेष्ठ कामना होगी?

4. ऑनेस्ट अर्थात् सदा संकल्प और बोल वा कर्म द्वारा सदा निमित्त और निर्माण होंगे।

5. ऑनेस्ट अर्थात् हर कदम में समर्थ स्थिति का अनुभव हो। सदा हर संकल्प में 'बाप का साथ और सहयोग के हाथ' का अनुभव हो।

6. ऑनेस्ट अर्थात् हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव हो।

7. ऑनेस्ट अर्थात् जैसे बाप - जो है, जैसा है बाप बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं; वैसे बच्चे जो हैं, जैसे हैं वैसे ही बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करें। ऐसे नहीं कि बाप तो सब कुछ जानता है, लेकिन बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करना सबसे बड़े ते बड़ा 'सहज चढ़ती कला' का साधन है। अनेक प्रकार के बुद्धि के ऊपर बोझ समाप्त करने की सरल युक्ति है। वा स्वयं को स्पष्ट करना अर्थात् पुरुषार्थ का मार्ग स्पष्ट होना है। स्वयं को स्पष्टता से श्रेष्ठ बनाना है। लेकिन करते क्या हो? कुछ बताते कुछ छिपाते हैं। और बताते भी हैं तो कोई सैलवेशन (सहूलियत) के

प्राप्ति के स्वार्थ के आधार पर। चतुराई से अपना केस सज-धज कर मनमत और परमत के प्लान अच्छी तरह से बनाकर, बाप के आगे वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे पेश करते हैं। भोलानाथ बाप समझ और निमित्त बनी हुई आत्माओं को भी भोला समझ चतुराई से अपने आपको सच्चा सिद्ध करने से रिजल्ट क्या होती है? बाप-दादा वा निमित्त बनी हुई आत्माएं जानते हुए भी खुश करने के अर्थ अल्पकाल के लिए, 'हाँ जी' का पाठ तो पढ़ लेंगे। क्योंकि जानते हें कि हर आत्मा की सहन शक्ति, सामना करने की शक्ति कहां तक हैं। इस राज को जानते हुए नाराज़ नहीं होंगे। उनको और ही आगे बढ़ाने की युक्ति देंगे। राजी भी करेंगे, लेकिन राज से राजी करना और दिल से राजी करना - फर्क होता है। बनने चतुर चाहते हैं, लेकिन भोले बन जाते हैं। कैसे जो थोड़े में राजी हो जाते हैं। हार को जीत समझ लेते हैं। है जन्म-जन्म की हार, लेकिन अल्पकाल की प्राप्ति में राजी हो अपने आपको सयाना, होशियार समझ विजयी मान बैठते हैं। बाप को ऐसे बच्चों के ऊपर रहम भी पड़ता है कि समझदारी के पर्दे के अन्दर अपने ऊपर सदा काल के अकल्याण के निमित्त बन रहे हैं। फिर भी बाप-दादा क्या कहेंगे? श्रेष्ठ पुरुषार्थ की भावी नहीं है।

8. ऑनेस्ट अर्थात् किसी भी बातों के आधार पर फाउन्डेशन न हो। हरेक बात के अनुभव के आधार पर, प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन हो। बात बदली और फाउन्डेशन बदला, निश्चय से संशय में आ गया। और क्यों, कैसे के क्वेश्चन में आ गया, उसको प्राप्ति के आधार पर अनुभव नहीं कहेंगे। ऐसा कमज़ोर फाउन्डेशन छोटी सी बात में हलचल पैदा कर लेता है। जैसे आजकल की एक रमणीक बात बाप के आगे क्या रखते हैं कि 1977 तक पवित्र रहना था, अब तो ज्यादा समय पवित्र रहना मुश्किल है। इसलिए बाप के ऊपर बात रखते हुए खुद को निर्दोष बनाकर खुदा को दोषी बना देते हैं। लेकिन पवित्रता ब्राह्मणों का निजी संस्कार है। हद के संस्कार नहीं है। हद की पवित्रता अर्थात् एक जन्म तक की पवित्रता हद का सन्यास है। बेहद के संन्यासियों को जन्म-जन्मान्तर के लिए

अपवित्रता का संन्यास है। बाप-दादा ने पवित्रता के लिए कब समय की सीमा दी थी क्या? स्लोगन में भी यह लिखते हो कि बाप से सदा काल के लिए पवित्रता सुख-शान्ति का वर्सा लो। समय के आधार पर पवित्र रहना, इसको कौन-सी पवित्रता की स्टेज कहेंगे? इससे सिद्ध है कि स्वयं का अनुभव और प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन नहीं हैं। तो ऑनेस्ट बच्चों के यह लक्षण नहीं हैं। 'ऑनेस्ट अर्थात् सदा होलीएस्ट'। समझा, ऑनेस्ट किसको कहा जाता है?

(25.06.1977)

बाप-दादा, श्रेष्ठ पद पाने के लिए वा सर्व के स्नेही बनने के लिए सदैव यही शिक्षा देते हैं कि 'स्वयं को बदलना है'। लेकिन स्वयं को बदलने के बजाए, परिस्थितियों को और अन्य आत्माओं को बदलने का सोचते हैं - यह बदले, तो मैं ठीक हूँगा। परिस्थिति बदले तो मैं परिवर्तन हूँगा। सैलवेशन मिले तो परिवर्तित हूँगा। सहयोग व सहारा मिले तो परिवर्तन हूँगा। इसकी रिजल्ट क्या होती? जो किसी भी आधार पर परिवर्तन होता है, उसको जन्म-जन्म प्रालब्ध भी किसी आधार पर ही रहेगी। उसका कमाई का खाता जिस बात में जितनों का आधार लेते हैं वह शेयर्स (हिस्से) में बंट जाता है। स्वयं का खाता जमा नहीं होता। इसलिए जमा होने की शक्ति और खुशी से सदा वंचित रहते हैं। इसलिए सदा लक्ष्य रखो कि स्वयं को परिवर्तन होना है। मैं स्वयं विश्व की आधार मूर्त्त हूँ, सिवाए बाप के आधार के अल्पकाल के आधार समय पर छोड़ देंगे। विनाशी हिलने वाले आधार आपको भी सदा कोई न कोई हलचल में लाते रहेंगे। एक समाप्त होंगे, दूसरा जन्म लेंगे - इसी में ही और शक्तियां व्यर्थ होंगी। और बात, चलते-चलते अलबेले होने के कारण, कमज़ोरी के बोल बार-बार ऐसे बोलते, जैसे बड़ा मान से बोल रहे हैं - संकोच नहीं होता। सच्चाई, सफाई समझकर बोलते हैं। क्या बोलते हैं? मैं डिस्टर्ब हूँ, मैं कुछ करके दिखाऊंगी। क्या करके दिखाऊंगी? हंगामा? या अपने आपको कुछ करके दिखाऊंगी। डिस-सर्विस होगी यह देख लेना, मैं हूँ ही कमज़ोर,

संस्कार वश हूँ। मैं बदल नहीं सकती। आपको यह सैलवेशन देनी ही होगी। ऐसे-ऐसे बोल बहुत इजी रूप में, बहादुरी दिखाने के रूप में, दबाने और धमकाने के रूप में, बहुत बोलते हैं। बाप-दादा को रहम आता है। ऐसी कमज़ोर आत्माएं, जो संकल्प के बाद वाणी तक भी लाती हैं, कर्म तक भी लाती हैं। इसमें अकल्याण किसका? समझते ऐसे हैं जैसे कि बाप का अकल्याण होना है, सर्विस का अकल्याण। समझते हैं बाप को नुकसान पड़ेगा। लेकिन इन बातों के संस्कार बनाने वाले अपना ही अकल्याण करने के निमित्त बन जाते हैं। ड्रामानुसार विश्व-सेवा का कार्य निश्चित ही सफल हुआ पड़ा है। कोई हिला नहीं सकता।

(30.06.1977)

आज बाप बच्चों को देख सदा हर्षित होते हैं। हरेक बच्चा वर्तमान समय में विश्व की सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ है और भविष्य में भी विश्व द्वारा पूज्यनीय हैं। ऐसे सर्व श्रेष्ठ गायन और पूजन योग्य योगी तू आत्माएँ, ज्ञानी तू आत्मायें, दिव्य-गुणधारी, सदा विश्व के सेवाधारी बाप-दादा के सदा स्नेह और सहयोग में रहने वाले - ऐसे बच्चों को देख बाप को कितनी खुशी होती है! नम्बरवार होते हुए भी लास्ट नम्बर का मणका भी विश्व के आगे महान है। ऐसे अपनी महानता को, अपनी महिमा को जानते हुए चलते रहते हो या चलते-चलते अपने को साधारण समझ लेते हो? अलौकिक बाप द्वारा प्राप्त हुई अलौकिक जीवन, अलौकिक कर्म साधारण नहीं हैं। लास्ट नम्बर के मणके को भी आज अन्त तक भक्त आत्मायें आंखों पर रखती हैं। क्योंकि लास्ट नम्बर भी बाप-दादा के नयनों के तारे हैं, नूरे रतन हैं। ऐसे नूरे रतन को अब तक भी नयनों पर रखा जाता है। अपने श्रेष्ठ भाग्य को जानते हुए, वर्णन करते हुए अनजान नहीं बनो। एक बार भी मन से, सच्चे दिल से अपने को बाप का बच्चा निश्चय किया उस एक सेकेण्ड की महिमा और प्राप्ति बहुत बड़ी है। डायरेक्ट बाप का बच्चा बनना- जानते हो कितनी बड़ी लाटरी है। एक सेकेण्ड में नाम संस्कार शूद्र से ब्राह्मण हो जाता है। संसार बदल जाता-

संस्कार बदल जाते, दृष्टि, वृत्ति, स्मृति सब बदल जाता एक सेकेण्ड के खेल में। ऐसा श्रेष्ठ सेकेण्ड भूल जाते हो। दुनिया वाले अब तक नहीं भूले हैं। आप आत्माएँ चक्कर लगाते बदल भी गईं लेकिन दुनिया वाले नहीं भूले। अभी आप सबका भाग्य वर्णन करते इतने खुश होते हैं- समझते हैं भगवान ही मिल गया। जब दुनिया वाले नहीं भूले हैं, आप स्वयं अनुभवी मूर्त्त तो सर्व प्राप्ति करने वाली आत्मायें हो, फिर भूल क्यों जाते हो? भूलना चाहिए नहीं लेकिन भूल जाते हो।

(13.01.1978)

सब तीव्र पुरुषार्थी हो ना? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचा और किया। सोचने और करने में अन्तर नहीं। जैसे कई बातों में प्लान बहुत बनाते हैं, प्रैक्टीकल में अन्तर हो जाता है, तो तीव्र पुरुषार्थी जो होगा वह जो प्लान बनाएगा वही प्रैक्टीकल होगा। तो ऐसे तीव्र पुरुषार्थी हो ना? पराया राज्य होने के कारण परिस्थितियां तो आपके तरफ़ बहुत आती हैं, लेकिन जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति भी स्वस्थिति के आधार पर परिवर्तन हो जाती है। पहाड़ भी राई बन जाता है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कई बार यह सब बातें पार कर चुके हैं। नथिंग न्यू। नई बात में घबराना होता। लेकिन नथिंग-न्यू ऐसा अनुभव करने वाले सदा कमल पुष्प के समान रहते हैं। जैसे पानी नीचे होता है, कमल ऊपर रहता है, इसी प्रकार परिस्थिति नीचे है, हम ऊपर हैं, नीचे की बात नीचे। कभी कोई बात आवे तो सोचो बाप-दादा हमारे साथ है। आलमाइटी अर्थोरिटी हमारे साथ है। आलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं- कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं, वह तो भिखारी हैं उनका पेट भर जाता है तो आप तो अधिकारी हैं, आप भूखे कैसे रह सकते। इसलिए ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा? जो होगा वह अच्छा होगा। सिर्फ छोटा

सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घण्टे का पेपर होता है। अगर बाप-दादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल एक भरोसा है तो बिल्कुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। जैसे स्वप्न होता है ना, स्वप्न की जो बातें होती वह उठने के बाद समाप्त हो जाती, तो यह भी दिखाई बड़ा रूप देता लेकिन है कुछ नहीं। तो ऐसे निश्चय बुद्धि हो? हरेक के मस्तक के ऊपर विक्टरी का तिलक लगा हुआ है तो ऐसी आत्माएँ जो हैं ही विजय के तिलक वाले, उनकी हार हो नहीं सकती। मेहनत करके आये हो, परिस्थिति पार करके आये हो इसलिए बाप दादा भी मुबारक देते हैं। यह भी ड्रामा में है जैसे स्टीमर टूट जाता है तो कोई कहाँ कोई कहाँ जाकर पड़ते हैं, यह भी द्वापर में सब बिछुड़ गये, कोई विदेश में कोई देश में, अभी बाप बिखरे हुए बच्चों को इकट्ठे कर रहे हैं। अभी बेफिकर रहो। कुछ भी होगा तो पहले बाबा के सामने आयेगा। महावीर हो ना। कहानी सुनी है ना भट्ठी के बीच पूंगरे बच गये। क्या भी हो लेकिन आप सेफ हो सिर्फ़ माया प्रुफ़ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए। ड्रेस तो सदा साथ रहती है ना माया प्रूफ की। प्लेन में भी देखो एमर्जेन्सी में ड्रेस देते हैं कि कुछ हो तो पहन लेना। तो आपको बहुत सहज साधन मिला है।

(14.02.1978)

आज बाप-दादा सर्व बच्चों को विशेष अभ्यास की स्मृति दिला रहे हैं - एक सेकेण्ड में इस आवाज़ की दुनिया से परे हो आवाज़ से परे दुनिया के निवासी बन सकते हो। जितना आवाज़ में आने का अभ्यास है सुनने का अभ्यास है, आवाज़ को धारण करने का अभ्यास है वैसे आवाज़ से परे स्थिति में स्थित हो सर्व प्राप्ति करने का अभ्यास है? जैसे आवाज़ द्वारा रमणीकता का अनुभव करते हो, सुख का अनुभव करते हो ऐसे ही आवाज़ से परे अविनाशी सुख-स्वरूप रमणीक अवस्था का अनुभव करते हो! शान्त के साथ-साथ अति शान्त और अति रमणीक स्थिति का अनुभव है! स्मृति का स्विच आन किया और ऐसी स्थिति

पर स्थित हुए। ऐसी रूहानी लिफ्ट की गिफ्ट प्राप्त है? सदा एवररेडी हो। सेकेण्ड के इशारे से एकरस स्थिति में स्थित हो जाओ। ऐसा रूहानी लश्कर तैयार है? वा स्थित होने में ही समय चला जायेगा। अब ऐसा समय आने वाला है जो ऐसे सत्य अभ्यास के आगे अनेकों के अयथार्थ अभ्यास स्वत: ही प्रत्यक्ष हो जायेंगे। कहना नहीं पड़ेगा कि आपका अभ्यास अयथार्थ है - लेकिन यथार्थ अभ्यास के वायुमण्डल, वायब्रेशन द्वारा स्वयं ही सिद्ध हो जायेगा। ऐसा संगठन तैयार है? अभी समय अनुसार अनेक प्रकार के लोग चेकिंग करने आयेंगे। संगठित रूप में जो चैलेन्ज करते हो कि हम सब ब्राह्मण एक की याद में एकरस स्थिति में स्थित होने वाले हैं - तो ब्राह्मण संगठन की चेकिंग होगी। इन्डीविज्युवल तो कोई बड़ी बात नहीं हैं लेकिन आप सब विश्व कल्याणकारी विश्व परिवर्तक हो - विश्व संगठन, विश्व कल्याणकारी संगठन विश्व को अपनी वृत्ति वा वायब्रेशन द्वारा वा अपने स्मृति स्वरूप के समर्थी द्वारा कैसे सेवा करते हैं- उसकी चेकिंग करने बहुत आयेंगे। आज की साइंस द्वारा साइलेन्स शक्ति का नाम बाला होगा। योग द्वारा शक्तियाँ कौन सी और कहाँ तक फैलती हैं उनकी विधि और गति क्या होती है यह सब प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। ऐसे संगठन तैयार हैं ? समय प्रमाण अब व्यर्थ की बातों को छोड़ समर्थी स्वरूप बनो। ऐसे विश्व सेवाधारी बनो। इतना बड़ा कार्य जिसके लिए निमित्त बने हुए हो उसको स्मृति में रखो।

(03.12.1978)

एक वर्ष में अब क्या परिवर्तन लाया है ? जिसको दूसरे सुनने वाले स्वयं भी परिवर्तन हो जाएं - जैसे कई बार देखा होगा कोई-कोई आत्मायें जब अपना सच्ची दिल से, उमंग से, बाप के स्नेह से अनुभव सुनाती हैं तो अनुभव सुनते-सुनते भी अनेक आत्माएँ परिवर्तित हो जाती हैं। एक का परिवर्तन अनेक आत्माओं के परिवर्तन का साधन बन जाता है। तो ऐसा परिवर्तन हुआ है? जो अनेकों को एक

एग्ज़ाम्पल रूप में हो - एक वर्ष में ऐसे कोई वण्डरफुल अनुभव हुआ है? किस-किसने हाईजम्प दिया - किसने लिफ़्ट की गिफ़्ट ली?

(10.12.1978)

बाप-दादा आज विशेष रूप से हर बच्चे में एक विशेषता देख रहे हैं कि हर एक में रीयल्टी की रायल्टी कहाँ तक आई है! रीयल्टी ही रायल्टी है। इससे बड़ी रायल्टी और कोई नहीं है। रायल्टी किन बातों की वा रीयल्टी किस बात की? पहले अपने स्वरूप की रीयल्टी। अगर रीयल्टी अर्थात् अपने असली स्वरूप की सदा स्मृति है तो स्वरूप की रीयल्टी से इस स्थूल सूरत में भी अलौकिक रायल्टी नज़र आयेगी। जो भी देखेंगे उनके मुख से यही निकलेगा कि यह इस दुनिया के नहीं हैं लेकिन अलौकिक दुनिया के फरिश्ते हैं अथवा यह स्वर्ग का कोई देवता उतरा है। ऐसे रायल्टी से अनुभव होगा। दूसरी बात स्मृति में भी रीयल्टी अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई। इस रीयल्टी की स्मृति से कर्म में वा बोल में रायल्टी दिखाई देगी। हर कर्म सत्य अर्थात् श्रेष्ठ होने के कारण जो भी सम्पर्क में आयेंगे उन्हें हर कर्म में बाप समान चरित्र अनुभव होंगे। हर बोल में बाप के समान अथार्टी और प्राप्ति की अनुभूति होगी अर्थात् हर बोल समर्थ अर्थात् फल देने वाला होगा। जिसको कहा जाता है सत-वचन। ऐसे कर्म और बोल में रीयल्टी की रायल्टी होगी। सम्पर्क अर्थात् संग रीयल होने के कारण पारस का कार्य करेगा। जैसे पारस लोहे को परिवर्तन कर देता है - ऐसे रीयल्टी की रायल्टी वाली आत्मा का संग असमर्थ को समर्थ बना देगा अर्थात् नकली को असली बना देगा। ऐसी आत्मा के रीयल और रायल नयन अर्थात् दिव्य दृष्टि जादू की वस्तु समान काम करेंगे। अभी-अभी मुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी जीवनमुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी लास्ट अन्तिम जन्म, अभी-अभी फर्स्ट जन्म का स्पष्ट साक्षात्कार करायेंगे। अभी-अभी अति दु:खी स्टेज, अभी-अभी अति सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे। 'हम सो-सो हम' के जादू के मन्त्र का

अनुभव करायेंगे अर्थात् 84 जन्मों का ही ज्ञान स्मृति में दिलायेंगे। अभी-अभी स्थूल वतन, संगम युग के सुख की अनुभूति करायेंगे, अभी-अभी सुक्ष्म फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करायेंगे। अभी-अभी परमधाम निवासी आत्मिक स्वरूप का अनुभव करायेंगे, अभी-अभी स्वर्ग के सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे। एक सेकेण्ड में इन चारों ही धामों का अनुभव करायेंगे, यह है जादू मन्त्र।

(19.12.1978)

परमात्म प्रत्यक्षता का आधार - सत्यता

अभी तक आत्मिक बाम्ब लगाया है, अभी परमात्म बाम्ब लगाना है। आत्मिक सुख वा आत्मिक शान्ति की अनुभूति रूहानियत की अनुभूति के भिन्न भिन्न शस्त्र नम्बरवार समय प्रमाण कार्य में लगाया है लेकिन लास्ट बाम्ब अर्थात् परमात्म बम है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गये हैं - डायरेक्ट आलमाइटी अथार्टी का कर्त्तव्य चल रहा है। यह अन्तिम बाम्ब है जिससे चारों ओर से आवाज़ निकलेगा - अभी यह कार्य रहा हुआ है। यह कैसे होगा और कब होगा? परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। सत्यता ही प्रत्यक्षता है - एक स्वयं के स्थिति की सत्यता दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई सफाई की कमी है तो कर्त्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती।

सच्चाई और सफाई- सच्चाई अर्थात् जो मैं हूँ जैसा हूँ सदा उस ओरीज़नल सत्य स्वरूप में स्थित होना। अर्थात् आत्मा के औरीज़नल सतोप्रधान स्वरूप में स्थित रहना है रजो और तमो स्टेज सच्चाई की ओरीज़नल स्टेज नहीं। यह संगदोष की स्टेज है। किसका संग? माया अथवा रावण का। आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता है। तो पहली यह सच्चाई है। दूसरी बात- बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात्

सत्यता की स्टेज सतोप्रधानता है वा अभी रजो और तमो मिक्स हैं! सत्यता नेचरल संस्कार रूप में हैं वा पुरुषार्थ से सत्यता की स्टेज को लाना पड़ता है! जैसे बाप को ट्रुथ अर्थात् सत्य कहते हैं वैसे ही आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता भी सत्य अर्थात् ट्रुथ है। तो सत्यता सतोप्रधानता को कहा जाता है, ऐसी सच्चाई है!

सफाई अर्थात् स्वच्छता। ज़रा भी संकल्प द्वारा भी अशुद्धि अर्थात् बुराई को वा अवगुण को टच नहीं करें - अगर बुद्धि वा संकल्प द्वारा भी स्वीकार किया अर्थात् धारण किया तो सम्पूर्ण सफाई नहीं कहेंगे। जैसे स्थूल में भी कोई प्रकार की गन्दगी को देखना भी अच्छा नहीं लगता, देखने से किनारा कर देंगे, ऐसे बुराई को सोचना भी बुराई को टच करना हुआ। सुनना और बोलना वा करना यह तो स्वयं ही बुराई को धारण करते हैं। सफाई अर्थात् स्वच्छता, संकल्प मात्र भी अशुद्धि न हो। इसको कहा जाता है सच्चाई और सफाई अर्थात् स्वच्छता।

पहली बात- अपने पुराने तमोगुणी संस्कार पर विजयी बनने की निर्भयता। क्या करूँ, होता नहीं, बहुत प्रबल है, यह भी निर्भयता नहीं। अन्य आत्माओं के सम्पर्क और सम्बन्ध में स्वयं के संस्कार मिलाना और अन्य के संस्कार परिवर्तन करना इसमें भी निर्भयता हो। पता नहीं चल सकेंगे, निभा सकेंगे मेरा मानेंगे वा नहीं मानेंगे इसमें भी अगर भयता है तो इसको सम्पूर्ण निर्भयता नहीं कहेंगे। तीसरी बात- विश्व की सेवा में अर्थात् सेवा के क्षेत्र में वायुमण्डल वा अन्य आत्माओं के सिद्धान्तों की परिपक्वता को देखते हुए संकल्प में भी उन्हीं की परिपक्वता वा वातावरण वायुमण्डल का प्रभाव पड़ना यह भी भयता है। यह बिगड़ जायेंगे, हंगामा हो जायेगा - हलचल हो जायेगी इससे भी निर्भयता हो। जब आत्मिक ज्ञानी आप तना द्वारा निकली हुई शाखाएँ वह भी अपने अल्पज्ञ मान्यता में निर्भयता का प्रभाव डालती हैं, अपनी अल्प मत को प्रत्यक्ष करने में निर्भय होती हैं, झूठ को सच करके सिद्ध करने में अटल ओर अचल रहती हैं, तो सर्वज्ञ बाप के श्रेष्ठ मत वा- अनादि आदि सत्य को प्रत्यक्ष करने में संकोच करना भी भय है। शाखाएँ हिलने वाली होती हैं, तना अचल होता है तो शाखाएँ निर्भय हो और तना में संकोच के

भय की हलचल हो इसको क्या कहेंगे! इसलिए जो प्रत्यक्षता का आधार स्वच्छता और निर्भयता है उसको चेक करो। इसी को ही सत्यता कहा जाता है। इस सत्यता के आधार पर ही प्रत्यक्षता है। इसलिए अन्तिम पावरफुल बाम्ब परमात्म प्रत्यक्षता अब शुरू नहीं की है। अब तक की रिजल्ट में राजयोगी आत्माएँ श्रेष्ठ हैं, राजयोग श्रेष्ठ है, कर्त्तव्य श्रेष्ठ है, परिवर्तन श्रेष्ठ है। यह प्रत्यक्ष हुआ है लेकिन सिखाने वाला डायरेक्ट आलमाइटी है - ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है यह अभी गुप्त है - परमात्म बाम्ब की रिज़ल्ट क्या होगी!

विश्व की सर्व आत्माओं के अल्पकाल के सहारे सब समाप्त हो एक बाप का सहारा अनुभव होगा। जैसे साइन्स के बाम्बस द्वारा देश का देश समाप्त हो पहला दृश्य कुछ भी नज़र नहीं आता - सब समाप्त हो जाता है ऐसे इस अन्तिम बाम्ब द्वारा सर्व अल्पकाल के साधना रूपी साधन समाप्त हो एक ही यथार्थ साधन राजयोग द्वारा हरेक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। विश्व में विश्व पिता स्पष्ट दिखाई देगा। हर धर्म की आत्मा द्वारा एक ही बोल निकलेगा कि हमारा बाप हिन्दुओं वा मुसलमानों का नहीं- सबका बाप। इसको कहा जाता है परमात्म बाम्ब द्वारा अन्तिम प्रत्यक्षता। अब रिज़ल्ट सुनी कि क्या कर रहे हैं और क्या करना है! अब के वर्ष परमात्म बाम्ब फैंको। बाप को स्वच्छता और निर्भयता के आधार से सत्यता द्वारा प्रत्यक्षता करो।

(28.12.1978)

नये वर्ष का नया संकल्प ब्रह्मा का सुना! बाप के इस संकल्प को प्रैक्टिकल में लाने वाले विजयी ग्रुप अब क्या करेंगे! श्रेष्ठ विजयी रतन ही बाप के इस संकल्प को पूरा करने वाले हैं - इसलिए इस वर्ष में विशेष रूप से मास्टर आलमाइटी अथार्टी के स्वरूप से सेकेण्ड में मुक्त करने की मशीनरी तीव्र करो। अभी मैजारटी आत्माएं प्रकृति के अल्पकाल के साधनों से, वा आत्मिक शान्ति प्राप्त करने के बने हुए अल्पज्ञ स्थानों से अर्थात परमात्म मिलन मनाने के ठेकेदारों से

अब थक गए हैं, निराश हो गए हैं - समझते हैं सत्य कुछ और है - सत्यता की मंजिल की खोज में हैं - प्राप्ति के प्यासे हैं। ऐसी प्यासी आत्माओं को आत्मिक परिचय, परमात्म परिचय की यथार्थ बूँद भी तृप्त आत्मा बना देगी - इसलिए ज्ञान कलष धारण कर प्यासों की प्यास बुझाओ। अमृत कलष सदा साथ रहे। चलते फिरते सदा अमृत द्वारा अमर बनाते चलो। तब ही ब्रह्मा बाप के साथ-साथ मुक्ति के गेट का उद्घाटन कर सकेंगे! अभी तो भवनों का उद्घाटन कर रहे हो - अभी विशाल गेट का उद्घाटन करना है। उसके लिए सदा अमर बनो और अमर बनाओ - अमर भव के वरदानी मूर्त बनो। अब पुरूषार्थ करने वाली आत्माएं जो अन्तिम अति कमजोर आत्माएं हैं, ऐसी कमजोर आत्माओं में पुरूषार्थ करने की भी हिम्मत नहीं है ऐसी आत्माओं को स्वयं की शक्तियों द्वारा समर्थ बनाकर प्राप्ति कराओ। इसलिए ज्ञान मूर्त से ज्यादा अभी वरदानी मूर्त का पार्ट चाहिए। सुनने की शक्ति भी नहीं हैं। चलने की हिम्मत नहीं है सिर्फ एक प्यास है कि कुछ मिल जाए - ऐसी अनेक आत्माएं विश्व में भटक रही हें - चलने के पांव अर्थात हिम्मत भी आपको देनी पड़ेगी। तो हिम्मत का स्टाक जमा है! अमृत कलष सम्पन्न है! अखुट है! अखण्ड है! क्यू लगावें? स्वयं की क्यू समाप्त की है - अगर स्वयं की क्यू में बिजी होंगे तो अन्य आत्माओं को सम्पन्न कैसे बनावेंगे! इसलिए इस वर्ष में अपनी क्यू को समाप्त करो। क्यों, क्या, की भाषा चेन्ज करो। एक ही भाषा हो - सर्व प्रति संकल्प से, वाणी से वरदानी भाषा हो - वरदानी मूर्त हो - वरदानों की वर्षा के भाषण हों। जो भी सुनें वह अनुभव करे कि भाषण नहीं लेकिन वरादानों के पुष्पों की वर्षा हो रही है - तब उद्घाटन करेंगे। नये वर्ष की यही नवीनता करना।

(01.01.1979)

अनेक मतों का विनाश प्रारम्भ करो तो विजय का झण्डा लहरा जाए :- अनेक मत वाले सिर्फ एक बात को मान जाएं कि हम सबका बाप एक है और वही अब कार्य कर रहे हैं, कम से कम यह आवाज सब तरफ पहुँचे कि हम सब एक

की सन्तान एक हैं और एक ही यथार्थ है। चाहे धारण करे न करे लेकिन मान लें, चलना तो पीछे की बात है। जैसे कई आत्मायें सम्पर्क में आती तो समझती हैं यह अच्छा काम कर रहे हैं, इतना सब मान लें तो विजय का झण्डा लहरा जायेगा। इसी संकल्प से मुक्तिधाम में चली जायें तो भी ठीक है। इसी संकल्प से मुक्तिधाम जायेंगे तो जब अपना-अपना पार्ट बजाने आयेंगे तो पहले यही संस्कार होंगे कि गाड इज वन। यह गोल्डन एज की स्मृति है। अनेकों में फँसना यह आइरन एज है। अथार्टी से और सत्यता से बोलो, संकोच से नहीं। सत्यता प्रत्यक्षता का आधार है। प्रत्यक्षता करने के लिए पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो, निर्भय बनो।

(23.01.1979)

नालेज का रिगार्ड - अर्थात् आदि से अभी तक जो भी महावाक्य उच्चारण हुए उन हर महावाक्य में अटल निश्चय हो - कैसे होगा, कब होगा, होना तो चाहिए, है तो सत्य...इस प्रकार के क्वेश्चन उठाना भी अर्थात् सूक्ष्म संकल्प के रूप में संशय उठाना है। यह भी नालेज का डिसरिगार्ड है।

आजकल के अल्पकाल के चमत्कार दिखाने वाले अर्थात् बाप से वंचित करने वाले यथार्थ से दूर करने वाले नामधारी महान आत्मायें उन्हों के लिए भी सतवचन महाराज कहते हैं। तो सतगुरू जो महान आत्माओं का भी रचता परमपिता है उसकी सत्य नालेज में क्वेश्चन करना वा संकल्प उठाना यह भी रायल रूप का संशय अर्थात डिसरिगार्ड है। एक क्वेश्चन होता है स्पष्ट करने के लिए - दूसरा क्वेश्चन होता है सूक्ष्म संशय के आधर से - इसको कहा जाता है डिसरिगार्ड। बाप तो ऐसे कहते हैं लेकिन होना असम्भव है वा मुश्किल है - ऐसा संकल्प भी किस खाते में जावेगा - यह चैक करो।

(25.01.1979)

शक्ति सेना सदा विजय का झण्डा लहराने वाली हो ना? कितना ऊंचा

झण्डा लहराया है? इतना ऊंचा झण्डा है जो सारी विश्व देख सकेंगे। झण्डा लहराया जरूर है लेकिन अभी ऊंचा उठाना है। अगर कोई अट्रैक्शन की वस्तु कहाँ भी नजर आती तो सबकी नज़र आटोमेटिकली जाती है, न चाहते भी आकर्षण होती है। तो ऐसा आकर्षण वाला झण्डा लहराओ जो न चाहते भी सबकी नज़र जाए। वैसे तो धरनी अभी परिवर्तन होती जा रही है, अभी सबके कानों में यह आवाज गूँजने वाला है कि अगर सत्य कार्य है तो इन्हों का ही है, सब तरफ से निराश होंगे और इसी तरफ आशा का दीपक दिखाई देगा। इसके लिए सम्पर्क बढ़ाओ। समय पर सम्पर्क नहीं सदा सम्पर्क। सम्पर्क में आने वालों को आगे बढ़ाते चलो, कोई न कोई प्रोग्राम समय प्रति समय रखते रहो। हर वर्ग की सेवा करनी है, अन्त में कोई भी उल्हना न दे सके कि हमे नहीं बताया। इसलिए सब धर्म वालों को सन्देश जरूर देना है।

(30.01.1979)

बाप पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? बाप तो बड़े भोले हैं। बाप जिसको भी देखते हैं सब अच्छे ते अच्छे हैं। 'अच्छा नहीं' ऐसे तो कोई नजर ही नहीं आता। एक एक पाण्डव, एक एक शक्ति एक से एक आगे है। तो बाप पसन्द बनने के लिए -'सच्ची दिल परसाहेब राजी'। जो भी हो सच्चाई, सत्यता बाप को जीत लेती है। और मन पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? मनमत पर नहीं चलना। मनपसन्द औरचीज हैं। मन पसन्द बनने के लिए बहुत सहज साधन है। 'श्रीमत की लकीर के अन्दर रहो'। संकल्प करो तो भी श्रीमत की लकीर के अन्दर। बोलो, कर्म करो, जो कुछ भी करो लकीर के अन्दर।

(27.03.1981)

सच्चाई और सफाई की लिस्ट के कारण आगे भी बढ रहे हैं। यह विशेषता नम्बरवन है। इस विशेषता को देख बापदादा खुश होते हैं। अब सिर्फ

घबराने की डान्स को छोड़ो तो बहुत फास्ट जायेंगे। नम्बर बहुत आगे ले लेंगे। यह बात तो सबको पक्की है। कि 'लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट'। खुशी की डान्स भल करो। बाप का हाथ छोड़ते हो तो बाप को भी अच्छा नहीं लगता कि ये कहाँ जा रहे हैं। बाप के हाथ में हाथ हो फिर तो घबराने की डान्स हो नहीं सकती। माया का हाथ पकड़ते हो तब वह डान्स होती है। बाप का इतना प्रेम है आप लोगों से जो दुसरे के साथ जाना देख भी नही सकते।बाप जानते हैं कि कितना भटकर, परेशान हो फिर बाप के पास पहुँचे हैं, तो कनफयूज करने कैसे देंगे। साकार रूप में भी देखा, स्थूल में भी बच्चे कहाँ जाते थे तो बच्चों को कहते थे - 'आओ बच्चे, आओ बच्चे!' जब माया अपना रूप दिखावे तो यह शब्द याद करना।

(29.03.1981)

इस वर्ष हरेक बच्चे को यह विशेष अटेन्शन देना है कि हमें तीनों ही सर्टीफिकेट (मनपसंद, लोकपसंद और बाप पसंद) लेने हैं मन पसंद का सर्टीफिकेट है या नहीं उसकी परख बापदादा के कमरे में जाकर कर सकते हो, क्योंकि उस समय बाप बन जाता है 'दर्पण' और उस दर्पण में जो कुछ होता है वह स्पष्ट दिखाई देता है। अगर उस समय बाप के आगे अपना मन सर्टीफिकेट देता है कि, मैं ठीक हूँ, तो समझो ठीक, अगर उस समय मन में चलता - यह ठीक नहीं है तो अपने को परिवर्तन कर देना चाहिए। अगर मानो मैजारिटी किसी बात के प्रति कोई इशारा देते हैं लेकिन स्वयं नहीं समझते कि मैं राँग हूँ, फिर भी जब लोक संग्रह के प्रति ऊपर से डायरेक्शन मिले कि यह अटेन्शन रखना चाहिए तो फिर उस समय अपनी नहीं चलानी चाहिए। क्योंकि अगर सत्यता की शक्ति है तो सत्य को कहा ही जाता है - 'सत्यता महानता है'। और महान वही है जो स्वयं झुकता है। अगर मानो कल्याण के प्रति झुकना भी पड़ता है तो वह झुकना नही है, लेकिन महानता है, अनेकों की सेवा के अर्थ महान को झुकना ही पड़ता है।

(05.04.1981)

सत्यता की शक्ति से विश्व-परिवर्तन

आज की यह सभा कौन सी सभा है? यह है विधि-विधाताओं की सभा। सिद्धि-दाताओं की सभा। अपने को ऐसे विधि-विधाता वा सिद्धि दाता समझते हो? इस सभा की विशेषाताओं को जानते हो? विधि-विधाताओं की विशेष शक्ति है जिस द्वारा सेकेण्ड में सर्व को विधि द्वारा सिद्धि स्वरूप बना सकते। उसको जानते हो? वह है सत्यता अर्थात् रियल्टी। सत्यता की महानता है। सत्यता की ही मान्यता है। वह सत्यता अर्थात् महानता स्पष्ट रूप से जानते हो। विशेष विधि है सत्यता के आधार पर है। पहला फाउन्डेशन अपनी नालेज अर्थात् अपने स्वरूप में स्त्यता देखो। सत्य स्वरूप क्या है और मानते क्या थे? तो पहला सत्य हुआ 'आत्मा स्वरूप' का। जब तक यह सत्य नहीं जाना तो महानता नही? महान थे वा महान के पुजारी थे? जब अपने आपको जाना तो क्या बन गये? महान आत्मा बन गये। सत्यता की अथार्टी से औरों को भी कहते हो, हम आत्मा है, इसी प्रकार से सत्य बाप का सत्य परिचय मिलने से अथार्टी से कहते हो - 'परमात्मा हमारा बाप है'। वर्से के अधिकार की शक्ति से कहते हो, बाप हमारा और हम बाप के। ऐसे अपनी रचना के वा सृष्टि चक्र के सत्य परिचय को अथार्टी से सुनते हो - अब यह सृष्टि चक्र समाप्त हो फिर से रिपीट होना है। अब संगम का युग है, ना कि कलियुग। चाहे सारी विश्व के विद्वान पण्डित और अनके आत्मायें शास्त्रों प्रमाण कलियुग ही मानते लेकिन आप 5 पाण्डव अर्थात् कोटों मे कोई थोड़ी सी आत्मायें चैलेन्ज करते हो कि अभी कलियुग नहीं, संगमयुग है, यह किस अथार्टी से? सत्यता की महानता के कारण। विश्व में मैसेज देते हो कि आओ और आकर समझो। सोये हुए कम्भकरणों को जगाकर कहते हो, समय आ गया। यही सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरू द्वारा सत्यता की शक्ति मिली है। अनुभव करते हो यही सत्यता है।

सत् के दो अर्थ है। एक सत् अर्थात् 'सत्य' दूसरा सत् अर्थात् 'अविनाशी'। तो बाप सत्य भी है और अविनाशी भी है इसलिए बाप द्वारा जो परिचय मिला वह

सब सत् अर्थात् सत्य और अविनाशी है। भक्त लोग भी बाप की महिमा गाते हैं - 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'। सत्यम् भी मानते और अविनाशी मानते। गाड इज ट्रुथ भी मानते। तो बाप द्वारा सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला है ना। सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला हैना। सत्यता की अथार्टी वाले का गायन भी सुना है, उसकी निशानी क्या होगी? सिन्धी में कहावत है - 'सच ते बिठो नच'। और भी कहावत है 'सत्य की नाव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती'। आपको भी हिलाने की कोशिश तो बहुत करते हैं ना। यह झूठ है, कल्पना है। लेकिन सच तो बिठो नच। आप सत्यता की महानता के नशे में सदा खुशी के झूले में झूलते रहते। खुशी में नाचते रहते हो ना। जितना वह हिलाने की खोशिश करेते उतना ही क्या होता! आप की झूले को हिलाने से और ही ज्यादा झूलते हो। आपको नहीं हिलाते लेकिन झूले को हिलाते। और ही उसको धन्यवाद दो कि हम बाप के साथ झूलें, आप झुलाओ। यह हिलाना नहीं लेकिन झुलाना है। ऐसे अनुभव करते हो! हिलते नहीं हो लेकिन झूलते हो ना। सत्यता की शक्ति सारी प्रृकति को ही सतोप्रधान बना देती है। युग को सतयुगी बना देती है। सर्व आत्माओं के सदगति की तकदीर बना देती है। हर आत्मा आपके सत्यता की शक्ति द्वारा अपने-अपने यथा शक्ति अपने धर्म में अपने समय पर गति के बाद सदगति में ही अवतरित होंगे। क्योंकि विधि-विधाताओं द्वारा संगमयुग पर अन्त तक भी बाप को याद करने की विधि का सन्देश जरूर मिलना है। फिर किसको वाणी द्वारा, किसको चित्रों द्वारा किसको समाचारों द्वारा, किसको आप सबके पावरफुल वायब्रेशन द्वारा, किसको अन्तिम विनाश लीला की हलचल द्वारा, वैराग वृत्ति के वायुमण्डल द्वारा। यह सब साइन्स के साधन आपके इस सन्देश देने के कार्य में सहयोगी होंगे।

संगम पर ही प्रकृति सहयोगी बनने का अपना पार्ट आरम्भ कर देगी। सब तरफ से प्रकृति पति का और मास्टर प्रकृतिपति का आयजान करेगी। सब तरफ से आफरीन और आफर होगी। फिर क्या करेंगे? यह जो भक्ति में गायन है, हर

प्रकृति के तत्व को देवता के रूप में दिखाया है। देवता अर्थात् देने वाला। तो अन्त में यह सब प्रकृति के तत्व आप सबको सहयोग देने दाता बन जायेंगे। यह सागर भी आपको सहयोग देंगे। चारों ओर की सामग्री भारत की धरनी पर लाने में सहयोगी होंगे। इसलिए कहते हैं सागर के रत्नों की थालियाँ दी। ऐसे ही धरनी की हलचल सारी वैल्युबल वस्तु आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए एक स्थान भारत में इक्ट्ठी कर देने में सहयोगी होगी। इन्द्र देवता कहते हैं ना। तो बरसात भी धरनी की सफाई के सहयोग में हाजिर हो जायेगी। इतना सारा किचड़ा आप तो नहीं साफ करेंगे। यह सारा प्रकृति का सहयोग मिलेगा। कुछ वायु उड़ायेगी, कुद बरसात के साथ ले जायेगी। अग्नि को तो जानते ही हो। तो अन्त में यह सब तत्व आप श्रेष्ठ आत्माओं को सहयोग देने वाले देवता बनेंगे। और सर्व आत्मायें अनुभव करेंगी। फिर भक्ति में जो अब सहयोग देने के कर्तव्य कारण देवता बने उसे कर्तव्य का अर्थ भूल देवताओं का मनुष्य रूप दे देते हैं। जैसे सूर्य है तत्व लेकिन मनुष्य रूप दे दिया है। तो समझा विधि विधाता बन क्या कार्य करना है।

उन्हों की है विधान सभा और यह है विधि-विधाताओं की सभा। वहाँ सभा के मेम्बर होते हैं। यहाँ अधिकारी महान आत्मायें होती हैं। तो समझा सत्यता की महानता कितनी है। सत्यता पारस के समान है। जैसे पारस लोहे को भी पारस बना देता है। आपके सत्यता की शक्ति आत्मा को, प्रकृति को, समय को, सर्व सामग्री को, सर्व सम्बन्ध को, संस्कारों को, आहार को, व्यवहार को, सबको सतोप्रधान बना देती है। तमोगुण का नाम निशान समाप्त कर देती है। सत्यता की शक्ति आपके नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बनादेती है। आधाकल्प चैतन्य रूप आधाकल्प चित्र रुप। आधाकल्प प्रजा आपका नाम गायेगी। आधकल्प भक्त आपका नाम गायेंगे। आपका बोल सत् वचन के रूप में गाया जाता है। आज तक भी एक आधा वचन लेने से अपने को महान अनुभव करते। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अविनाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आधाकल्प देवताई वेष में रहेंगे आधाकल्प देवताई वेष का यादगार

चलेगा। अब अन्त तक भी भक्त लोग आपके चित्रों को भी ड्रेस से सजाते रहते हैं। कर्तव्य और चरित्र यह सब सत् हो गये। कर्तव्य का यादगार भागवत बना दिया है। चरित्रों की अनेक कहानियाँ बना दी हैं। यह सब सत्य हो गये। किस कारण? सत्यता की शक्ति के कारण। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। इतनी शक्ति को जानते हो? इतनी अथार्टी से सबको चैलेन्ज करते हो वा सेवा करते हो? नये-नये आये हैं ना। ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं, लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो। मानेंगे, नहीं मानेंगे, कहें, कैसे कहें। यह संकल्प तो नहीं आते जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है। निश्चय के आधार पर अनुभवी मूर्त बन बोलो तो सफलता सदा आपके साथ है।

(11.04.1981)

बापदादा मेला मनाने वाले, स्नेह पाने के भाग्यशाली आत्माओं को देख हर्षित हो रहे हैं कि सारे इतने विशाल विश्व में अथाह संख्या के बीच कैसी-कैसी आत्माओं ने मिलन का भाग्य ले लिया! विश्व के आगे ना उम्मीदवार आत्माओं ने अपनी सर्व उम्मीदें पूर्ण करने का भाग्य ले लिया। और जो विश्व के आगे नामीग्रामी उम्मीदवार आत्मायें हैं वह सोचती और खोजती रह गई। खोजना करते-करते खोज में ही खो गये। और आप स्नेही आत्माओं ने स्नेह के आधार पर पा लिया। तो श्रेष्ठ कौन हुआ? कोई शास्त्रार्थ करते शास्त्रो में ही रह गये। कोई महात्मायें बन आत्मा और परमात्मा की छोटी सी भ्रान्ति में अपने भाग्य से रह गये। बच्चे बन बाप के अधिकार से वंचित रह गये। बड़े-बड़े वैज्ञानिक खोजना करते उसी में खो गये। राजनीतिज्ञ योजनायें बनाते-बनाते रह गये। भोले भक्त कण-कण

में ढूँढते ही रह गये। लेकिन पाया किन्हों ने? भोलेनाथ के भोले बच्चों ने। बड़े दिमाग वालों ने नहीं पाया लेकिन सच्ची दिल वालों ने पाया। इसलिए कहावत है - सच्ची दिल पर साहब राजी। तो सभी सच्ची दिल से दिलतख्तनशीन बन सकते। सच्ची दिल से दिलाराम बाप को अपना बना सकते। दिलाराम बाप सच्ची दिल के सिवाए सेकण्ड भी याद के रूप में ठहर नहीं सकते। सच्ची दिल वाले की सर्व श्रेष्ठ संकल्प रूपी आशायें सहज सम्पन्न होती हैं। सच्ची दिल वाले सदा बाप के साथ का साकार, आकार, निराकार तीनों रूपों में सदा साथ का अनुभव करते हैं।

(16.04.1982)

सभी ने अपनी-अपनी कमज़ोरियों को सच्चाई से स्पष्ट किया है। उस सच्चाई की मार्क्स तो मिल जायेंगी लेकिन बापदादा देख रहे थे कि अभी तक जबकि अपने संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति नहीं आई है, विश्व परिवर्तक कब बनेंगे! अभी दृष्टा हो, दृष्टि द्वारा देखने वाले दृष्टा, दृष्टि क्यों विचलित करते? दिव्य नेत्र से देखते हो वा इस चमड़ी के नेत्रों से देखते हो? दिव्य नेत्र से सदा स्वत: ही दिव्य स्वरूप ही दिखाई देगा। चमड़े की आँखें चमड़े को देखती। चमड़ी को देखना, चमड़ी का सोचना यह किसका काम है! फ़रिश्तों का? ब्राह्मणों का? स्वराज्य अधिकारियों का? तो ब्राह्मण हो या कौन हो? नाम बोलें क्या?

(27.04.1983)

सभी मधुबन महान तीर्थ पर मेला मनाने के लिए चारों ओर से पहुँच गये हैं। इसी महान तीर्थ के मेले की यादगार अभी भी तीर्थ स्थानों पर मेले लगते रहते हैं। इसी समय का हर श्रेष्ठ कर्म का यादगार चरित्रों के रूप में, गीतों के रूप में अभी भी देख और सुन रहे हो। चैतन्य श्रेष्ठ आत्मायें अपना चित्र और चरित्र देख सुन रही हैं। ऐसे समय पर बुद्धि में क्या श्रेष्ठ संकल्प चलता है? समझते हो ना कि हम ही थे, हम ही अब हैं। और कल्प-कल्प हम ही फिर होंगे। यह 'फिर से' की

स्मृति और नालेज और किसी भी आत्मा को, महान आत्मा को, धर्म आत्मा को वा धर्म पिता को भी नहीं है। लेकिन आप सब ब्राह्मण आत्माओं को इतनी स्पष्ट स्मृति है वा स्पष्ट नालेज है जैसे 5000 वर्ष की बात कल की बात, है। कल थे आज हैं फिर कल होंगे। तो आज और कल इन दोनों शब्दों मे 5000 वर्ष का इतिहास समाया हुआ है। इतना सहज और स्पष्ट अनुभव करते हो! कोई होंगे वा हम ही थे, हम ही हैं! जड़ चित्रों में अपने चैतन्य श्रेष्ठ जीवन का साक्षात्कार होता है? वा समझते हो कि यह महारथियों के चित्र हैं, वा आप सबके हैं? भारत में 33 करोड़ देवताओं को नमस्कार करते हैं अर्थात् आप श्रेष्ठ ब्राह्मण सो देवताओं के वंश के भी वंश, उनके भी वंश, सभी का पूजन नहीं तो गायन तो करते ही हैं। तो सोचो जो स्वयं पूर्वज हैं उनहों का नाम कितना श्रेष्ठ होगा! और पूजन भी पूर्वजों का कितना श्रेष्ठ होगा। 9 लाख का भी गायन है। उससे आगे 16 हजार का गायन है फिर 108 का है फिर 8 का है। उससे आगे युगल दाने का है। नम्बरवार हैं ना! गायन तो सभी का है क्योंकि जो भाग्य विधाता बाप के बच्चे बने, इस भाग्य के कारण उन्हों का गायन और पूजन दोनों होता है लेकिन पूजन में दो प्रकार का पूजन है। एक है प्रेम की विधि पूर्वक पूजन और दूसरा है सिर्फ नियम पूर्वक पूजन। दोनों में अन्तर हैं ना। तो अपने से पूछो, मैं कौन सी पूज्य आत्मा हूँ? पहले भी सुनाया था कि कोई-कोई भक्त, देवता नाराज न हो जाए इस भय से पूजा करते हैं। और कोई-कोई भक्त दिखावा मात्र भी पूजा करते हैं। और कोई-कोई समझते हैं भक्ति का नियम वा फर्ज निभाना है। चाहे दिल हो या न हो लेकिन निभाना है। ऐसे फर्ज समझ करते हैं। चारों ही प्रकार के भक्त किसी न किसी प्रकार से बनते हैं। यहाँ भी देखो देव आत्मा बनने वाले, ब्रह्माकुमार कुमारी कहलाने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं ना। नम्बरवन पूज्य सदा सहज स्नेह से और विधि पूर्वक याद और सेवा वा योगी आत्मा, दिव्यगुण धारण करने वाली आत्मा बन चल रहे हैं। चार सबजेक्ट द्वारा विधि और सिद्धि प्राप्त किये हुए हैं। दूसरे नम्बर के पूज्य विधि पूर्वक नहीं लेकिन नियम समझ करके करेंगे चार ही सबजेक्ट पूरे लेकिन विधि सिद्धि के

प्राप्ति स्वरूप हो करके नहीं। लेकिन नियम समझकर चलना ही है, करना ही है, इसी लक्ष्य से जितना कायदा उतना फायदा प्राप्त करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। वह दिल का स्नेह स्वत: और सहज बनाता है। और नियम पूर्वक वालों को कभी सहज कभी मुश्किल लगता। कभी मेहनत करनी पड़ती और कभी मुहब्बत की अनुभूति होती। नम्बरवन लवलीन रहते, नम्बर दो लव में रहते। नम्बर तीसरा मैजारिटी समय चारों ही सबजेक्ट दिल से नहीं लेकिन दिखावा मात्र करते हैं। याद में भी बैठेंगे - नामीग्रामी बनने के भाव से। ऐसे दिखावा मात्र सेवा भी खूब करेंगे। जैसा समय वैसा अल्पकाल का रूप भी धारण कर लेंगे लेकिन दिमाग तेज़ और दिल खाली। नम्बर चौथा सिर्फ डर के मारे कोई कुछ कह न दे कि यह तो है ही लास्ट नम्बर का वा यह आगे चल नहीं सकता, ऐसे कोई इस नजर से नहीं देखे। ब्राह्मण तो बन ही गये और शूद्र जीवन भी पसन्द नहीं और ब्राह्मण जीवन में विधि पूर्वक चलने की हिम्मत नहीं इसलिए मज़बूरी मज़धार में आ गये। ऐसे मज़बूरी वा डर के मारे चलते ही रहते। ऐसे कभी-कभी अपने श्रेष्ठ जीवन का अनुभव भी करते हैं इसलिए इस जीवन को छोड़ भी नहीं सकते। ऐसे को कहेंगे चौथे नम्बर का पूज्य आत्मा। तो उन्हों की पूजा कभी-कभी और डर के मारे मज़बूरी भक्त बन निभाना है, इसी प्रमाण चलती रहती। और दिखावा वाले की भी पूजा दिल से नहीं लेकिन दिखावा मात्र होती। इसी प्रमाण चलते रहते। तो चार ही प्रकार के पूज्य देखे हैं ना! जैसा अभी स्वयं बनेंगे वैसे ही सतयुग त्रेता की रॉयल फैमिली वा प्रजा उसी नम्बर प्रमाण बनेगी और द्वापर कलियुग में ऐसे ही भक्त माला बनेगी। अभी अपने आप से पूछो - मैं कौन! वा चारों में ही कभी कहाँ कभी कहाँ चक्र लगाते हो? फिर भी भाग्य विधाता के बच्चे बने, पूज्य तो जरूर बनेंगे। नामीग्रामी अर्थात् श्रेष्ठ, पूज्य 16 हज़ार तक नम्बरवार बन जाते हैं। बाकी 9 लाख लास्ट समय तक अर्थात् कलियुग के पिछाड़ी के समय तक थोड़े बहुत पूज्य बन जाते हैं। तो समझा गायन तो सबका होता है। गायन का आधार है - भाग्य विधाता बाप का बनना। और पूजन का आधार है - चारों सबजेक्ट में पवित्रता, स्वच्छता, सच्चाई, सफाई। ऐसे

पर बापदादा भी सदा स्नेह के फूलों से पूजन अर्थात श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार भी श्रेष्ठ मानते हैं और पूजन अर्थात् श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार भी श्रेष्ठ मानते हैं और विश्व भी वाह-वाह के नगाड़े बजाए उन्हों की मन से पूजा करेगा। और भक्त तो अपना ईष्ट समझ दिल में समायेंगे। तो ऐसे पूज्य बने हो? जब है ही परमपिता। सिर्फ पिता नहीं है लेकिन परम है तो बनायेंगे भी परम ना! पूज्य बनना बड़ी बात नहीं है लेकिन परम पूज्य बनना है।

(30.04.1983)

बापदादा भी तीन बार माफ करते हैं। तीन बार फिर भी चांस देते हैं। इसलिए कोई भी संकोच नहीं करें। संकोच को छोड़कर स्नेह में आ जाए तो फिर से अपनी उन्नती कर सकते हैं। ऐसे बच्चों को भी विशेष सन्देश देना। कोई-कोई सरकमस्टाँस के कारण नहीं आ सके है और वह बहुत तड़पते याद कर रहे हैं। बापदादा सभी बच्चों की सच्ची दिल को जानते हैं। जहाँ सच्ची दिल हैं वहाँ आज नहीं तो कल सफलता है ही।

(20.02.1984)

आज भोलानाथ बाप अपने भोले बच्चों से बच्चों का सो बाप का सो बच्चों का अवतरण दिवस अर्थात् अलौकिक रुहानी जयन्ती मनाने आये हैं। भोलानाथ बाप को सबसे प्रिय भोले बच्चे हैं। भोले अर्थात् जो सदा सरल स्वभाव, शुभ भाव और स्वच्छता सम्पन्न मन और कर्म दोनों में सच्चाई और सफाई, ऐसे भोले बच्चे भोलानाथ बाप को भी अपने ऊपर आकर्षित करते हैं। भोलानाथ बाप ऐसे सरल स्वभाव भोले बच्चों के गुणों की माला सदा ही सिमरण करते रहते हैं। आप सभी ने अनेक जन्मों में बाप के नाम की माला सिमरण की और बाप अभी संगमयुग पर बच्चों को रिटर्न दे रहे हैं। बच्चों की गुण माला सिमरण करते हैं। कितने भोले बच्चे

भोलानाथ को प्यारे हैं। जितना ज्ञान स्वरुप, नालेजफुल, पावरफुल उतना ही भोलापन। भगवान को भोलापन प्यारा है। ऐसे अपने श्रेष्ठ भाग्य को जानते हो ना। जो भगवान को मोह लिया। अपना बना दिया।

(28.02.1984)

जैसे अभी अशान्ति के आवाज चारों ओर गूँज रहे हैं। तन-मन-धन-जन सब तरफ से अशान्ति अनुभव कर रहे हैं। भय सर्व प्राप्ति के साधनों को भी शान्ति के बजाए अशान्ति का अनुभव करा रहा है। आज की आत्मायें किसी न किसी भय के वशीभूत हैं। खा रहे हैं, चल रहे हैं, कमा रहे हैं, अल्पकाल की मौज भी मना रहे हैं लेकिन भय के साथ। ना मालूम कल क्या होगा? तो जहाँ भय का सिंहासन है, जब नेता ही भय की कुर्सी पर बैठे हैं तो प्रजा क्या होगी? जितने बड़े नेता उतने अंगरक्षक होंगे। क्यों? भय है ना। तो भय के सिंहासन पर अल्पकाल की मौज क्या होगी? शान्तिमय वा अशान्तिमय? बापदादा ने ऐसे भयभीत बच्चों को सदाकाल की सुखमय, शान्तिमय जीवन देने के लिए आप सभी बच्चों को शान्ति के अवतार के रुप में निमित्त बनाया है। शान्ति की शक्ति से बिना खर्चे कहाँ से कहाँ तक पहुँच सकते हो? इस लोक से भी परे। अपने स्वीट होम में कितना सहज पहुँचते हो! मेहनत लगती है? शान्ति की शक्ति से प्रकृतिजीत मायाजीत कितना सहज बनते हो? किस द्वारा? आत्मिक शक्ति द्वारा। अब एटामिक और आत्मिक दोनों शक्तियों का जब मेल हो जायेगा। आत्मिक शक्ति से एटामिक शक्ति भी सतोप्रधान बुद्धि द्वारा सुख के कार्य में लगेगी तब दोनों शक्तियों के मिलन द्वारा शान्तिमय दुनिया इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी। क्योंकि शान्ति, सुखमय स्वर्ग के राज्य में दोनों शक्तियाँ है। तो सतोप्रधान बुद्धि अर्थात् सदा श्रेष्ठ, सत्य कर्म करने वाली बुद्धि। सत अर्थात् अविनाशी भी है। हर कर्म, अविनाशी बाप, अविनाशी आत्मा इस स्मृति से अविनाशी प्राप्ति वाला होगा।

इसलिए कहते हैं - सत कर्म। तो ऐसे सदा के लिए शान्ति देने वाले, शान्ति के अवतार हो। समझा।

(05.03.1984)

सदा अपने को संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें अनुभव करते हो? सच्चे ब्राह्मण अर्थात् सदा सत्य बाप का परिचय देने वाले। ब्राह्मणों का काम है कथा करना, तुम कथा नहीं करते लेकिन सत्य परिचय सुनाते हो। ऐसे सत्य बाप का सत्य परिचय देने वाले, ब्राह्मण आत्मायें हैं, यही नशा रहे। ब्राह्मण देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं। इसलिए ब्राह्मणों का स्थान चोटी पर दिखाते हैं। चोटी वाले ब्राह्मण अर्थात् ऊँची स्थिति में रहने वाले। ऊँचा रहने से नीचे सब छोटे होंगे। कोई भी बात बड़ी नहीं लगेगी। ऊपर बैठकर नीचे की चीज देखो तो छोटी लगेगी। कभी कोई समस्या बड़ी लगती तो उसका कारण नीचे बैठकर देखते हो। ऊपर से देखो तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। तो सदा याद रखना -चोटी वाले ब्राह्मण हैं, इसमें बड़ी समस्या भी सेकण्ड में छोटी हो जायेगी। समस्या से घबराने वाले नहीं लेकिन पार करने वाले समस्या का समाधान करने वाले।

(17.04.1984)

सत्यता की शक्ति

सर्व शक्तिवान बाप आज विशेष दो सत्ताओं को देख रहे हैं। एक राज्य सत्ता दूसरी है ईश्वरीय सत्ता। दोनों सत्ताओं का अब संगम पर विशेष पार्ट चल रहा है। राज्य सत्ता हलचल में है। ईश्वरीय सत्ता सदा अचल अविनाशी है। ईश्वरीय सत्ता को सत्यता की शक्ति कहा जाता है क्योंकि देने वाला सत् बाप, सत् शिक्षक, सतगुरू है। इसलिए सत्यता की शक्ति सदा श्रेष्ठ है। स्त्यता की शक्ति द्वारा सतयुग, सचखण्ड स्थापन कर रहे हो। सत अर्थात् अवनिशी । अविनाशी और सच को भी सत कहा जाता है। सच्चा भी है अविनाशी भी है। तो सत्यता की

शक्ति द्वारा अविनाशी वर्सा, अवनिशी पद प्राप्त करने वाली पढ़ाई, अविनाशी वरदान प्राप्त किये हैं? इस प्राप्ति से कोई भी मिटा नहीं सकता। सत्यता की शक्ति से सारी विश्व आप सत्यता की शक्ति वालों का भक्तिमार्ग के आदि से अन्त तक अविनाशी गायन और पूजन करती आती है। अर्थात् गायन पूजन भी अविनाशी सत हो जाता है। सत अर्थात् सत्य। तो सबसे पहले क्या जाना? अपने आपको 'सत आत्मा' जाना। सत बाप के सत्य परिचय को जाना। इस सत्य पहचान से सत्य ज्ञान से सत्यता की शक्ति स्वत: ही सत्य हो जाती। सत्यता की शक्ति द्वारा असत्य रूपी अंधकार, अज्ञान रूपी अंधकार स्वत: ही समाप्त हो जाता है। अज्ञान सदा असत्य होता है। ज्ञान सत है, सत्य है। इसलिए भक्तों ने बाप की महिमा में भी कहा है 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम'। सत्यता की शक्ति सहज ही प्रकृति जीत, मायाजीत बना देती है। अभी अपने आप से पूछो - सत् बाप के बच्चे हैं तो सत्यता की शक्ति कहाँ तक धारणा की है?

सत्यता के शक्ति की निशानी है - वह सदा निर्भय होगा। जैसे मुरली में सुना है - 'सच तो बिठो नच' अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा बेफिकर निश्चिन्त होने के कारण, निर्भय होने के कारण खुशी में नाचता रहेगा। जहाँ भय है, चिंता है वहाँ खुशी में नाचना नहीं। अपनी कमजोरियों की भी चिंता होती है। अपने संस्कार वा संकल्प कमजोरियों की भी चिंता होती है। अपने संस्कार वा संकल्प कमजोर हैं तो सत्य मार्ग होने के कारण मन में अपनी कमजोरी का चिंतन चलता जरूर है। कमजोरी मन की स्थिति को हलचल में जरूर लाती है। चाहे कितना भी अपने को छिपावे वा आर्टीफिशल अल्पकाल के समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण बाहर से मुस्कराहट भी दिखावे लेकिन सत्यता की शक्ति स्वयं को महसूसता अवश्य कराती है। बाप से और अपने आप से छिप नहीं सकता। दूसरों से छिप सकता है। चाहे अलबेलेपन के कारण अपने आप को भी कभी-कभी महसूस होते हुए भी चला लेवे फिर भी सत्यता की शक्ति मन में उलझन के रूप में, उदासी के रूप में, व्यर्थ संकल्प के रूप में आती जरूर है। क्योंकि सत्यता के आगे असत्य

टिक नहीं सकता। जैसे भक्ति मार्ग में चित्र दिखाया है - सागर के बीच साँप के ऊपर नाच रहे हैं। है साँप लेकिन सत्यता की शक्ति से साँप भी नाचने की स्टेज बन जाते हैं। कैसी भी भयानक परिस्थिति हो, माया के विकराल रूप हों, सम्बन्ध सम्पर्क वाले परेशान करने वाले हों, वायुमण्डल कितना भी जहरीला हो लेकिन सत्यता की शक्ति वाला इन सबको खुशी में नाचने की स्टेज बना देता है। तो यह चित्र किसका है? आप सभी का है ना! सभी कृष्ण बनने वाले हैं। इसी में हाथ उठाते हैं ना। राम के चरित्रों में ऐसी बातें नहीं हैं। उसका अभी-अभी वियोग अभी-अभी खुशी है। तो कृष्ण बनने वाली आत्मायें ऐसी स्थिति रूपी स्टेज पर सदा नाचती रहती हैं। कोई प्रकृति वा माया वा व्यक्ति, वैभव उसे हिला नहीं सकता। माया को ही अपनी स्टेज वा शैया बना देगा। यह भी चित्र देखा है ना। साँप को शैया बना दिया अर्थात् विजयी बन गये। तो सत्यता की शक्ति की निशानी सच तो नच यह चित्र है। सत्यता की शक्ति वाले कभी भी डूब नहीं सकते। सत्य की नईया डगमग खेल कर सकती है लेकिन डूब नहीं सकती। डगमगाना भी खेल अनुभव करेंगे। आजकल खेल भी जान बूझ कर उपर नीचे हिलने के बनाते हैं ना। है गिरना लेकिन खेल होने के कारण विजयी अनुभव करते। कितनी भी हलचल होगी लेकिन खेल करने वाला यह समझेगा कि मैंने जीत प्राप्त कर ली। ऐसे सत्यता की शक्ति अर्थात् विजयी के वरदानी अपने को समझते हो? अपना विजयी स्वरूप सदा अनुभव करते हो? अगर अब तक भी कोई हलचल है, भय है तो सत्य के साथ असत्य अभी रहा हुआ है। इसलिए हलचल में ला रहा है। तो चेक करो - संकल्प, दृष्टि, वृत्ति बोल और सम्बन्ध सम्पर्क में सत्यता की शक्ति अचल हैं? अच्छा - आज मिलने वाले बहुत हैं इसलिए इस सत्यता की शक्ति पर, ब्राह्मण जीवन में कैसे विशेषता सम्पन्न चल सकते हैं इसका विस्तार फिर सुनायेंगे। समझा!

(26.12.1984)

सभी सदा अपने को विशेष आत्मायें अनुभव करते हो? सारे विश्व में ऐसी

विशेष आत्मायें कितनी होंगी? जो कोटों में कोई गायन है, वह कौन हैं? आप हो ना! तो सदा अपने को कोटों में कोई, कोई में भी कोई ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें समझते हो? कभी स्वप्न में भी ऐसा नहीं सोचा होगा कि इतनी श्रेष्ठ आत्मा बनेंगे लेकिन साकार रूप में अनुभव कर रहे हो। तो सदा अपना यह श्रेष्ठ भाग्य स्मृति में रहता है? वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य। जो भगवान ने खुद आपका भाग्य बनाया है। डायरेक्ट भगवान ने भाग्य की लकीर खींची, ऐसा श्रेष्ठ भाग्य है। जब यह श्रेष्ठ भाग्य स्मृति में रहता है तो खुशी में बुद्धि रूपी पाँव इस पृथ्वी पर नहीं रहते। ऐसे समझते हो ना। वैसे भी फ़रिश्तों के पाँव धरनी पर नहीं होते। सदा ऊपर। तो आपके बुद्धि रूपी पाँव कहाँ रहते हैं? नीचे धरनी पर नहीं। देह-अभिमान भी धरनी है। देह-अभिमान की धरनी से ऊपर रहने वाले। इसको ही कहा जाता है - 'फ़रिश्ता'। तो कितने टाइटिल हैं - भाग्यवान हैं, फ़रिश्ते हैं, सिकीलधे हैं - जो भी श्रेष्ठ टाइटिल हैं वह सब आपके हैं। तो इसी खुशी में नाचते रहो। सिकीलधे धरती पर पाँव नहीं रखते, सदा झूले में रहते। क्योंकि नीचे धरनी पर रहने के अभ्यासी तो 63 जन्म रहे। उसका अनुभव करके देख लिया। धरनी में मिट्टी में रहने से मैले हो गये। और अभी सिकीलधे बने तो सदा धरनी से ऊपर रहना। मैले नहीं, सदा स्वच्छ। सच्ची दिल, साफ दिल वाले बच्चे सदा बाप के साथ रहते हैं। क्योंकि बाप भी सदा स्वच्छ है ना। तो बाप के साथ रहने वाले भी सदा स्वच्छ हैं।

(18.02.1985)

आज ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा अपने लकी और लवली सितारों को देख रहे हैं। यह रूहानी तारामण्डल सारे कल्प में कोई देख नहीं सकता। आप रूहानी सितारे और ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा इस अति न्यारे और प्यारे तारामंडल को देखते हो। इस रूहानी तारामण्डल को साइंस की शक्ति नहीं देख सकती। साइंस की शक्ति वाले इस तारामण्डल को देख सकते, जान सकते हैं। तो आज तारामण्डल का सैर करते भिन्न-भिन्न सितारों को देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। कैसे हर एक

सितारा - ज्ञान सूर्य द्वारा सत्यता की लाइट माइट ले बाप समान सत्यता की शक्ति सम्पन्न सत्य स्वरूप बने हैं। और ज्ञान चन्द्रमा द्वारा शीतलता की शक्ति धारण कर चन्द्रमा समान 'शीतला' स्वरूप बने हैं। यह दोनों शक्तियाँ - 'सत्यता और शीतलता' सदा सहज सफ़लता को प्राप्त कराती हैं। एक तरफ़ सत्यता की शक्ति का ऊँचा नशा दूसरे तरफ़ जितना ऊँचा नशा उतना ही शीतलता के आधार से कैसे भी उल्टे नशे वा क्रोधित आत्मा को भी शीतल बनाने वाले। कैसा भी अहंकार के नशे में 'मैं, मैं' करने वाला हो लेकिन शीतलता की शक्ति से मैं, मैं के बजाए 'बाबा-बाबा' कहने लग पड़े। सत्यता को भी शीतलता की शक्ति से सिद्ध करने से सिद्धि प्राप्त होती है। नहीं तो सिवाए शीतलता की शक्ति के सत्यता को सिद्ध करने के लक्ष्य से, करते सिद्ध हैं लेकिन अज्ञानी, सिद्ध को जिद्द समझ लेते हैं। इसलिए सत्यता और शीतलता दोनों शक्तियाँ समान और साथ चाहिए। क्योंकि आज के विश्व का हर एक मानव किसी न किसी अग्नि में जल रहा है। ऐसी अग्नि में जलती हुई आत्मा को पहले शीतलता की शक्ति से अग्नि को शीतल करो तब शीतलता के आधार से सत्यता को जान सकेंगे।

(21.02.1985)

कमाया और जमा किया। अपनी सच्ची कमाई का जमा करना इसी में बल है। सच्ची कमाई का धन, बाप के कार्य में सफ़ल हो रहा है। अगर ऐसे ही धन आ जाए तो तन नहीं लगेगा। और तन नहीं लगेगा तो मन भी नीचे ऊपर होगा। इसलिए तन-मन-धन तीनों ही लग रहे हैं। इसलिए संगमयुग पर कमाया और ईश्वरीय बैंक में जमा किया, यह जीवन ही नम्बरवन जीवन है। कमाया और लौकिक विनाशी बैंकों में जमा किया तो वह सफ़ल नहीं होता। कमाया और अविनाशी बैंक में जमा किया तो एक पद्मगुणा बनता। 21 जन्मों के लिए जमा हो जाता। दिल से किया हुआ दिलाराम के पास पहुँचता है। अगर कोई दिखावे की रीति से करते तो दिखावे में ही खत्म हो जाता है। दिलाराम तक नहीं पहुँचता।

इसलिए आप दिल से करने वाले अच्छे हो। दिल से दो करने वाले भी पद्मापद्म पति बन जाते हैं और दिखावा से हज़ार करने वाले भी पद्मापद्म पति नहीं बनते। दिल की कमाई, स्नेह की कमाई सच्ची कमाई है। कमाते किसलिए हो? सेवा के लिए ना - कि अपने आराम के लिए? तो यह है सच्ची दिल की कमाई। जो एक भी पद्मगुणा बन जाता है। अगर अपने आराम के लिए कमाते वा जमा करते हैं तो यहाँ भले आराम करेंगे लेकिन वहाँ औरों को आराम देने लिए निमित्त बनेंगे! दास-दासियाँ क्या करेंगे! रायल फैमली को आराम देने के लिए होंगे ना! यहाँ के आराम से वहाँ आराम देने के लिए निमित्त बनना पड़े। इसलिए जो मुहब्बत से सच्ची दिल से कमाते हो, सेवा में लगाते हो, वही सफ़ल कर रहे हो। अनेक आत्माओं की दुआयें ले रहे हो। जिन्हों के निमित्त बनते हो वही फ़िर आपके भक्त बन आपकी पूजा करेंगे। क्योंकि आपने उन आत्माओं के प्रति सेवा की तो सेवा का रिटर्न वह आपके जड़ चित्रों की सेवा करेंगे! पूजा करेंगे! 63 जन्म सेवा का रिटर्न आपको देते रहेंगे। बाप से तो मिलेगा ही लेकिन उन आत्माओं से भी मिलेगा। जिनको सन्देश देते हो और अधिकारी नहीं बनते हैं तो फ़िर वह इस रूप से रिटर्न देंगे। जो अधिकारी बनते वह तो आपके सम्बन्ध में आ जाते हैं। कोई सम्बन्ध में आ जाते। कोई भक्त बन जाते। कोई प्रजा बन जाते। वैराइटी प्रकार की रिजल्ट निकलती है। समझा! लोग भी पूछते हैं ना कि आप सेवा के पीछे क्यों पड़ गये हो। खाओ-पियो मौज करो। क्या मिलता है जो इतना दिन-रात सेवा के पीछे पड़ते हो? फ़िर आप क्या कहते हो? जो हमको मिला है वह अनुभव करके देखो। 'अनुभवी ही जाने इस सुख को'। यह गीत गाते हो ना!

(27.02.1985)

ऐसे प्लैन बनाओ जो विशेष समाचार पत्रों में वा जो भी आवाज़ फैलाने के साधन हैं - एक ही समय एक ही खुशखबरी वा सन्देश चारों ओर सभी को पहुँचे। जहाँ से भी कोई आवे तो यह एक ही बात सभी को मालूम पड़े। ऐसे तरीके से चारों

ओर एक ही आवाज़ हो। नवीनता भी करनी है। अपने नालेजफुल स्वरूप को प्रत्यक्ष करना है। अभी समझते हैं कि शान्त स्वरूप आत्मायें हैं। शान्ति का सहज रास्ता बताने वाले हैं। यह स्वरूप प्रत्यक्ष हुआ भी है और हो रहा है। लेकिन नालेजफुल बाप की नालेज है तो 'यही' है। अब यह आवाज हो। जैसे अब कहते हैं शान्ति का स्थान है तो यही है। ऐसे सबके मुख से यह आवाज निकले कि सत्य ज्ञान है तो यही है। जैसे शान्ति और स्नेह की शक्ति अनुभव करते हैं वैसे सत्यता सिद्ध हो, तो और सब क्या हैं, वह सिद्ध हो ही जायेगा। कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अब वह सत्यता की शक्ति कैसे प्रत्यक्ष करो, वह विधि क्या अपनाओ जो आपको कहना न पड़े। लेकिन वह स्वयं ही कहें कि इससे यह सिद्ध होता है कि सत्य ज्ञान परमात्म ज्ञान शक्तिशाली ज्ञान है तो यही है। इसके लिए विधि फ़िर सुनायेंगे। आप लोग भी इस पर सोचना। फ़िर दूसरे बारी सुनायेंगे। स्नेह और शान्ति की धरनी तो बन गई है ना। अभी ज्ञान का बीज पड़ना है तब तो ज्ञान के बीज का फल 'स्वर्ग' के वर्से के अधिकारी बनेंगे।

(09.03.1985)

आज सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरु अपने सत्यता के शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं। सत्य ज्ञान वा सत्यता की शक्ति कितनी महान है उसके अनुभवी आत्मायें हो। सब दूरदेश वासी बच्चे भिन्न धर्म, भिन्न मान्यतायें, भिन्न रीति रसम में रहते हुए भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की तरफ वा राजयोग की तरफ क्यों आकर्षित हुए? सत्य बाप का सत्य परिचय मिला अर्थात् सत्य ज्ञान मिला। सच्चा परिवार मिला। सच्चा स्नेह मिला। सच्ची प्राप्ति का अनुभव हुआ। तब सत्यता की शक्ति के पीछे आकर्षित हुए। जीवन थी, प्राप्ति भी थी यथा शक्ति ज्ञान भी था लेकिन सत्य ज्ञान नहीं था। इसलिए सत्यता की शक्ति ने सत्य बाप का बना लिया।

सत शब्द के दो अर्थ हैं - सत सत्यता भी है और सत अविनाशी भी है।

तो सत्यता की शक्ति अविनाशी भी है। इसलिए अविनाशी प्राप्ति, अविनाशी सम्बन्ध, अविनाशी स्नेह, अविनाशी परिवार है। यही परिवार 21 जन्म भिन्न-भिन्न नाम रूप से मिलते रहेंगे। जानेंगे नहीं। अभी जानते हो कि हम ही भिन्न सम्बन्ध से परिवार में आते रहेंगे। इस अविनाशी प्राप्ति ने, पहचान ने दूर देश में होते हुए भी अपने सत्य परिवार, सत्य बाप, सत्य ज्ञान की तरफ खींच लिया। जहाँ सत्यता भी हो और अविनाशी भी हो, यही परमात्म पहचान है। तो जैसे आप सभी इसी विशेषता के आधार पर आकर्षित हुए, ऐसे ही सत्यता की शक्ति को, सत्य ज्ञान को विश्व में प्रत्यक्ष करना है। 50 वर्ष धरनी बनाई, स्नेह में लाया, सम्पर्क में लाया। राजयोग की आकर्षण में लाया, शान्ति के अनुभव से आकर्षण में लाया। अब बाकी क्या रहा? जैसे परमात्मा एक है यह सभी भिन्न-भिन्न धर्म वालों की मान्यता है। ऐसे यथार्थ सत्य ज्ञान एक ही बाप का है अथवा एक ही रास्ता है, यह आवाज़ जब तक बुलन्द नहीं होगा तब तक आत्माओं का अनेक तिनकों के सहारे तरफ़ भटकना बन्द नहीं होगा। अभी यही समझते हैं कि यह भी एक रास्ता है। अच्छा रास्ता है। लेकिन आखिर भी एक बाप का एक ही परिचय, एक ही रास्ता है। अनेकता की यह भ्रान्ति समाप्त होना ही विश्व-शान्ति का आधार है। यह सत्यता के परिचय की वा सत्य ज्ञान के शक्ति की लहर जब तक चारों ओर नहीं फ़ैलेगी तब तक प्रत्यक्षता के झण्डे के नीचे सर्व आत्मायें सहारा नहीं ले सकतीं। तो गोल्डन जुबली में जबकि बाप के घर में विशेष निमन्त्रण देकर बुलाते हो, अपनी स्टेज है। श्रेष्ठ वातावरण है, स्वच्छ बुद्धि का प्रभाव है। स्नेह की धरनी है, पवित्र पालना है। ऐसे वायुमण्डल के बीच अपने सत्य ज्ञान को प्रसिद्ध करना ही प्रत्यक्षता का आरम्भ होगा। याद है, जब प्रदर्शनियों द्वारा सेवा का विहंग मार्ग का आरम्भ हुआ तो क्या करते थे? मुख्य ज्ञान के प्रश्नों का फार्म भराते थे ना। परमात्मा सर्वव्यापी है वा नहीं है? गीता का भगवान कौन है? यह फार्म भराते थे ना। ओपीनियन लिखाते थे। पहेले पूछते थे। तो पहेले यह आरम्भ किया लेकिन चलते-चलते इन बातों को गुप्त रूप में देते हुए सम्पर्क स्नेह को आगे रखते हुए समीप

लाया। इस बारी जबकि इस धरनी पर आते हैं तो सत्य परिचय, स्पष्ट परिचय दो। यह भी अच्छा है, यह तो राज़ी करने की बात है। लेकिन एक ही बाप का एक यथार्थ परिचय स्पष्ट बुद्धि में आ जाए, यह भी समय अब लाना है। सिर्फ़ सीधा कहते रहते हो कि बाप यह ज्ञान दे रहा है, बाप आया है लेकिन वह मानकर जाते हैं कि यही परमात्म-ज्ञान है? परमात्मा का कर्त्तव्य चल रहा है? ज्ञान की नवीनता है यह अनुभव करते हैं? ऐसी वर्कशाप कभी रखी है? जिसमें परमात्मा सर्वव्यापी है या नहीं है, एक ही समय आता है या बार-बार आता है। ऐसे स्पष्ट परिचय उन्हें मिल जाएँ जो समझें कि दुनिया में जो नहीं सुना वह यहाँ सुना। ऐसे जो विशेष स्पीकर बन करके आते - उन्हों से यह ज्ञान के राजों की रूह-रूहान करने से उन्हों की बुद्धि में आयेगा। साथ-साथ जो भाषण भी करते हो उसमें भी अपने परिवर्तन के अनुभव सुनाते हुए एक-एक स्पीकर, एक-एक नये ज्ञान की बात को स्पष्ट कर सकते हो। ऐसे सीधा टापिक नहीं रखें कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है, लेकिन एक बाप को एक रूप से जानने से क्या-क्या विशेष प्राप्तियाँ हुई, उन प्राप्तियों को सुनाते हुए सर्वव्यापी की बातों को स्पष्ट कर सकते हो। एक परमधाम निवासी समझ याद करने से बुद्धि कैसे एकाग्र हो जाती है वा बाप के सम्बन्ध से क्या प्राप्तियों की अनुभूति होती है? इस ढंग से सत्यता और निर्मानता, दोनों रूप से सिद्ध कर सकते हो। जिससे अभिमान भी न लगे कि यह लोग अपनी महिमा करते हैं। नम्रता और रहम की भावना अभिमान की महसूसता नहीं कराती। जैसे मुरलियों को सुनते हुए कोई भी अभिमान नहीं कहेगा। अथार्टी से बोलते हैं, यह कहेंगे। भल शब्द कितने ही सख्त हों लेकिन अभिमान नहीं कहेंगे! अथार्टी की अनुभूति करते हैं। ऐसे क्यों होता है? जितनी ही अथार्टी है उतनी ही नम्रता और रहम भाव है। ऐसे बाप तो बच्चों के आगे बोलते हैं लेकिन आप सभी इस विशेषता से स्टेज पर इस विधि से स्पष्ट कर सकते हो। जैसे सुनाया ना। ऐसे ही एक सर्वव्यापी की बात रखें, दूसरा नाम रूप से न्यारे की रखें, तीसरा ड्रामा की पाइंट बुद्धि में रखें।

आत्मा की नई विशेषताओं को बुद्धि में रखें। जो भी विशेष टापिक्स हैं, उसको लक्ष्य में रख अनुभव और प्राप्ति के आधार से स्पष्ट करते जावें जिससे समझें कि इस सत्य ज्ञान से ही सतयुग की स्थापना हो रही है। भगवानुवाच क्या विशेष है जो सिवाए भगवान के कोई सुना नहीं सकते। विशेष स्लोगन्स जिसको आप लोग सीधे शब्द कहते हो - जैसे मनुष्य, मनुष्य का कभी सतगुरु, सत बाप नहीं बन सकता। मनुष्य परमात्मा हो नहीं सकता। ऐसी विशेष पाइंट तो समय प्रति समय सुनते आये हो, उसकी रूपरेखा बनाओ। जिससे सत्य ज्ञान की स्पष्टता हो। नई दुनिया के लिए यह नया ज्ञान है। नवीनता और सत्यता दोनों अनुभव हो। जैसे कानफ्रेन्स करते हो, सेवा बहुत अच्छी चलती है। कानफ्रेन्स के पीछे जो भी कुछ साधन बनाते हो, कभी चार्टर, कभी क्या बनाते हो। उससे भी साधन अपनाते हो, सम्पर्क को आगे बढ़ाने का। यह भी साधन अच्छा है क्योंकि चांस मिलता है पीछे भी मिलते रहने का। लेकिन जैसे अभी जो भी आते हैं, कहते हैं - हाँ, यह बहुत अच्छी बात है। प्लैन अच्छा है, चार्ट अच्छा है, सेवा का साधन भी अच्छा है। ऐसे यह कह कर जाएँ कि 'नया ज्ञान आज स्पष्ट हुआ'। ऐसे विशेष 5-6 भी तैयार किये तो...क्योंकि सभी के बीच तो यह रूह-रूहान चल नहीं सकती। लेकिन विशेष जा आते हैं। टिकट देकर ले आते हो। विशेष पालना भी मिलती है। उन्हों में से जो नामीग्रामी हैं उन्हों के साथ यह रूह-रूहान कर स्पष्ट उन्हों की बुद्धि में डालना ज़रूर चाहिए। ऐसा कोई प्लैन बनाओ। जिससे उन्हों को यह नहीं लगे कि बहुत अपना नशा है, लेकिन सत्यता लगे। इसको कहा जाता है - तीर भी लगे लेकिन दर्द नहीं हो। चिल्लावे नहीं। लेकिन खुशी में नाचे। भाषणों की रूपरेखा भी नई करो। विश्व-शान्ति के भाषण तो बहुत कर लिए। आध्यात्मिकता की आवश्यकता है, आध्यात्मिक शक्ति क्या है! आध्यात्मिक ज्ञान क्या है! इसका सोर्स कौन है? अभी वहाँ तक नहीं पहुँचे हैं! समझें कि भगवान का कार्य चल रहा है। अभी कहते हैं - मातायें बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं। समय प्रमाण यह भी धरनी बनानी पड़ती है। जैसे

सन शोज़ फ़ादर है वैसे फ़ादर शोज़ सन है। अभी फ़ादर शोज़ सन हो रहा है। तो यह बुलन्द आवाज़ प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा। समझा!

(12.03.1985)

एक - सब बातों में रीयल्टी हो। मिक्स नहीं। इसको कहते हैं - रीयल्टी। संकल्प में, बोल में, सब बात में रीयल। 'सच्ची दिल पर साहेब राजी'। सच की निशानी क्या होगी? सच तो बिठो नच। जो सच्चा होगा वह सदा खुशी में नाचता रहेगा। तो एक रीयल्टी दूसरा रॉयल्टी। छोटी-छोटी बात में कभी भी बुद्धि झुकाव में न आवे। जैसे रॉयल बच्चे होते हैं तो उन्हों की कब छोटी-सी चीज़ पर नज़र नहीं जायेगी। अगर नज़र गई तो उसको रॉयल नहीं कहा जाता। किसी भी छोटी-छोटी बातों में बुद्धि का झुकाव हो जाए तो उसको रॉयल्टी नहीं कहा जाता। जो रॉयल होता है वह सदा प्राप्ति स्वरूप होता है। कहाँ आँख वा बुद्धि नहीं जाती। तो यह है रूहानी रॉयल्टी, कपड़ों की रॉयल्टी नहीं। तो 'रीयल्टी, रॉयल्टी और तीसरा युनिटी'। हर बात में, संकल्प में, बोल में, कर्म में भी सदा एक दो में युनिटी दिखाई दे। ब्राह्मण माना ही एक। लाख नहीं, एक। इसको कहा जाता है युनिटी। वहाँ अनेक स्थिति के कारण एक भी अनेक हो जाते। और यहाँ अनेक होते भी एक हैं। इसको कहा जाता है - 'युनिटी'। दूसरे को नहीं देखना है। हम चाहते हैं युनिटी करें लेकिन यह नहीं करते हैं। अगर आप करते रहेंगे तो उसको डिसयुनिटी का चांस ही नहीं मिलेगा। कोई हाथ ऐसे करता, दूसरा न करे तो आवाज़ नहीं होगा। अगर कोई डिसयुनिटी का कोई भी कार्य करता है, आप युनिटी में रहो तो डिसयुनिटी वाले कब डिसयुनिटी का काम कर नहीं सकेंगे। युनिटी में आना ही पड़ेगा। इसलिए तीन बातें - रीयल्टी, रॉयल्टी और युनिटी। यह तीनों ही बातें सदा बाप समान बनने में सहयोगी बनेंगी।

(30.03.1985)

विजयी आत्मा को अपने मन में, अपने कर्म प्रति कभी दुविधा नहीं होगी। राइट हूँ वा रांग हूँ? दूसरे का कहना अलग चीज़ है। दूसरे कोई राइट कहेंगे कोई रांग कहेंगे लेकिन अपना मन निश्चयबुद्धि हो कि - मैं विजयी हूँ। बाप में निश्चय के साथ-साथ स्वयं का भी निश्चय चाहिए। निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी का मन अर्थात् संकल्प शक्ति सदा स्वच्छ होने के कारण हाँ और ना का स्वयं प्रति वा दूसरों के प्रति निर्णय सहज और सत्य, स्पष्ट होगा। इसलिए 'पता नहीं', की दुविधा नहीं होगी। निश्चयबुद्धि विजयी रत्न की निशानी - सत्य निर्णय होने के कारण मन में ज़रा भी मूँझ नहीं होगी। सदैव मौज होगी। खुशी की लहर होगी। चाहे सरकमस्टांस आग के समान हो लेकिन उसके लिए वह अग्नि-परीक्षा विजय की खुशी अनुभव करायेगी। क्योंकि परीक्षा में विजयी हो जायेंगें ना। अब भी लौकिक रीति किसी भी बात में विजय होती है तो खुशी मनाने के लिए हँसते नाचते ताली बजाते हैं। यह खुशी की निशानी है। निश्चयबुद्धि कभी भी किसी भी कार्य में अपने को अकेला अनुभव नहीं करेंगे। सभी एक तरफ हैं मैं अकेला दूसरी तरफ हूँ, चाहे मैजारिटी दूसरे तरफ हों और विजयी रत्न सिर्फ़ एक हो फ़िर भी वह अपने को एक नहीं लेकिन बाप मेरे साथ है इसलिए बाप के आगे अक्षोणी भी कुछ नहीं है। जहाँ बाप है वहाँ सारा संसार बाप में है। बीज है तो झाड़ उसमें है ही। विजयी निश्चयबुद्धि आत्मा सदा अपने को सहारे के नीचे समझेंगे। सहारा देने वाला दाता मेरे साथ है - यह नैचरल अनुभव करता है।

(25.11.1985)

सिर्फ़ यह नहीं सोचो, मैं तो सहनशील रहता हूँ। लेकिन आपके सहनशीलता के गुण की लाइट-माइट दूसरे तक पहुँचनी चाहिए। लाइट-हाउस की लाइट सिर्फ़ अपने प्रति नहीं होती है। दूसरों को रोशनी देने वा रास्ता बताने के लिए होती है। ऐसे शक्ति रूप अर्थात् लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन दूसरों को उसके लाभ का अनुभव कराओ। वह अनुभव करें कि निर्बलता के अंधकार से शक्ति की रोशनी

में आ गये हैं वा समझें कि यह आत्मा शक्ति द्वारा मुझे भी शक्तिशाली बनाने में मददगार है। कनेक्शन बाप से करायेगी लेकिन निमित्त बन। ऐसे नहीं कि सहयोग देकर अपने में ही अटका देगी। बाप की देन दे रहे हैं, इस स्मृति और समर्थी से विशेषताओं को सेवा में लगायेंगे। सच्चे सेवाधारी की निशानी यही है। हर कर्म में उस द्वारा बाप दिखाई देवे। उनका हर बोल बाप की स्मृति दिलावे। हर विशेषता दाता के तरफ इशारा दिलावे। सदा बाप ही दिखाई देगा। वह आपको न देख सदा बाप को देखेंगे। मेरा सहयोगी है, यह सच्चे सेवाधारी की निशानी नहीं। यह कभी भी संकल्प मात्र भी नहीं सोचना कि मेरी विशेषता के कारण यह मेरे बहुत सहयोगी हैं। सहयोगी को सहयोग देना मेरा काम है। अगर आपको देखा, बाप को नहीं देखा तो यह सेवा नहीं हुई। यह द्वापरयुगी गुरुओं के माफिक बेमुख किया। बाप को भुलाया, न कि सेवा की। यह गिराना है, न कि चढ़ाना है। यह पुण्य नहीं, यह पाप है। क्योंकि बाप नहीं है तो ज़रूर पाप है। तो सच्चे सेवाधारी सत्य के तरफ ही सम्बन्ध जोड़ेंगे।

(11.12.1985)

अविनाशी खुशी की निशानी है - उनको औरों से भी सदा खुशी की दुआयें अवश्य प्राप्त होंगी। बापदादा और निमित्त बड़ों के स्नेह की दुआयें अन्दर अलौकिक आत्मिक खुशी के सागर में लहराने का अनुभव करायेंगी। अलबेलेपन में यह नहीं सोचना कि मैं तो ठीक हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं जानते। क्या सूर्य की रोशनी छिप सकती है? सत्यता की खुशबू कभी मिट नहीं सकती। छिप नहीं सकती। इसलिए धोखा कभी नहीं खाना। यही पाठ पक्का करना। पहले अपनी बेहद की अविनाशी खुशी फिर दूसरी बातें। बेहद की खुशी सेवा की वा सर्व के स्नेह की, सर्व द्वारा अविनाशी सम्मान प्राप्त होने की खुशनसीबी अर्थात् श्रेष्ठ भाग्य स्वतः ही अनुभूति करायेगी। जो सदा खुश है वह खुशनसीब है। बिना मेहनत,

बिना इच्छा अथवा बिना कहने के सर्व प्राप्ति सहज होंगी। यह पाठ पक्का किया?

(13.01.1986)

बाप को पहचाना और बाप ने, जो भी हैं, जैसे भी हैं, पसन्द कर लिया। क्योंकि दिलाराम को पसन्द है - सच्ची दिल वाले। दुनिया का दिमाग़ न भी हो लेकिन बाप को दुनिया के दिमागी पसन्द नहीं, दिल वाले पसन्द है। दिमाग़ तो बाप इतना बड़ा दे देता है जिससे रचयिता को जानने से रचना के आदि, मध्य, अन्त की नालेज जान लेते हो। इसलिए बापदादा पसन्द करते हैं - दिल से। नम्बर भी बनते हैं सच्ची साफ दिल के आधार से। सेवा के आधार से नहीं। सेवा में भी सच्ची दिल से सेवा की वा सिर्फ दिमाग़ के आधार से सेवा की! दिल का आवाज दिल तक पहुँचता है, दिमाग़ का आवाज दिमाग़ तक पहुँचता है। आज बापदादा दिल वालों की लिस्ट देख रहे थे। दिमाग़ वाले नाम कमाते हैं, दिल वाले दुआयें कमाते हैं।

(18.01.1986)

चाहे सेन्टर पर रहते वा कहाँ भी रह कर सेवा करते। सेवाधारी तो सब हैं। कई अपने निमित्त स्थानों पर रहकर सेवा का चांस लेते वह भी सेवा की स्टेज पर हैं। सेवा के सिवाए अपने समय को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। सेवा का भी खाता बहुत जमा होता है। सच्ची दिल से सेवा करने वाले अपना खाता बहुत अच्छी तरह से जमा कर रहे हैं। बापदादा के पास हर एक बच्चे का आदि से अन्त तक सेवा का खाता है। और आटोमेटिकली उसमें जमा होता रहता है। एक-एक का एकाउन्ट नहीं रखना पड़ता हैं। एकाउन्ट रखने वालों के पास बहुत फाइल होती हैं। बाप के पास स्थूल फाइल कोई नहीं है। एक सेकण्ड में हर एक का आदि से अभी तक का रजिस्टर सेकण्ड में इमर्ज होता है। आटोमेटिक जमा होता रहता है। ऐसे कभी नहीं समझना हमको तो कोई देखता नहीं, समझता नहीं। बापदादा के

पास तो जो जैसा है, जितना करता है, जिस स्टेज से करता है सब जमा होता है। फाइल नहीं है लेकिन फाइनल है।

(01.03.1986)

पुरानी देह के स्वभाव और संस्कार भी बहुत कड़े हैं। मायाजीत बनने में यह भी बड़ा विघ्न-रूप बनते हैं। कई बार बापदादा देखते हैं - पुराने स्वभाव, संस्कार रूपी सांप खत्म भी हो जाता लेकिन लकीर रह जती जो समय आने पर बार-बार धोखा दे देती। यह कड़े स्वभाव और संस्कार कई बार इतना माया के वशीभूत बना देते हैं जो रांग को रांग समझते ही नहीं। 'महसूसता-शक्ति' समाप्त हो जाती है। इससे न्यारा होना - इसकी भी चेंकिग अच्छी तरह चाहिए। जब महसूसता-शक्ति समाप्त हो जाती है तो और ही एक झूठ के पीछे हजार झूठ अपनी बात को सिद्ध करने के लिए बोलने पड़ते हैं। इतना परवश हो जाते हैं! अपने को सत्य सिद्ध करना - यह भी पुराने संस्कार के वशीभूत की निशानी है। एक है यथार्थ बात स्पष्ट करना, दूसरा है अपने को जिद्द से सिद्ध करना। तो जिद्द से सिद्ध करने वाले कभी सिद्धि-स्वरूप नहीं बन सकते हैं। यह भी चेक करो कि कोई भी पुराना स्वभाव, संस्कार अंश-मात्र भी छिपे हुए रूप में रहा हुआ तो नहीं है? समझा?

(25.01.1987)

एक माशूक द्वारा सर्व सम्बन्धों की समय प्रमाण अनुभूति करना। माशूक एक है लेकिन एक के साथ सर्व सम्बन्ध हैं। जो सम्बन्ध चाहें और जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता है, उस समय उस सम्बन्ध के रूप से प्रीति की रीति द्वारा अनुभव कर सकते हो। तो पहली निशानी है - सर्व सम्बन्धों की अनुभूति। 'सर्व' शब्द को अंडरलाइन करना। सिर्फ सम्बन्ध नहीं। कई ऐसे नटखट आशिक भी हैं जो समझते हैं सम्बन्ध तो जुट गया है। लेकिन सर्व सम्बन्ध जुटे हैं? और दूसरी बात

- समय पर सम्बन्ध की अनुभूति होती है? नॉलेज के आधार पर सम्बन्ध है वा दिल की अनुभूति से सम्बन्ध है? बापदादा सच्ची दिल पर राजी है। सिर्फ तीव्र दिमाग वालों पर राजी नहीं, लेकिन दिलाराम दिल पर राजी हैं। इसलिए, दिल का अनुभव दिल जाने, दिलाराम जाने। समाने का स्थान दिल कहा जाता है, दिमाग नहीं। नॉलेज को समाने का स्थान दिमाग है, लेकिन माशूक को समाने का स्थान दिल है। माशूक आशिकों की बातें ही सुनायेंगे ना। कोई-कोई आशिक दिमाग ज्यादा चलाते लेकिन दिल से दिमाग की मेहनत आधी हो जाती है। जो दिल से सेवा करते वा याद करते, उन्हों की मेहनत कम और सन्तुष्टता ज्यादा होती और जो दिल के स्नेह से नहीं याद करते, सिर्फ नॉलेज के आधार पर दिमाग से याद करते वा सेवा करते, उन्हों को मेहनत ज्यादा करनी पड़ती, सन्तुष्टता कम होती। चाहे सफलता भी हो जाए, तो भी दिल की सन्तुष्टता कम होगी। यही सोचते रहेंगे - हुआ तो अच्छा, लेकिन फिर, फिर भी... करते रहेंगे और दिल वाले सदा सन्तुष्टता के गीत गाते रहेंगे। दिल की सन्तुष्टता के गीत, मुख की सन्तुष्टता के गीत नहीं। सच्चे आशिक दिल से सर्व सम्बन्धों की समय प्रमाण अनुभूति करते हैं।

(18.03.1987)

स्नेह और सत्यता की अथॉर्टी का बैलेन्स

आज सत् बाप, सत् शिक्षक, सतगुरू अपने सत्यता के शक्तिशाली सत् बच्चों से मिलने आये हैं। सबसे बड़े-ते-बड़ी शक्ति वा अथॉर्टी सत्यता की ही है। सत् दो अर्थ से कहा जाता है। एक - सत् अर्थात् सत्य। दूसरा - सत् अर्थात् अविनाशी। दोनों अर्थ से सत्यता की शक्ति सबसे बड़ी है। बाप को सत् बाप कहते हैं। बाप तो अनेक हैं लेकिन सत् बाप एक है। सत शिक्षक, सतगुरू एक ही है। सत्य को ही परमात्मा कहते हैं अर्थात् परम आत्मा की विशेषता सत्य अर्थात् सत् है आपका गीत भी है। सत्य ही शिव है...। दुनिया में भी कहते हैं - सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। साथ-साथ बाप परमात्मा के लिए सत-चित-आनंद स्वरूप कहते

हैं। आप आत्माओं को सत-चित-आनंद कहते हैं। तो 'सत्' शब्द की महिमा बहुत गाई हुई है। और कभी भी कोई भी कार्य में अथॉर्टी से बोलते तो यही कहेंगे - मैं सच्चा हूँ, इसलिए अथॉर्टी से बोलता हूँ। सत्य के लिए गायन है - सत्य की नांव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। आप लोग भी कहते हो - सच तो बिठो नच। सच्चा अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा नाचता रहेगा, कभी मुरझायेगा नहीं, उलझेगा नहीं, घबरायेगा नहीं, कमजोर नहीं होगा। सत्यता की शक्ति वाला सदा खुशी में नाचता रहेगा। शक्तिशाली होगा, सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए घबरायेगा नहीं। सत्यता को सोने के समान कहते हैं, असत्य को मिट्टी के समान कहते हैं। भक्ति में भी जो परम-आत्मा की तरफ लगन लगाते हैं, उन्हों को सत्संगी कहते हैं, सत् का संग करने वाले हैं। और लास्ट में जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो भी क्या कहते हैं - सत् नाम संग है। तो सत् अविनाशी, सत् सत्य है। सत्यता की शक्ति महान् शक्ति है। वर्तमान समय मेजारिटी लोग आप सबको देखकर क्या कहते हैं - इन्हों में सत्यता है, तब इतना समय वृद्धि करते हुए चल रहे हैं। सत्यता कब हिलती नहीं है, अचल होती है। सत्यता वृद्धि को प्राप्त करने की विधि है। सत्यता की शक्ति से सतयुग बनाते हो, स्वयं भी सत्य-नारायण, सत्य-लक्ष्मी बनते हो। यह सत्य ज्ञान है, सत् बाप का ज्ञान है। इसलिए दुनिया से न्यारा और प्यारा है।

तो आज बापदादा सभी बच्चों को देख रहे हैं कि सत्य ज्ञान की सत्यता की अथॉर्टी कितनी धारण की है? सत्यता हर आत्मा को आकर्षित करती है। चाहे आज की दुनिया झूठ खण्ड है, सब झूठ है अर्थात् सबमें झूठ मिला हुआ है, फिर भी सत्यता की शक्ति वाले विजयी बनते हैं। सत्यता की प्राप्ति खुशी और निर्भयता है। सत्य बोलने वाला सदा निर्भय होगा। उनको कब भय नहीं होगा। जो सत्य नहीं होगा तो उनको भय जरूर होगा। तो आप सभी सत्यता के शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियां सर्व प्राप्ति हैं। तो इतनी अथॉर्टी का नशा रहता है? अथॉर्टी का अर्थ

अभिमान नहीं है। जितना बड़े-ते-बड़ी अथॉर्टी, उतना उनकी वृत्ति में रूहानी अथॉर्टी रहती है। वाणी में स्नेह और नम्रता होगी - यही अथॉर्टी की निशानी है। जैसे आप लोग वृक्ष का दृष्टान्त देते हो। वृक्ष में जब सम्पूर्ण फल की अथॉर्टी आ जाती है तो वृक्ष झुकता है अर्थात् निर्माण बनने की सेवा करता है। ऐसे रूहानी अथॉर्टी वाले बच्चे जितनी बड़ी अथॉर्टी, उतने निर्माण और सर्व स्नेही होंगे। लेकिन सत्यता की अथॉर्टी वाले निर-अहंकारी होते हैं। तो अथॉर्टी भी हो, नशा भी हो और निर-अहंकारी भी हो - इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरुप।

जैसे इस झूठ खण्ड के अन्दर ब्रह्मा बाप सत्यता की अथॉर्टी का प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देखा ना। उनके अथॉर्टी के बोल कभी भी अहंकार की भासना नहीं देंगे। मुरली सुनते हो तो कितनी अथॉर्टी के बोल हैं! लेकिन अभिमान के नहीं। अथॉर्टी के बोल में स्नेह समाया हुआ है, निर्माणता है, निर-अहंकार है। इसलिए अथॉर्टी के बोल प्यारे लगते हैं। सिर्फ प्यारे नहीं लेकिन प्रभावशाली होते हैं। फालो फादर है ना। सेवा में वा कर्म में फालो ब्रह्मा बाप है क्योंकि साकारी दुनिया में साकार 'एक्जैम्पल' है, सैम्पल है। तो जैसे ब्रह्मा बाप को कर्म में, सेवा में, सूरत से, हर चलन से चलता-फिरता अथॉर्टी स्वरूप देखा, ऐसे फालो फादर करने वाले में भी स्नेह और अथॉर्टी, निर्माणता और महानता - दोनों साथ-साथ दिखाई दें। ऐसे नहीं सिर्फ स्नेह दिखाई दे और अथॉर्टी गुम हो जाए या अथॉर्टी दिखाई दे और स्नेह गुम हो जाए। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा वा अभी भी मुरली सुनते हो। प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बच्चे-बच्चे भी कहेगा लेकिन अथॉर्टी भी दिखायेगा। स्नेह से बच्चे भी कहेगा और अथॉर्टी से शिक्षा भी देगा। सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष भी करेंगे लेकिन बच्चे-बच्चे कहते नया ज्ञान सारा स्पष्ट कर देंगे। इसको कहते हैं स्नेह और सत्यता की अथॉर्टी का बैलेन्स (सन्तुलन) तो वर्तमान समय सेवा में इस बैलेन्स को अन्डरलाइन करो।

धरनी बनाने के लिए स्थापना से लेकर अब तक 50 वर्ष पूरे हो गये। विदेश की धरनी भी अब काफी बन गई है। भल 50 वर्ष नहीं हुए हैं, लेकिन बने

बनाये साधनों पर आये हो, इसलिए शुरू के 50 वर्ष और अब के 5 वर्ष बराबर हैं। डबल विदेशी सब कहते हैं - हम लास्ट सो फास्ट सो फर्स्ट हैं। तो समय में भी फास्ट सो फर्स्ट होंगे ना। निर्भय की अथॉर्टी जरूर रखो। एक ही बाप का नया ज्ञान सत्य ज्ञान है और नये ज्ञान से नई दुनिया स्थापन होती है - यह अथॉर्टी और नशा स्वरूप में इमर्ज (प्रत्यक्ष) हो। 50 वर्ष तो मर्ज (गुप्त) रखा। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं जो भी आवे उनको पहले से ही नये ज्ञान की नई बातें सुनाकर कनफ्यूज (मूंझा देना) कर दो। यह भाव नहीं है। धरनी, नब्ज, समय यह सब देख करके ज्ञान देना - यही नॉलेजफुल की निशानी है। आत्मा की इच्छा देखो, नब्ज देखो, धरनी बनाओ लेकिन अन्दर सत्यता के निर्भयता की शक्ति जरूर हो। लोग क्या कहेंगे - यह भय न हो। निर्भय बन धरनी भल बनाओ। कई बच्चे समझते हैं - यह ज्ञान तो नया है, कई लोग समझ ही नहीं सकेंगे। लेकिन बेसमझ को ही तो समझाना है। यह जरूर है - जैसा व्यक्ति वैसी रूपरेखा बनानी पड़ती है, लेकिन व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आ जाओ। अपने सत्य ज्ञान की अथॉर्टी से व्यक्ति को परिवर्तन करना ही है - यह लक्ष्य नहीं भूलो।

अब तक जो किया, वह ठीक था। करना ही था, आवश्यक था क्योंकि धरनी बनानी थी। लेकिन कब तक धरनी बनायेंगे? और कितना समय चाहिए? दवाई भी दी जाती है तो पहले ही ज्यादा ताकत की नहीं दी जाती, पहले हल्की दी जाती। लेकिन ताकत वाली दवाई दो ही नहीं, हल्की पर ही चलाते चलो - यह नहीं करो। किसी कमजोर को हाई पावर वाली दवाई दे दी तो यह भी रांग है। परखने की भी शक्ति चाहिए। लेकिन अपने सत्य नये ज्ञान की अथॉर्टी जरूर चाहिए। आपकी सूक्ष्म अथॉर्टी की वृत्ति ही उन्हों की वृत्तियों को चेन्ज (परिवर्तन) करेगी। यही धरनी बनेगी। और विशेष जब सेवा कर मधुबन तक पहुँचते हो तो कम-से-कम उन्हों को यह जरूर मालूम पड़ना चाहिए। इस धरनी पर उन्हों की भी धरनी बन जाती है। कितनी भी कलराठी धरनी हो, किस भी धर्म वाला हो, किस भी पोजीशन वाला हो लेकिन इस धरनी पर वह भी नर्म हो जाते हैं और नर्म धरनी बनने

के कारण उसमें जो भी बीज डालेंगे, उसका फल सहज निकलेगा। सिर्फ डरो नहीं, निर्भय जरूर बनो। युक्ति से दो, ऐसा न हो कि वह आप लोगों को यह उल्हना दें कि ऐसी धरनी पर भी मैं पहुँचा लेकिन यह मालूम नहीं पड़ा कि परमात्म-ज्ञान क्या है? परमात्म-भूमि पर आकर परम-आत्मा की प्रत्यक्षता का सन्देश जरूर ले जाएं। लक्ष्य अथॉर्टी का होना चाहिए।

आजकल के जमाने के हिसाब से भी नवीनता का महत्व है। फिर भल कोई उल्टा भी नया फैशन निकालते हैं, तो भी फालो करते हैं। पहले आर्ट (चित्रकला) देखो कितना बढ़िया था! आजकल का आर्ट तो उनके आगे जैसे लकीरें लगेंगी। लेकिन मॉडर्न आर्ट पसन्द करते हैं। मानव की पसन्दी हर बात में नवीनता है और नवीनता स्वत: ही अपने तरफ आकर्षित करती है। इसलिए नवीनता, सत्यता, महानता - इसका नशा जरूर रखो। फिर समय और व्यक्ति देख सेवा करो। यह लक्ष्य जरूर रखो कि नई दुनिया का नया ज्ञान प्रत्यक्ष जरूर करना है। अभी स्नेह और शान्ति प्रत्यक्ष हुई है। बाप का प्यार के सागर का स्वरूप, शान्ति के सागर का स्वरूप प्रत्यक्ष किया है लेकिन ज्ञान स्वरूप आत्मा और ज्ञानसागर बाप है, इस नये ज्ञान को किस ढंग से देवें, उसके प्लैन्स अभी कम बनाये हैं। वह भी समय आयेगा जो सभी के मुख से यह आवाज निकलेगा कि नई दुनिया का नया ज्ञान यह है। अभी सिर्फ अच्छा कहते हैं, नया नहीं कहते। याद की सब्जेक्ट (विषय) को अच्छा प्रत्यक्ष किया है, इसलिए धरनी अच्छी बन गई है और धरनी बनाना - पहला आवश्यक कार्य भी जरूरी है। जो किया है, वह बहुत अच्छा और बहुत किया है, तन-मन-धन लगाकर किया है। इसके लिए आफरीन भी देते हैं।

पहले जब विदेश में गये थे तो यही त्रिमूर्ति के चित्र पर समझाना कितना मुश्किल समझते थे! अभी त्रिमूर्ति के चित्र पर ही आकर्षित होते हैं। यह सीढ़ी का चित्र भारत की कहानी समझते थे। लेकिन विदेश में इस चित्र पर आकर्षित होते। तो जैसे वह प्लैन बनाये कि यह नई बात किस ढंग से सुनावें, तो अब भी इन्वेन्शन

(आविष्कार) करो। यह नहीं सोचो कि यह तो करना ही पड़ेगा। नहीं। बापदादा का लक्ष्य सिर्फ यह है कि नवीनता के महानता की शक्ति धारण करो, इसको भूलो नहीं। दुनिया को समझाना है, दुनिया की बातों से घबराओ नहीं। अपना तरीका इन्वेन्ट करो क्योंकि इन्वेन्टर (आविष्कर्ता) आप बच्चे ही हो ना। सेवा के प्लैन (योजना) बच्चे ही जानते हैं। जैसा लक्ष्य रखेंगे, वैसा प्लैन बहुत अच्छे-से-अच्छा बन जायेगा और सफलता तो जन्म-सिद्ध-अधिकार है ही है। इसलिए नवीनता को प्रत्यक्ष करो। जो भी ज्ञान की गुह्य बातें हैं, उसको स्पष्ट करने की विधि आपके पास बहुत अच्छी है और स्पष्टीकरण है। एक-एक प्वाइंट को लॉजिकल (तर्कशास्त्र के अनुसार) स्पष्ट कर सकते हो। अपनी अथॉर्टी (शक्ति, प्रभुत्व) वाले हो। कोई मनोमय वा कल्पना की बातें तो हैं नहीं। यथार्थ हैं। अनुभव है। अनुभव की अथॉर्टी, नॉलेज की अथॉर्टी, सत्यता की अथॉर्टी... कितनी अथॉर्टीज़ हैं! तो अथॉर्टी और स्नेह - दोनों को साथ-साथ कार्य में लगाओ।

बापदादा खुश हैं कि मेहनत से सेवा करते-करते इतनी वृद्धि को प्राप्त किया है और करते ही रहेंगे। चाहे देश है, चाहे विदेश है। देश में भी व्यक्ति और नब्ज देख सेवा करने में सफलता है। विदेश में भी इसी विधि से सफलता है। पहले सम्पर्क में लाते हो - यह धरनी बनती है। सम्पर्क के बाद फिर सम्बन्ध में लाओ, सिर्फ सम्पर्क तक छोड़ नहीं दो। सम्बन्ध में लाकर फिर उन्हों को बुद्धि से समर्पित कराओ - यह है लास्ट स्टेज। सम्पर्क में लाना भी आवश्यक है, फिर सम्बन्ध में लाना है। सम्बन्ध में आते-आते समर्पण बुद्धि हो जाए कि 'जो बाप ने कहा, वही सत्य है'। फिर क्वेश्चन (प्रश्न) नहीं उठते। जो बाबा कहता, वही सही है। क्योंकि अनुभव हो जाता तो फिर क्वेश्चन समाप्त हो जाता। इसको कहते समर्पण बुद्धि जिसमें सब स्पष्ट अनुभव होता। लक्ष्य यह रखो कि समर्पण बुद्धि तक लाना अवश्य है। तब कहेंगे माइक तैयार हुए हैं। माइक क्या आवाज करेगा? सिर्फ अच्छा ज्ञान है इन्हों का, नहीं। यह नया ज्ञान है, यही नई दुनिया लायेगा - यह आवाज हो, तब तो कुम्भकरण जगेंगे ना। नहीं तो सिर्फ आंख खोलते हैं - बहुत अच्छा, बहुत

अच्छा कह फिर नींद आ जाती है। इसलिए जैसे स्वयं बालक सो मालिक बन गये ना, ऐसे बनाओ। बेचारों को सिर्फ साधारण प्रजा तक नहीं लाओ, लेकिन राज्य अधिकारी बनाओ। उसके लिए प्लैन बनाओ - किस विधि से करो जो कनफ्यूज भी न हों और समर्पण बुद्धि भी हो जाएं। नवीनता भी लगे, उलझन भी अनुभव नहीं करें। स्नेह और नवीनता की अथॉर्टी लगे।

अब तक जो रिजल्ट रही, सेवा की विधि, ब्राह्मणों की वृद्धि रही, वह बहुत अच्छा है। क्योंकि पहले बीज को गुप्त रखा, वह भी आवश्यक है। बीज को गुप्त रखना होता है, बाहर रखने से फल नहीं देता। धरनी के अन्दर बीज को रखना होता है लेकिन अन्दर धरनी में ही न रह जाए। बाहर प्रत्यक्ष हो, फल स्वरूप बनें - यह आगे की स्टेज है। समझा? लक्ष्य रखो - नया करना है। ऐसे नहीं कि इस वर्ष ही हो जायेगा। लेकिन लक्ष्य बीज को भी बाहर प्रत्यक्ष करेगा। ऐसे भी नहीं सीधा जाकर भाषण करना शुरू कर दो। पहले सत्यता के शक्ति की भासना दिलाने के भाषण करने पड़ेंगे। 'आखिर वह दिन आये' - यह सबके मुख से निकले। जैसे ड्रामा में दिखाते हो ना, सब धर्म वाले मिलकर कहते हैं - हम एक हैं, एक के हैं। वह ड्रामा दिखाते हो, यह प्रैक्टिकल में स्टेज पर सब धर्म वाले मिलकर एक ही आवाज में बोलें। एक बाप है, एक ही ज्ञान है, एक ही लक्ष्य है, एक ही घर है, यही है - अब यह आवाज चाहिए। ऐसा दृश्य जब बेहद की स्टेज पर आये, तब प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा और इस झण्डे के नीचे सब यही गीत गायेंगे। सबके मुख से एक शब्द निकलेगा - 'बाबा हमारा' तब कहेंगे प्रत्यक्ष रूप में शिवरात्रि मनाई। अंधकार खत्म हो गोल्डन मार्निंग (सुनहरी प्रात:) के नज़ारे दिखाई देंगे। इसको कहते हैं आज और कल का खेल। आज अंधकार, कल गोल्डन मार्निंग। यह है लास्ट पर्दा।

(20.03.1987)

स्व-परिवर्तन में भी जब तक महसूसता की शक्ति नहीं, तब तक सदाकाल का श्रेष्ठ परिवर्तन नहीं हो सकता है। इसमें विशेष दो बातों की महसूसता चाहिए। **एक** - अपनी कमज़ोरी की महसूसता। **दूसरी** - जो परिस्थिति वा व्यक्ति निमित्त बनते हैं, उनकी इच्छा और उनके मन की भावना वा व्यक्ति की कमजोरी या परवश के स्थिति की महसूसता। परिस्थिति के पेपर के कारण को जान स्वयं को पास होने के श्रेष्ठ स्वरूप की महसूसता में हो कि मैं श्रेष्ठ हूँ, स्वस्थिति श्रेष्ठ है, परिस्थिति पेपर है। यह महसूसता सहज परिवर्तन करा लेगी और पास कर लेंगे। दूसरे की इच्छा वा दूसरे के स्व-उन्नति की भी महसूसता अपने स्व-उन्नति का आधार है। तो स्व-परिवर्तन - महसूसता की शक्ति बिना नहीं हो सकता। इसमें भी एक हैं - सच्चे दिल की महसूसता, दूसरी - चतुराई की महसूसता भी है। क्योंकि नॉलेजफुल बहुत बन गये हैं। तो समय देख अपने को सिद्ध करने के लिए, अपना नाम अच्छा करने के लिए उस समय महसूस भी कर लेंगे लेकिन उस महसूसता में शक्ति नहीं होती जो परिवर्तन कर लेंवे। तो दिल की महसूसता दिलाराम की आशीर्वाद प्राप्त कराती है और चतुराई वाली महसूसता थोड़े समय के लिए दूसरे को भी खुश कर लेते, अपने को भी खुश कर देते।

तीसरे प्रकार की महसूसता - मन मानता है कि यह ठीक नहीं है, विवेक आवाज देता है कि यह यथार्थ नहीं है लेकन बाहर के रूप से अपने को महारथी सिद्ध करने के लिए, अपने नाम को किसी भी प्रकार से परिवार के बीच कमजोर या कम न करने के कारण विवेक का खून करते रहते हैं। यह विवेक का खून करना भी पाप है। जैसे आपघात महापाप है, वैसे यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिए बापदादा मुस्कराते रहते हैं और उनमे मन के डॉयलाग भी सुनते रहते हैं। बहुत सुन्दर डॉयलाग होते हैं। मूल बात - ऐसी महसूसता वाले यह समझते हैं कि किसको क्या पता पड़ता है, ऐसे ही चलता है... लेकिन बाप को पता हर पत्ते का है। सिर्फ मुख से सुनने से पता नहीं पड़ता, लेकिन पता होते भी बाप अन्जान बन भोलेपन में भोलापन के रूप से बच्चों को चलाते हैं। जबकि जानते हैं, फिर

भोला क्यों बनते? क्योंकि रहमदिल बाप है, पाप में पाप बढ़ाने का रहम करता है। समझा? ऐसे बच्चे चतुरसुजान बाप से भी अथवा निमित्त आत्माओं से भी बहुत चतुर बन सामने आते हैं। इसलिए बाप रहमदिल, भोलानाथ बन जाते हैं।

बापदादा के पास हर बच्चे के कर्म का, मन के संकल्पों का खाता हर समय का स्पष्ट रहता है। दिलों को जानने की आवश्यकता नहीं है लेकिन हर बच्चे के दिल की हर धड़कन का चित्र स्पष्ट ही है। इसलिए कहते हैं कि मैं हर एक के दिल को नहीं जानता क्योंकि जानने की आवश्यकता ही नहीं, स्पष्ट है ही। हर घड़ी के दिल की धड़कन वा मन के संकल्प का चार्ट बापदादा के सामने है। बता भी सकते हैं, ऐसे नहीं कि नहीं बता सकते हैं। तिथि, स्थान, समय और क्या-क्या किया - सब बता सकते हैं। लेकिन जानते हुए भी अन्जान रहते हैं। तो आज सारा चार्ट देखा।

स्व-परिवर्तन तीव्रगति से न होने के कारण -'सच्ची दिल के महसूसता' की कमी है। महसूसता की शक्ति बहुत मीठे अनुभव करा सकती है। यह तो समझते हो ना। कभी अपने को बाप के नूरे रतन आत्मा अर्थात् नयनों में समाई हुई श्रेष्ठ बिन्दु महसूस करो। नयनों में तो बिन्दु ही समा सकता है, शरीर तो नहीं समा सकेगा। कभी अपने को मस्तक पर चमकने वाली मस्तक-मणि,चमकता हुआ सितारा महसूस करो, कभी अपने को ब्रह्मा बाप के सहयोगी, राइट हैण्ड साकार ब्राह्मण रूप में ब्रह्मा की भुजायें अनुभव करो, महसूस करो। कभी अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप महसूस करो। ऐसे महसूसता शक्ति से बहुत अनोखे, अलौकिक अनुभव करो। सिर्फ नॉलेज की रीति वर्णन नही करो, महसूस करो। इस महसूसता-शक्ति को बढ़ाओ तो दूसरे तरफ की कमजोरी की महसूसता स्वत: ही स्पष्ट होगी। शक्तिशाली दर्पण के बीच छोटा-सा दाग भी स्पष्ट दिखाई देगा और परिवर्तन कर लेंगे। तो समझा, स्व परिवर्तन का आधार महसूसता शक्ति है। शक्ति को कार्य में लगाओ, सिर्फ गिनती करके खुश न हो - हाँ, यह भी शक्ति है, यह भी शक्ति है। लेकिन स्व प्रति, सर्व प्रति, सेवा प्रति सदा हर कार्य में लगाओ। समझा? कई बच्चे

कहते कि बाप यही काम करते रहते हैं क्या? लेकिन बाप क्या करे, साथ तो ले ही जाना है। जब साथ ले जाना है तो साथी भी ऐसे ही चाहिए ना। इसलिए देखते रहते हैं और समाचार सुनाते रहते कि साथी समान बन जाएं। पीछे-पीछे आने वालों की तो बात ही नहीं है, वह तो ढेर होंगे। लेकिन साथी तो समान चाहिए ना। आप साथी हो या बाराती हो? बारात तो बहुत बड़ी होगी, इसलिए शिव की बारात मशहूर है। बारात तो वैराइटी होगी लेकिन साथी तो ऐसे चाहिए ना।

(02.11.1987)

आज स्नेह के सागर बापदादा अपने स्नेही बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। यह रूहानी स्नेह, परमात्म-स्नेह नि:स्वार्थ सच्चा स्नेह है। सच्चे दिल का स्नेह आप सर्व आत्माओं को सारा कल्प स्नेही बना देता है। क्योंकि परमात्म-स्नेह, आत्मिक स्नेह, अविनाशी स्नेह-यह रूहानी स्नेह ब्राह्मण जीवन की फाउन्डेशन है। रूहानी स्नेह का अनुभव नहीं तो ब्राह्मण जीवन का सच्चा आनन्द नहीं। परमात्म-स्नेह कैसी भी पतित आत्मा को परिवर्तन करने का चुम्बक है, परितर्वन होने का सहज साधन है। स्नेह अधिकारी बनाने का, रूहानी नशे का अनुभव कराने का आधार है। स्नेह है तो रमणीक ब्राह्मण जीवन है। स्नेह नहीं तो ब्राह्मण जीवन सूखी (नीरस) है, मेहनत वाली है। परमात्म-स्नेह दिल का स्नेह है। लौकिक स्नेह दिल का टुकड़ा-टुकड़ा कर देता है क्योंकि बंट जाता है। अनेकों से स्नेह निभाना पड़ता है। अलौकिक स्नेह दिल के अनेक टुकड़ों को जोड़ने वाला है। एक बाप से स्नेह किया तो सर्व के सहयोगी स्वत: बन जाते। क्योंकि बाप बीज है। तो बीज को पानी देने से हर पत्ते को पानी स्वत: मिल जाता है, पत्ते-पत्ते को पानी देने की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे रूहानी बाप से स्नेह जोड़ना अर्थात् सर्व के स्नेही बनना। इसलिए दिल के टुकड़े-टुकड़े नहीं होते हैं। स्नेह हर कार्य को सहज बना देता है अर्थात् मेहनत से छुड़ा देता है। जहाँ स्नेह होता है वहाँ याद स्वत:, सहज आती ही है। स्नेही को भुलाना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता।

चाहे ज्ञान अर्थात् समझ कितनी भी बुद्धि में हो लेकिन यथार्थ ज्ञान अर्थात् स्नेह सम्पन्न ज्ञान हो। अगर ज्ञान है और स्नेह नहीं है तो वह रूखा ज्ञान है। स्नेह सर्व सम्बन्धों का दिल से अनुभव कराता है। सिर्फ ज्ञानी जो हैं वह दिमाग से याद करते हैं और स्नेही दिल से याद करते हैं। दिमाग से याद करने वालों को याद में, सेवा में, धारणा में मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाते हैं और वह मुहब्बत का फल खाते हैं। जहाँ स्नेह नहीं, दिमागी ज्ञान है, तो ज्ञान की बातों में भी क्यों, क्या, कैसे...दिमाग लड़ता रहेगा और लड़ाई लगती रहेगी अपने आप से। व्यर्थ संकल्प ज्यादा चलेंगे। जहाँ क्यों-क्यों होगी, वहाँ क्यों की क्यू होगी। और जहाँ स्नेह है वहाँ युद्ध नहीं लेकिन लवलीन है, समाया हुआ है। जिससे दिल का स्नेह होता है तो स्नेह की बात में क्यों, क्या ...नहीं उठता है। जैसे परवाना शमा के स्नेह में क्यों, क्या नहीं करता, न्योछावर हो जाता है। परमात्म-स्नेही आत्मायें स्नेह में समाई हुई रहती हैं।

(06.01.1988)

हर एक बच्चा अपनी शक्ति से भी ज्यादा सेवा में आगे बढ़ रहा है और बढ़ता ही रहेगा। बाकी जो सच्ची दिल से दिल का समाचार बाप के आगे रखते हैं, तो सच्ची दिल पर बाप सदा राजी है। इसलिए दिल के समाचार में जो भी कोई छोटी-छोटी बातें आती भी हैं तो वह बाप की विशेष याद के वरदान से समाप्त हो ही जायेंगी। बाप का राज़ी होना अर्थात् सहज बाप की मदद से मायाजीत बनना। इसलिए जो बाप को दे दिया, चाहे समाचार के रूप में, पत्र के रूप में, रुह-रूहान के रूप में - जब बाप के आगे रख लिया, दे दिया तो जो चीज किसको दी जाती है वह अपनी नहीं रहती, वह दूसरे की हो जाती है। अगर कमजोरी का संकल्प भी बाप के आगे रख लया तो वह कमजोरी आपकी नहीं रहीं। आपने दे दी, उससे मुक्त हो गये। इसलिए, यही याद रखना कि मैंने बाप के आगे रख ली अर्थात् दे दी।

(16.02.1988)

समय, शक्ति - दोनों के प्रमाण सेवा करते चलो। सेवा कभी रह नहीं सकती, आज नहीं तो कल होनी ही है। अगर सच्चे दिल से, दिल के स्नेह से जितनी सेवा कर सकते हो उतनी करते हो तो बापदादा कभी उल्हना नहीं देंगे कि इतना काम किया, इतना नहीं किया। शाबास मिलेगी। समय प्रमाण, शक्ति प्रमाण सच्ची दिल से सेवा करते हो तो सच्चे दिल पर साहेब राजी हैं। जो आपका कार्य रह भी जायेगा तो बाप कहाँ न कहाँ से पूरा करायेगा। जो सेवा जिस समय में होनी ही है वह होकर ही रहेगी, रह नहीं सकती। किसी-न-किसी आत्मा को टच कर बापदादा अपने बच्चों के सहयोगी बनायेंगे। योगी बच्चों को सब प्रकार का सहयोग समय पर मिलता ही है। लेकिन किसको मिलेगा? सच्चे दिल वाले सच्चे सेवाधारी को। तो सभी सच्चे सेवाधारी बच्चे हो? साहेब राजी है हमारे ऊपर - ऐसा अनुभव करते हो ना।

(20.02.1988)

सच्चे दिल पर साहेब राज़ी सच्चे दिल पर साहेब राज़ी

आज विश्व की सर्व आत्माओं के उपकारी बापदादा अपने श्रेष्ठ पर-उपकारी बच्चों को देख रहे हैं। वर्तमान समय अनेक आत्मायें उपकार के लिए इच्छुक हैं। स्व-उपकार करने की इच्छा है लेकिन हिम्मत और शक्ति नहीं है। ऐसी निर्बल आत्माओं का उपकार करने वाले आप पर-उपकारी बच्चे निमित्त हो। आप पर-उपकारी बच्चों को आत्माओं की पुकार सुनाई देती है वा स्व-उपकार में ही बिजी हो? विश्व के राज्य अधिकारी सिर्फ स्व-उपकारी नहीं बनते। पर-उपकारी आत्मा ही राज्य-अधिकारी बन सकती है। उपकार सच्चे दिल से होता है। ज्ञान सुनाना यह (सिवाए दिल के) मुख से भी हो सकता है। ज्ञान सुनाना-यह विशाल दिमाग की बात है वा वर्णन के अभ्यास की बात है। तो दिल और दिमाग - दोनों में अन्तर है। कोई भी किसी से स्नेह चाहते हैं तो वह दिल का स्नेह चाहते हैं।

बापदादा का टाइटल दिलवाला है - दिलाराम है। दिमाग दिल से स्थूल है, दिल सूक्ष्म है। बोलचाल में भी सदैव यह कहते हो कि सच्ची दिल से कहते हैं - सच्ची दिल से बाप को याद करो। यह नहीं कहते कि सच्चे दिमाग से याद करो। कहा भी जाता है-सच्चे दिल पर साहेब राज़ी। विशाल दिमाग पर राज़ी नहीं कहा जाता है। विशाल दिमाग - यह विशेषता ज़रूर है, इस विशेषता से ज्ञान की प्वाइंटस को अच्छी तरह धारण कर सकते हैं। लेकिन दिल से याद करने वाले प्वाइंट अर्थात् बिन्दु रूप बन सकते हैं। वह प्वाइंट रिपीट कर सकते हैं लेकिन प्वाइंट (बिन्दु) रूप बनने में सेकण्ड नम्बर होंगे, कभी सहज कभी मेहनत से बिन्दु रूप में स्थित हो सकेंगे। लेकिन सच्ची दिल वाले सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआओं की प्राप्ति के कारण स्थूल रूप में चाहे दिमाग कइयों के अन्तर में इतना विशाल न भी हो लेकिन सच्चाई की शक्ति से समय प्रमाण उनका दिमाग युक्तियुक्त, यथार्थ कार्य स्वत: ही करेगा। क्योंकि जो यथार्थ कर्म, बोल वा संकल्प हैं वह दुआओं के कारण ड्रामा अनुसार समय प्रमाण वही टचिंग उनके दिमाग में आयेगी। क्योंकि बुद्धिवानों की बुद्धि (बाप) को राज़ी किया हुआ है। जिसने भगवान को राज़ी किया वह स्वत: ही राजयुक्त, युक्तियुक्त होता है।

तो यह चेक करो कि मैं विशाल दिमाग के कारण याद और सेवा में आगे बढ़ रहा हूँ वा सच्ची दिल और यथार्थ दिमाग से आगे बढ़ रहा हूँ? पहले भी सुनाया था कि दिमाग से सेवा करने वाले का तीर औरों के भी दिमाग तक लगता है। दिल वालों का तीर दिल तक लगता है। जैसे स्थापना की, सेवा की आदि में देखा - पहला पूर (ग्रुप) सेवा का, उन्हों की विशेषता क्या रही? कोई भाषा वा भाषण की विशेषता नहीं थी। जैसे आजकल बहुत अच्छे भाषण करते हो, कहानियाँ और किस्से भी बहुत अच्छे सुनाते हो। ऐसे पहले पूर वालों की भाषा नहीं थी लेकिन क्या था? सच्चे दिल का आवाज था। इसलिए दिल का आवाज अनेकों को दिलाराम का बनाने में निमित्त बना। भाषा गुलाबी (मिक्सचर) थी। लेकिन नयनों

की भाषा रूहानी थी। इसलिए भाषा भल कैसी भी थी लेकिन कांटों से गुलाब तो बन ही गये। वह पहले पूर के सेवा की सफलता और वर्तमान समय की वृद्धि - दोनों को चेक करो तो अन्तर दिखाई देता है ना। बात मैजारिटी की होती है। दूसरे-तीसरे पूर में भी कोई-कोई दिल वाले हैं लेकिन मैनारिटी हैं। आदि की पहेली अब तक चल रही है। कौन-सी पहेली? मैं कौन? अभी भी बापदादा कहते - अपने आपसे पूछो मैं कौन? पहेली हल करना आता है ना वा दूसरा बतावे तब हल कर सकते हो - दूसरा बतायेगा तो भी उसकी बात को चलाने की कोशिश करेंगे कि ऐसे नहीं है, वैसे है...। इसलिए अपने आपको ही देखो।

कई बच्चे अपने आपको चेक करते हैं लेकिन देखने की नज़र दो प्रकार की है। उसमें भी कोई सिर्फ विशाल दिमाग की नज़र से चेक करते हैं, उनका अलबेलेपन का चश्मा होता है। हर बात में यही दिखाई देगा कि जितना भी किया - त्याग किया, सेवा की, परिवर्तन किया - इतना ही बहुत है। इन-इन आत्माओं से मैं बहुत अच्छी हूँ। इतना करना भी कोई सहज नहीं है। थोड़ी-बहुत कमी तो नामीग्रामियों में भी है। इस हिसाब से मैं ठीक हूँ। यह है अलबेलाई का चश्मा। दूसरा है स्व-उन्नति का यथार्थ चश्मा। वह है सच्ची दिल वालों का। वह क्या देखते हैं? जो दिलवाला बाप को सदा पसन्द है वही संकल्प, बोल और कर्म करना है। यथार्थ चश्मे वाले सिर्फ बाप और आप को देखते हैं। दूसरा वा तीसरा क्या करता - वह नहीं देखते। मुझे ही बदलना है इसी धुन में सदा रहते हैं। ऐसे नहीं - दूसरा भी बदले तो मैं बदलूँ। या 80 परसेन्ट मैं बदलूं 20 परसेन्ट तो वह बदले - इतने तक भी वह नहीं देखेंगे। मुझे बदलकर के औरों को सहज करने के लिए एक्जैम्पुल बनना है। इसलिए कहावत है 'जो ओटे सो अर्जुन'। अर्जुन अर्थात् अलौकिक जन। इसको कहा जाता है यथार्थ चश्मा वा यथार्थ दृष्टि। वैसे भी दुनिया में मानव जीवन के लिए मुख्य दो बातें हैं - दिल और दिमाग। दोनों ठीक होने चाहिए। ऐसे ब्राह्मण जीवन में भी विशाल दिमाग भी चाहिए और सच्ची दिल भी चाहिए। सच्ची दिल वाले को दिमाग की लिफ़्ट मिल जाती है। इसलिए सदा यह

चेक करो कि सच्ची दिल से साहेब को राज़ी किया है, सिर्फ अपने मन को या सिर्फ कुछ आत्माओं को तो राज़ी नहीं किया! सच्चे साहेब का राज़ी होना - इनकी बहुत निशानियाँ हैं। इस पर मनन कर रूह-रूहान करना। फिर बापदादा सुनायेंगे।

(15.11.1989)

धन का भाग्य - ज्ञान धन तो है ही लेकिन स्थूल धन का भी महत्त्व है। धन के भाग्य का अर्थ यह नहीं कि ब्राह्मण जीवन में लाखों-पति वा करोड़पति बनेंगे। लेकिन धन के भाग्य की निशानी है कि संगमयुग पर जितना आप ब्राह्मण आत्माओं को खाने-पीने और आराम से रहने के लिए आवश्यकता है, उतना आराम से मिलेगा। और साथ-साथ धन चाहिए सेवा के लिए। तो सेवा के लिए भी कभी समय पर कमी वा खींचातान अनुभव नहीं करेंगे। कैसे भी, कहाँ से भी सेवा के समय पर भाग्यविधाता बाप किसको निमित्त बना ही देते हैं। धन के भाग्यवान कभी भी अपने 'नाम' की वा 'शान' की इच्छा के कारण सेवा नहीं करेंगे। अगर 'नाम-शान' की इच्छा है तो ऐसे समय पर भाग्यविधाता सहयोग नहीं दिलायेगा।

'आवश्यकता' और 'इच्छा' में रात-दिन का अन्तर है। सच्ची आवश्यकता है और सच्चा मन है तो कोई भी सेवा के कार्य में, कार्य तो सफ़ल होगा ही लेकिन भण्डारी में और ही भरपूर हो जायेगा, बचेगा। इसलिए गायन है - 'शिव के भण्डारे और भण्डारी सदा भरपूर'। तो सच्ची दिल वालों की और सच्चे साहेब के राज़ी होने की निशानी है - 'भण्डारा भी भरपूर, भण्डारी भी भरपूर'। यह है धन के भाग्य की निशानी। विस्तार तो बहुत है लेकिन सार में सुना रहे हैं।

(19.11.1989)

स्व-पुरुषार्थ के समाचार देने वालों को बापदादा यही वरदान दे रहे हैं कि जैसे सच्ची दिल से बाप को राज़ी करते रहते हो, ऐसे सदा स्वयं को भी स्वयं के संस्कारों से, संगठन से राज़युक्त अर्थात् राज़ी रहो। एक-दो के संस्कारों के राज़

को भी जानना, परिस्थितियों को जानना - यही राज़युक्त स्थिति है। सच्चे दिल से अपना पोतामेल देना और स्नेह की रूह-रूहान के पत्र लिखना अर्थात् पिछला समाप्त करना और स्नेह की रूह-रूहान सदा समीपता का अनुभव कराती रहेगी।

(27.11.1989)

सदा अपने को बाप के सिकीलधे समझते हो? सिकीलधे अर्थात् बड़े सिक से बाप ने हमें ढूँढ़ा है। बाप ने बड़े सिक व प्रेम से आपको ढूँढ़ा है। आपने ढूँढ़ा लेकिन मिला नहीं। परिचय ही नहीं था तो मिले कैसे? लेकिन बाप ने आपको ढूँढ़ा इसलिए कहते हैं - 'सिकीलधे'। तो जिसको बाप ढूँढ़े वह कितने भाग्यवान होंगे! दुनिया वाले बाप को ढूँढ़ रहे हैं और आप मिलन मना रहे हो। कितने थोड़े हो, बहुतों का पार्ट है ही नहीं। थोड़ों का पार्ट है, इसलिए गाया हुआ है - कोटों में कोई। अक्षोणी सेना नहीं गाई हुई है, कोटों में कोई गाया हुआ है। तो यह खुशी वा स्मृति सदा इमर्ज रहे। हर कदम में खुशी अनुभव हो। अल्पकाल की प्राप्ति वालों के चेहरे पर वह प्राप्ति की रेखा चमकती है। आपको तो सदाकाल की प्राप्ति है। तो चेहरा सदा खुशी में दिखाई दे, उदास न हो। जो माया का दास बनता है वह उदास होता है। आप कौन हो? माया के दास हो या मालिक हो? माया को अपनी अथार्टी से भगाने वाले हो, ऐसी आत्मा कभी उदास नहीं हो सकती। कोई फिक्र ही नहीं है ना। कोई फिक्र या चिंता होती है तो उदास होते हैं। आपको कौन-सी चिंता है? पांडवों को चिंता है? कमाने की, परिवार को पालने के लिए पैसे की चिंता है? लेकिन चिंता से पैसा कभी नहीं आयेगा। मेहनत करो, कमाई करो। लेकिन चिंता से कभी कमाई में सफल नहीं होंगे। चिंता को छोड़कर कर्मयोगी बनकर काम करो, तो जहाँ योग है वहाँ कार्य कुशल होगा और सफलता होगी। चिंता से कभी पैसा नहीं आयेगा। अगर चिंता से कमाया हुआ पैसा आयेगा भी तो चिंता ही पैदा करेगा। जैसा बीज होगा वैसा ही फल निकलेगा और खुशी-खुशी से काम करके कमाई करेंगे तो वह पैसा भी खुशी दिलायेगा। वह दो रुपया भी दो हज़ार का काम

करेगा और वह दो लाख दो रुपये का काम करेगा। इतना फर्क हैं, इसलिए चिंता क्या करेंगे! सच्ची दिल वालों को सच की कमाई मिलती है। बाप भी दाल-रोटी ज़रूर देते हैं। सुस्त रहने वाले को नहीं देंगे। काम तो करना ही पड़ेगा क्योंकि पिछले हिसाब भी तो चुक्तू करने हैं। लेकिन चिंता से नहीं, खुशी से। कोई भी काम करो - योगयुक्त होकर करो। योगी का कार्य सहज और सफल होता है, ऐसा अनुभव है ना! याद में कोई भी काम करते तो थकावट नहीं होती। खुशी-खुशी से करते तो थकते नहीं। मज़बूर होकर करते तो थक जाते हैं। बाप ने डायरेक्शन दिया है - योग से हिसाब-किताब चुक्तू करो। तो बाप के डायरेक्शन पर खुशी-खुशी से वह काम भी करो, मज़बूरी से नहीं। यह तो मालूम है कि वह बंधन है लेकिन घड़ी-घड़ी कहने से और भी बड़ा कड़ा बंधन हो जायेगा। मातायें बहुत करके कहती हैं - कब तक हमारा बंधन रहेगा? यह भी क्या बंधन बन गया? यह तो मालूम है कि यह बंधन है लेकिन अब यह सोचो कि योग से बंधनमुक्त कैसे बनें - यह भी ज्यादा नहीं सोचो। सोचने से कुछ नहीं होता है, करने से होता है। सोचते-सोचते मानो उसी समय अंतिम घड़ी आ जाए तो क्या होगा? बंधन है, बंधन है यही सोचते जायेंगे तो कहां जायेंगे? पिंजड़े में ही जायेंगे! अंत में अगर बंधन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवांस-पार्टी में सेवा के लिए जायेंगे, इसलिए कभी भी अपने से तंग नहीं हो। खुश रहो। क्या करें, कैसे करें .... यह गीत नहीं गाओ। खुशी के गीत गाओ।

(05.12.1989)

सदा अपने को संगमयुगी बेपरवाह बादशाह हूँ - ऐसे समझते हो? पुरानी दुनिया की कोई परवाह नहीं। सदा दिल में ब्रह्मा बाबा समान क्या गीत गाते हो? परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले की, वह तो पा लिया, अभी क्या परवाह! तो बेपरवाह बादशाह हो, गुलाम नहीं। इस बादशाही जैसी और कोई बादशाही नहीं। क्योंकि यह बादशाही डायरेक्ट बाप ने दी है। और जो भी बादशाही मिलती है वह

या तो धन दान करने से मिलती है या आजकल के वोटों से मिलती है और आपको स्वयं बाप ने राजतिलक दे दिया। इस राजतिलक के आगे सतयुग का राजतिलक भी कोई बड़ी बात नहीं। तो यह राजतिलक पक्का लगा हुआ है या मिट जाता है? अभी-अभी राजा और अभी-अभी गुलाम - ऐसा खेल तो नहीं करते हो? बेपरवाह बादशाह - यह कितनी अच्छी स्थिति है! जब सब-कुछ बाप के हवाले कर दिया तो परवाह किसको होगी - बाप को या आपको? बाप जाने। जब अपने जीवन की ज़िम्मेवारी बाप के हवाले की है तो बाप जाने। ऐसे तो नहीं - थोड़ा-थोड़ा कहीं अपनी अथॉर्टी को छिपाकर रखा हो, मनमत को छिपाकर रखा हो। अगर श्रीमत पर हैं तो बाप के हवाले हैं। सच्ची दिल से बाप के हवाले सब-कुछ कर दिया तो उसकी निशानी सदा डबल लाईट होंगे, कोई बोझ नहीं होगा। अगर किसी भी प्रकार का बोझ है तो इससे सिद्ध है कि बाप के हवाले नहीं किया। जब बाप ऑफ़र करता है कि सब बोझ मेरे को दे दो और तुम हल्के हो जाओ, तो क्या करना चाहिए? ऐसा सर्वेन्ट फिर नहीं मिलेगा। अनेक जन्म बोझ रखकर देख लिया, बोझ से क्या हुआ? नीचे ही होते गये। अब डबल लाइट बन उड़ते रहो। तन-मन-धन सब ट्रांस्फर कर दो। कोई कहते हैं - और कोई बोझ नहीं है लेकिन थोड़ा-थोड़ा सम्बन्ध का बोझ है। तो सर्व सम्बन्ध बाप से नहीं जोड़ा है तब बोझ है। वायदा है सर्व सम्बन्ध एक बाप से। तो कोई बोझ नहीं। आराम से दाल-रोटी खाओ और उड़ती कला में उड़ो। कहाँ भी रहते बाप को भोग लगा कर खाते हो तो ब्रह्मा भोजन खाते हो। ब्रह्मा भोजन खाओ, खूब नाचो और मौज़ मनाओ। अभी मौज़ में नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे!

(05.12.1989)

आज ज्ञान-सागर बाप 'होलीहंसों' का संगठन देख रहे हैं। होलीहंस अर्थात् स्वच्छता और विशेषता वाली आत्माएं। स्वच्छता अर्थात मन-वचन-कर्म, सम्बंध सर्व में पवित्रता। पवित्रता की निशानी सदा ही सफेद रंग दिखाते हैं। आप

होलीहंस भी सफेद वस्त्रधारी, साफ दिल अर्थात् स्वच्छता-स्वरुप हो। तन-मन और दिल से सदा बेदाग अर्थात् स्वच्छ हो। अगर कोई तन से अर्थात् बाहर से कितना भी स्वच्छ हो, साफ हो लेकिन मन से साफ न हो, स्वच्छ न हो तो कहते हैं कि पहले मन को साफ रखो! साफ मन वा साफ दिल पर साहेब राजी होता है। साथ-साथ साफ दिल वाले की सर्व मुराद अर्थात् कामनायें पूरी होती हैं। हंस की विशेषता स्वच्छता अर्थात् साफ हैं, इसलिए आप ब्राह्मण आत्माओं को 'होलीहंस' कहा जाता है। चेक करो कि मुझ होलीहंस आत्मा की चारों ही बातों में अर्थात् तन-मन-दिल और सम्बन्ध में स्वच्छता है? संपूर्ण स्वच्छता वा पवित्रता यही - इस संगमयुग में सबका लक्ष्य है। इसलिए ही आप ब्राह्मण सो देवताओं को संपूर्ण पवित्र गाया जाता है। सिर्फ निर्वकारी नहीं कहते लेकिन 'संपूर्ण निर्विकारी' कहा जाता है। 16 कला सम्पन्न कहा जाता है। सिर्फ 16 कला नहीं कहते लेकिन उसमें 'सम्पन्न'। गायन आपके ही देवता रुप का है लेकिन बने कब? ब्राह्मण जीवन में वा देवता जीवन में? बनने का समय अब 'संगमयुग' है। इसलिए चेक करो कि कहाँ तक अर्थात् कितने परसेन्ट में स्वच्छता अर्थात् पवित्रता धारण की है?

तन की स्वच्छता अर्थात् सदा इस तन को आत्मा का मंदिर समझ उस स्मृति से स्वच्छ रखना। जितनी मूर्ति श्रेष्ठ होती है उतना ही मंदिर भी श्रेष्ठ होता है। तो आप श्रेष्ठ मूर्तिया हो या साधारण हो? ब्राह्मण आत्माएं सारे कल्प में नंबरवन श्रेष्ठ आत्मायें! ब्राह्मणों के आगे देवतायें भी सोने तुल्य हैं और ब्राह्मण हीरे तुल्य हैं! तो आप सभी हीरे की मूर्तियाँ हो। कितनी ऊंची हो गई! इतना अपना स्वमान जान इस शरीर रुपी मंदिर को स्वच्छ रखो। सदा हो लेकिन स्वच्छ हो। इस विधि से तन की पवित्रता सदा रुहानी खुशबू का अनुभव करायेगी। ऐसी स्वच्छता, पवित्रता कहाँ तक धारण हुई? देहभान में स्वच्छता नहीं होती लेकिन आत्मा का मंदिर समझाने से स्वच्छ रखते हो। और यह मंदिर भी बाप ने आपको संभालने और चलाने के लिए दिया है। इस मंदिर का ट्रस्टी बनाया है। आपने तो तन-मन-धन सब दे दिया ना! अभी आपका तो नहीं है। मेरा कहेंगे या तेरा कहेंगे? तो ट्रस्टीपन स्वत:

ही नष्टोमोहा अर्थात् स्वच्छता और पवित्रता को अपने में लाता है। मोह से स्वच्छता नहीं, लेकिन बाप ने सेवा दी है -ऐसे समझ तन को सवच्छ, पवित्र रखते हैं ना वा जैसे आता है वेसे चलाते रहते हो? स्वच्छता भी रुहानियत की निशानी है।

ऐसे ही मन की स्वच्छता या पवित्रता इसकी भी परसेन्टेज देखो। सारे दिन में किसी भी प्रकार का अशुद्ध संकल्प मन में चला तो इसको समपूर्ण सवच्छता नहीं कहेंगे। मन के प्रति बापदादा का डायरेक्शन है - मन को मेरे में लगाओ वा विश्व-सेवा में लगाओ। मनमनाभव- इस मंत्र की सदा स्मृति रहे। इसको कहते हैं मन की स्वच्छता वा पवित्रता। और किसी तरफ भी मन भटकता है तो भटकना अर्थात् अस्वच्छता। इस विधि से चेक करो कि कितनी परसेन्ट में स्वच्छता धारण हुई? विस्तार तो जानते हो ना!

तीसरी बात- दिल की स्वच्छता। इसको भी जानते हो कि 'सच्चाई ही सफाई है।' अपने स्व-उन्नति अर्थ जो भी पुरुषार्थ है जैसा भी पुरुषार्थ है, वह सच्चाई से बाप के आगे रखना। तो एक - स्वयं के पुरुषार्थ की सवच्छता। दूसरा - सेवा करते सच्ची दिल से कहाँ तक सेवा कर रहे हैं, इसकी स्वच्छता। अगर कोई भी स्वार्थ से सेवा करते हो तो उसको सच्ची सेवा नहीं कहेंगे। तो सेवा में भी सच्चाई-सफाई कितनी है? कोई-कोई सोचते कि सेवा तो करनी ही पड़ेगी। जैसे लौकिक गवर्मेन्ट की ड्यूटी है, चाहे सच्ची दिल से करो, चाहे मजबूरी से करो, चाहे अलबेले बनके करो, करनी ही पड़ती है ना। कैसे भी 8 धंटे पास करने ही हैं। ऐसे इस आलमाइटी गवर्मेन्ट द्वारा ड्यूटी मिली हुई है - ऐसे समझ के सेवा करना, इसको सच्ची सेवा नहीं कहा जाता। ड्यूटी सिर्फ नहीं है लेकिन ब्राह्मण-आत्माओं का निजी संस्कार ही 'सेवा' है। तो संस्कार स्वत: ही सच्ची सेवा के बिना रहने नहीं देते। तो ऐसे चेक करो कि सच्ची दिल से अर्थात् ब्राह्मण-जीवन के स्वत: संस्कार से कितनी परसेन्ट की सेवा की? इतने मेले कर लिये, इतने कोर्स करा लिये लेकिन स्वच्छता और पवित्रता की परसेन्ट कितनी रही? ड्यूटी नहीं है लेकिन निजी संस्कार है, स्व-धर्म है, स्व-कर्म है।

चौथी बात - सम्बंध में स्वच्छता। इसका सार रुप में विशेष यह चेक करो कि संतुष्टता रुपी स्वच्छता कितने परसेन्ट में हैं? सारे दिन में भिन्न-भिन्न वैरायटी आत्माओं से सम्बंध होता है। तीन प्रकार के सम्बन्ध में आते हो। एक - ब्राह्मण परिवार के, दूसरा - आये हुये जिज्ञासू आत्माओं के, तीसरा - लौकिक परिवार के। तीनों ही सम्बंध में सारे दिन में स्वयं की संतुष्टता और सम्बन्ध में आने वाली दूसरी आत्माओं की संतुष्टता की परसेन्टेज कितनी रही? संतुष्टता की निशानी स्वयं की मन से हल्के और खुश रहेंगे और दूसरे भी खुश होंगे। असंतुष्टता की निशानी - स्वयं भी मन से भारी होंगे। अगर सच्चे पुरुषार्थी हैं तो बार-बार न चाहते भी ये संकल्प आता रहेगा कि ऐसे नहीं बोलते, ऐसे नहीं करते तो अच्छा। यह बोलते थे, यह करते थे - यह आता रहेगा। अलबेले पुरुषार्थी को यह भी नहीं आयेगा। तो यह बोझ खुश रहने नहीं देगा, हल्का रहने नहीं देगा। सम्बन्ध की स्वच्छता अर्थात् संतुष्टता। यही सम्बन्ध की सच्चाई और सफाई है। इसलिए आप कहते हो - 'सच तो बिठो नच'। अर्थात् सच्चा सदा खुशी में नाचता रहेगा। तो सुना, होलीहंस की परिभाषा? अगर सत्यता की स्वच्छता नहीं है तो हंस हो लेकिन होलीहंस नहीं हो। तो चेक करो - सम्पन्न और संपूर्ण का जो गायन है, वह कहाँ तक बने हैं? अगर ड्रामा अनुसार आज भी इस शरीर का हिसाब समाप्त हो जाए तो कितनी परसेन्टेज में पास होंगे? वा ड्रामा को कहेंगे - थोड़ा समय ठहरो! यह तो सोचकर नहीं बैठे हो कि छोटे-छोटे तो जाने वाले हैं ही नहीं? एवररेडी का अर्थ क्या है? समय का इंतजार तो नहीं करते कि अभी 10-11 वर्ष तो हैं? बहुत करके 2000 का हिसाब सोचते हैं! लेकिन सृष्टि के विनाश की बात अलग है, अपने को एवररेडी रखना अलग बात है। इसलिए यह उससे नहीं मिलाना। भिन्न-भिन्न आत्माओं का भिन्न-भिन्न पार्ट है। इसलिए यह नहीं सोचो कि मेरा एडवांस पार्टी में तो नहीं है या मेरा तो विनाश के बाद भी पार्ट है! कोई आत्माओं का है लेकिन मैं एवररेडी रहूँ। नहीं तो अलबेलेपन का अंश प्रकट हो जायेगा। एवररेडी रहो, फिर चाहे 20 वर्ष जिंदा रहो कोई हर्जा नहीं। लेकिन ऐसे आधार पर नहीं रहना। इसको कहते हैं - 'होलीहंस'।

ज्ञान-सागर के कण्ठे पर आये हो ना। तो आज होलीहंस की स्वच्छता सुनाई फिर विशेषता सुनायेंगे।

टीचर्स को चेक करना आता है ना! टीचर्स को विशेष समर्पित होने का भाग्य मिला हुआ है। चाहे प्रवृत्ति वाले भी मन से समर्पित हैं फिर भी टीचर्स का विशेष भाग्य है। काम ही 'याद और सेवा' का है। चाहे खाना बनाती या कपड़े धुलाई करती - वह भी यज्ञ सेवा है। वह भी अलौकिक जीवन प्रति सेवा करती हो। प्रवृत्ति वालों को दोनों तरफ निभाना पड़ता है। आपको तो एक ही काम है ना, डबल तो नहीं है? जो सच्चाई और सफाई से बाप और सेवा में सदा लगे रहते हैं, उन्हें कोई और मेहनत करने की आवश्यक्ता नहीं पड़ती है। सुनाया था कि योग्य टीचर का भण्डारा और भण्डारी सदा भरपूर रहेगा। फिक्र नहीं करना पड़ेगा- अगला मास कैसे चलेगा, मेला कैसे होगा, सेवा के साथ-साथ साधन स्वत: प्राप्त होंगे। रुहानी आकर्षण सेवा और सेवाकेन्द्र स्वत: ही बढ़ाती रहती है। जब ज्यादा सोचते हो कि जिज्ञासु कयों नहीं बढ़ते, ठहरते क्यों नहीं, चले क्यों जाते... तो जिज्ञासू नहीं ठहरते। योगयुक्त होकर रुहानियत से आह्वान करते हो तो जिज्ञासू स्वत: ही बढ़ते हैं। ऐसे होता है ना? तो मन सदा हल्का रखो, किसी प्रकार का बोझ नहीं रहे। किसी भी प्रकार का बोझ है चाहे अपना, चाहे सेवा का, चाहे सेवा साथियों का तो उड़ने नहीं देगा-सेवा भी ऊंची नहीं उठेगी। इसलिए सदा दिल साफ और मुराद हांसिल करते रहो। प्राप्तियाँ आपके सामने स्वत: ही आयेंगी। क्या सुना? सर्व रुहानी प्राप्तियाँ हैं ही ब्राह्मणों के लिए तो कहाँ जायेंगी! अधिकार ही बाप लोगों का है। अधिकार कोई छीन नहीं सकता।

(06.01.1990)

शिव-शक्तियां हो या घर की मातायें हो? शिव-शक्ति कहने से शक्तियां याद आती है। किन माताओं को बाप ने शिव शक्तियां बना दिया है! अगर कोई शक्ल आकर देखे तो क्या कहेंगे! ऐसी शक्तियाँ होती हैं क्या! लेकिन बाप ने

पहचान लिया कि वह आत्माएं शक्तिशाली हैं। बाप तो आत्माओं को देखता है, न बूढ़ा देखता, न जवान देखता, न बच्चा देखता। आत्मा तो बूढ़ी वा छोटी है ही नहीं। तो यह खुशी है ना कि हमको बाबा ने 'शिवशक्ति' बना दिया। दुनिया में कितनी पढ़ी-लिखी मातायें हैं लेकिन बाप को गांव वाले ही पसंद है, क्यों पसंद है? 'सच्ची दिल पर साहेब राजी'। बाप को सच्ची दिल प्यारी लगती है। जो भोले होंगे उन्हें झूठ-कपट करने नहीं आयेगा। जो चालाक, चतुर होते हैं उसमें यह सब बातें होती हैं। तो जिसकी दिल भोली है अर्थात् दुनिया की मायावी चतुराई से परे हैं, वह बाप को अति प्रिय है। बाप सच्ची दिल को देखता है। बाकी पढ़ाई को, शक्ल को, गाँव को, पैसे को नहीं देखता है। सच्ची दिल चाहिए, इसलिए बाप का नाम 'दिलवाला' है।

(14.01.1990)

दूसरी बात - बापदादा ने वाणी के ऊपर भी विशेष अटेन्शन दिलाया था। इस वर्ष अपने बोल के ऊपर विशेष डबल अटेन्शन। सभी को बोल के लिए डायरेक्शन भेजा गया है। इस पर प्राइज मिलनी है। सच्चाई-सफाई से अपना चार्ट स्वयं ही रखना। सच्चे बाप के बच्चे हो ना। बापदादा सभी को डायरेक्शन देते हैं - जहाँ देखते हो सेवा स्थिति को डगमग करती है, उसे सेवा में कोई सफलता मिल नहीं सकती। सेवा भले कम करो लेकिन स्थिति को कम नहीं करो। जो सेवा स्थिति को नीचे ले आती है उसको सेवा कैसे कहेंगे! इसलिए बापदादा सभी को फिर से यही कहेंगे कि सदा स्व-स्थिति और सेवा अर्थात् स्व-सेवा और औरों की सेवा साथ-साथ सदा करो। स्व-सेवा को छोड़ और पर-सेवा की। सर्वशक्तिवान बाप मददगार है। इसलिए हिम्मत से दोनों का बैलेंस रख आगे बढ़ो। कमजोर नहीं बनो। अनेक बार के निमित्त बने हुए विजयी आत्मा हैं। ऐसी विजयी आत्माओं के लिए कोई मुश्किल नहीं, कोई मेहनत नहीं। अटेन्शन और अभ्यास- यह भी सहज और स्वत: अनुभव करेंगे। अटेन्शन का भी टेन्शन नहीं रखना। कोई-कोई अटेन्शन

को टेन्शन में बदल लेते हैं। ब्राह्मण-आत्माओं के निजी संस्कार 'अटेन्शन' और 'अभ्यास' हैं।

(22.01.1990)

ब्रह्मा बाप का चौथा कदम - विश्व-सेवाधारी। सेवा की विशेषता- एक तरफ अति निर्माण-वर्ल्ड सर्वेन्ट; दूसरे तरफ ज्ञान की अथार्टी। जितना ही निर्माण उतना ही बेपरवाह बादशाह। सत्यता की निर्भयता-यही सेवा की विशेषता है। कितना भी सम्बंधियों ने, राजनेताओं ने, धर्म-नेताओं ने नये ज्ञान के कारण ऑपोजीशन किया लेकिन सत्यता और निर्भयता की पोजीशन से जरा भी हिला न सके। इसको कहते हैं 'निर्माणता और अथॉर्टी का बैलेंस'। इसकी रिजल्ट आप सभी देख रहे हो। गाली देने वाले भी मन से आगे झुक रहे हैं। सेवा की सफलता का विशेष आधार निर्माण-भाव, निमित्त-भाव, बेहद का भाव। इसी विधि से ही सिद्धिस्वरुप बने।

(22.01.1990)

सत्यता की सभ्यता ही रीयल रॉयल्टी है

आज बापदादा अपने श्रेष्ठ परिवार अर्थात् अपने रॉयल फैमली को देख रहे हैं। सारे कल्प में सबसे रॉयल आप श्रेष्ठ आत्माएं ही हो। अनादि आत्मिक स्वरूप में भी सबसे श्रेष्ठ रॉयल आत्मायें हो और आदि स्वरूप देव आत्माओं के रूप में भी रॉयल राज्य अधिकारी रॉयल फैमली हो। पूज्य रूप में भी आप देव आत्माओं की कितनी रॉयल्टी से पूजा होती रहती है और किसी भी अन्य धर्म आत्मा वा राजनीतिक आत्माओं की ऐसी रॉयल पूजा नहीं होती। तो तीनों रूपों में - अनादि, आदि और पूज्य स्वरूप ऐसे रॉयल और कोई भी नहीं हैं। क्योंकि आप आत्माओं की प्योरिटी की ही रॉयल्टी है। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र और कोई भी आत्मा सारे कल्प में न ही बनी है, न बनेगी। यह प्योरिटी की ही विशेषता है। इसलिए सिर्फ

देव आत्माओं के आगे ही यह महिमा गाते हैं कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो, और किसी भी धर्म आत्माओं की महिमा में ऐसी महिमा नहीं गाई जाती है। सिर्फ देव आत्माओं के श्रेष्ठ कीर्ति अर्थात् श्रेष्ठ पवित्रता की ही कीर्तन होता है। और कोई भी धर्म में कीर्तन नहीं होता है। साजों और बाजों से कीर्तन का रिवाज देव आत्माओं में ही है वा संगमयुग के शक्ति स्वरूप में है। यह सम्पूर्ण पवित्रता के विधि की सिद्धि है। इसलिए आप जैसी रूहानी रॉयल्टी और किसी आत्मा की नहीं है। तो चेक करो- ऐसे प्योरिटी की रॉयल्टी कहाँ तक आई है? रूहानी रॉयल्टी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है - रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सत्यता। जैसे आत्मा का अनादि स्वरूप सत है। सत अर्थात् अविनाशी और सत्य है। जैसे बाप की महिमा विशेष यही गाते रहते हैं - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। सत्य ही शिव है वा गॉड इज ट्रुथ कहा जाता है। तो बाप की महिमा सत्य अर्थात् सत्यता की है। ऐसे रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी - सत्यता जरा भी बनावटी या मिलावटी न हो। चाहे बोल में, चाहे कर्म में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में मिलावट या बनावट नहीं हो। जिसको साधारण भाषा में बापदादा कहते हैं - सच्चाई। रॉयल आत्माओं की वृत्ति, दृष्टि बोल और चलन सब एक सत्य होगी। ऐसे नहीं कि वृत्ति में एक बात हो और बोल में दूसरा बनावटी भाव हो। इसको रॉयल्टी वा रीयल्टी नहीं कहा जाता है।

आजकल बापदादा बच्चों की लीला देखते भी हैं और सुनते भी हैं। कई बच्चे बात को मिलाने और बनाने में बहुत होशियार हैं। क्योंकि द्वापर से मिलावट और बनावट की कथायें बहुत सुनी हैं। तो इस ब्राह्मण जीवन में भी वह संस्कार इमर्ज कर लेते हैं। ऐसी अच्छे रूप से बात बना लेते हैं जो झूठ को बिल्कुल सम्पूर्ण सत्य बना देते हैं और सत्य को झूठ सिद्ध कर देते हैं। इसको कहा जाता है - अन्दर एक, बाहर दूसरा। तो क्या यह रीयल्टी है? रॉयल्टी है? नहीं है ना । तो ऐसे पवित्रता की रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी। यह रॉयल्टी की निशानी है। अगर यह निशानी नहीं है तो समझो प्योरिटी की रॉयल्टी नहीं आई है वा परसेन्टेज में आई है, सम्पूर्ण नहीं है।

रीयल्टी की दूसरी निशानी बापदादा सदा सुनाते रहते हैं - सच तो बिठो नच। सच्ची आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। कभी खुशी कम, कभी खुशी ज्यादा, ऐसा नहीं होगा। दिन प्रतिदिन, हर समय और खुशी बढ़ती रहेगी। रीयल्टी की निशानी है - सदा खुशी में नाचना। नैन चैन कहते हो ना, रायल्टी का अर्थ भी है चित से भी और नैन चैन से भी सदा हर्षित। सिर्फ बाहर से हर्षितमुख नहीं, लेकिन चित्त में भी हर्षित। हर्षित चित्त हर्षित मुख, दोनों हर्षित हों। कई बार ऐसे भी होता है कि अन्दर चित्त में खुशी नहीं होती लेकिन बाहरमुख में समय प्रमाण खुशनुमा बन करके दिखाते हैं। इसको अल्प काल का हर्षितमुख कहेंगे, लेकिन हर्षित चित्त, हर्षितमुख अविनाशी हो। तो पवित्रता की रीयल्टी रॉयल्टी अर्थात् अविनाशी चित्त और मुख हर्षित हों। चेक करो - दूसरे को चेक करने नहीं लग जाना, अपने को चेक करना है। ऐसी रॉयल आत्मा बापदादा को और सर्व ब्राह्मण परिवार को अति प्यारी होती है। रीयल प्यारी आत्मा की विशेषता क्या होती है? क्योंकि आजकल के रीति-रसम प्रमाण जो बहुत प्यारा लगता है तो प्यारे के तरफ न चाहते हुए भी आकर्षित हो जाते हैं। जिसको आप लोग अपनी भाषा में अटैचमेन्ट कहते हो। क्योंकि प्यारा है तो अटैचमेन्ट तो होगी ना। लेकिन रीयल और रॉयल प्यार की निशानी है - वो जितना ही प्यारा होगा उतना ही न्यारा भी होगा। इसलिए वह न स्वयं एक्स्ट्रा अटैचमेन्ट में आयेगा, न दूसरा उसकी अटैचमेन्ट में आयेगा। इसको कहा जाता है रीयल प्यार, सम्पूर्ण प्यार। वह हर्षित रहेगा, आकर्षित भी होगा परन्तु हद की आकर्षण करने वाला नहीं। तो रीयल और रॉयल की निशानी क्या हुई? अति प्यारा और अति न्यारा।

रॉयल्टी की और विशेषता है उस आत्मा में कभी किसी भी प्रकार के, चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म, मांगने के संस्कार नहीं होंगे। क्योंकि रॉयल आत्मा सदा सम्पन्न भरपूर रहती है। एक भरपूरता बाहर की होती है स्थूल वस्तुओं से, स्थूल साधनों से भरपूरता। और दूसरी होती है मन की भरपूरता। जो मन से भरपूर रहता है उसके पास स्थूल वस्तु या साधन नहीं भी हो फिर भी मन भरपूर होने के कारण

वो कभी अपने में कमी महसूस नहीं करेगा। ना में भी हाँ का अनुभव करेगा। और जिसका मन भरपूर नहीं होता वह आत्मा बाहर से कितनी भी वस्तु और साधन से भरपूर होते भी वह कभी भी अपने को भरपूर नहीं समझेगा। ऐसी आत्मा सदा इच्छा के कारण 'चाहिए चाहिए'का गीत गाती रहेगी। हर बात में ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, ये मिलना चाहिए, ये बदलना चाहिए... हर समय यही गीत गाते रहेगें। और मन से भरपूर आत्मा सदा यही गीत गाती रहेगी सब पा लिया, प्राप्त हो गया, ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, ये चाहिए चाहिए भी रॉयल मांगने के संस्कार हैं। बेहद की सेवा-प्रति सोचना कि ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, वह अलग बात है लेकिन स्व की हद के प्राप्ति अर्थ चाहिए चाहिए ये रॉयल मांगना है। नाम चाहिए, मान चाहिए, शान चाहिए, प्यार चाहिए, पूछना चाहिए - ये सब हद की बातें हैं। रॉयल आत्मा में मांगने का अंश मात्र भी संस्कार नहीं होता है। समझा - रॉयल्टी क्या होती है?

तपस्या के चार्ट में यह सब चेक करना, ऐसे नहीं, मैंने किसी को गाली नहीं दी, क्रोध नहीं किया, नहीं, यह सब बातें चेक करना। फिर प्राइज लेना। तपस्या का अर्थ ही है - सम्पूर्ण पवित्र बनना। तो पवित्रता की पर्सनालिटी, पवित्रता की रॉयल्टी कहाॅ तक प्रैक्टिकल में रही है यह चेक करना है। इसको कहेंगे तपस्वीराज। समझा - रॉयल्टी क्या है?

रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायेंगे। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खान-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता सत्यता स्वत: ही दिखाई देगी। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। कई बच्चे कहते हैं वैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यता वाला होगा। कई चतुराई करते हैं, कहेंगे हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज

है। साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं ना तो क्या साइलेन्स के पॉवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो? इससे तो ये टेप रिकार्ड और ये माइक अच्छा है जो आवाज कम ज्यादा तो कर सकते हो। तो ये चेक करो कि सत्यता के साथ सभ्यता भी है? अगर सभ्यता नहीं तो सत्यता नहीं। तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। ऐसे नहीं, अन्दर में तो रॉयल्टी है, बाहर देखने में नहीं आती। अगर अन्दर है तो बाहर में जरूर दिखाई देगी। सत्यता की रॉयल्टी को कोई छिपा नहीं सकता। इसमें गुप्त नहीं रहना है। कई कहते हैं गुप्त पुरुषार्थी हैं इसीलिए गुप्त रहते हैं। लेकिन जैसे सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता, सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता है, न कोई व्यक्ति। सत्य सदा ही सत्य है। सत्यता की शक्ति सबसे महान है। सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वत:ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। सत्यता को अगर कोई सिद्ध करने चाहता है तो वह सिद्ध जिद हो जाता है। इसलिए सत्यता स्वयं ही सिद्ध होती ही है। उसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। समझा । तपस्या वर्ष में क्या दिखाना है? प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी।

(11.12.1991)

हर कर्म में ऑनेस्टी का प्रयोग करना ही तपस्या है

आज बापदादा चारों ओर के सर्व तपस्वी कुमार और तपस्वी कुमारियों में तपस्या की विशेष निशानी देख रहे हैं। तपस्वी आत्मा की विशेषतायें पहले भी सुनाई है। आज और विशेषता सुना रहे हैं। तपस्वी आत्मा अर्थात् सदा ऑनेस्ट आत्मा। ऑनेस्टी ही तपस्वी की विशेषता है। ऑनेस्ट आत्मा अर्थात् हर कर्म में, श्रीमत में चलने में आनेस्ट होगी। ऑनेस्ट अर्थात् वफादार और इमानदार। श्रीमत पर चलने के ऑनेस्ट अर्थात् वफादार। ऑनेस्ट आत्मा स्वत: ही हर कदम श्रीमत के इशारे प्रमाण उठाती है। उनका हर कदम आटोमेटिक श्रीमत के इशारे पर ही

चलता है। जैसे साइन्स की शक्ति द्वारा कई चीजें इशारे से आटोमेटिक चलती हैं, चलाना नहीं पड़ता, चाहे लाइट द्वारा, चाहे वायब्रेशन द्वारा स्विच ऑन किया और चलता रहता है। लेकिन साइन्स की शक्ति विनाशी होने के कारण अल्पकाल के लिए चलती है। अविनाशी बाप के साइलेन्स की शक्ति द्वारा इस ब्राह्मण जीवन में सदा और स्वत: ही सहज चलते रहते हैं। ब्राह्मण जन्म मिलते ही दिव्य बुद्धि में बापदादा ने श्रीमत भर दी। ऑनेस्ट आत्मा उसी श्रीमत के इशारे से नेचुरल सहज चलती रहती है। तो ऑनेस्ट की पहली निशानी - हर सेकण्ड हर कदम श्री मत पर एक्यूरेट चलना। चलते सभी हैं लेकिन चलने में भी अनेक प्रकार की भिन्नता हो जाती है। कोई सहज और तीव्रगति से चलते हैं। क्योंकि उस आत्मा को श्रीमत स्पष्ट सदा स्मृति में रहने के कारण समर्थ है। यह है नम्बरवन ऑनेस्टी। नम्बरवन आत्मा को सोचना नहीं पड़ता कि यह श्रीमत है या नहीं, यह राइट है या रांग है, क्योंकि स्पष्ट है। दूसरी आत्माओं को स्पष्ट न होने के कारण कई बार सोचना पड़ता है। इसलिए तीव्र गति से मध्यम गति हो जाती है। साथ-साथ कोई सोचता है, कोई थकता है। चलते सभी हैं लेकिन सोचने और थकने वाले सेकेण्ड नम्बर हो जाते हैं। थकते क्यों हैं? चलते-चलते श्रीमत के इशारों में मनमत परमत मिक्स कर देते हैं, इसलिए स्पष्ट और सीधे रास्ते से भटक टेढ़े बांके रास्ते में चले जाते हैं। रिजल्ट में फिर भी वापस लौटना ही पड़ता है। क्योंकि मंज़िल का रास्ता एक ही स्पष्ट सीधा और सहज है। सीधे को टेढ़ा बना देते हैं। तो आप सोचो टेढ़ा चलने वाला कहाँ तक चलेगा, किस स्पीड से चलेगा? और परिणाम क्या होगा? थकना और निराश होकर लौटना। इसलिए सेकेण्ड नम्बर हो जाता है। अनेक सेकेण्ड गँवाया, अनेक श्वांस गँवाया, सर्व शक्तियां गँवाया, इसलिए सेकेण्ड नम्बर हो गया। सिर्फ इसमें नहीं खुश हो जाना कि हम तो चल रहे हैं। लेकिन अपनी चाल और गति दोनों को चेक करो। तो समझा, ऑनेस्टी किसको कहा जाता है?

ऑनेस्ट आत्मा की और निशानी है - वह कभी किसी भी खज़ाने को वेस्ट नहीं करेगा। सिर्फ स्थूल धन वा खज़ाने की बात नहीं है लेकिन और भी

अनेक खज़ाने आपको मिले हैं। ऑनेस्ट संगमयुग के समय के खज़ाने को एक सेकेण्ड भी वेस्ट नहीं करेगा। क्योंकि संगमयुग का एक सेकेण्ड, वर्ष से भी ज्यादा है। जैसे गरीब आत्मा का स्थूल धन आठ आना आठ सौ के बराबर है। क्योंकि आठ आने में सच्चे दिल की भावना आठ सौ से ज्यादा है। ऐसे संगमयुग का समय एक सेकेण्ड इतना बड़ा है। क्योंकि एक सेकेण्ड में पद्मों जितना जमा होता है। सेकेण्ड गँवाया अर्थात् पद्मों जितनी कमाई का समय गँवाया। ऐसे ही संकल्प का खज़ाना, ज्ञान धन का खज़ाना, सर्व शक्तियों, सर्व गुणों का खज़ाना वेस्ट नहीं करेंगे। अगर सर्व शक्तियों, सर्व गुणों व ज्ञान को स्व-प्रति वा सेवा-प्रति काम में नहीं लगाया तो इसको भी वेस्ट कहा जायेगा। दाता ने दिया और लेने वाले ने धारण नहीं किया, तो वेस्ट हुआ ना! जो ऑनेस्ट होता है वह सिर्फ धन को प्राप्त कर रख नहीं देता। ऑनेस्ट की निशानी है खज़ाने को बढ़ाना। बढ़ाने का साधन ही है कार्य में लगाना। अगर ज्ञान-धन को भी समय प्रमाण सर्व आत्माओं के प्रति या स्व की उन्नति के प्रति यूज़ नहीं करते हो तो खज़ाना कभी भी बढ़ेगा नहीं। ऑनेस्ट मैनेजर या डायरेक्टर उसको ही कहा जाता है जो कोई भी कार्य में प्रॉफिट करके दिखाये। प्रगति करके दिखाये। ऐसे ही संकल्प के खज़ाने को, गुणों को, शक्तियों को कार्य में लगाकर प्रॉफिट करने वाले हैं या वेस्ट करने वाले हैं? आनेस्ट की निशानी है - वेस्ट नहीं करना, प्रॉफिट करना। अपना तन, मन और स्थूल धन - यह तीनों ही बाप का दिया हुआ खज़ाना है। आप सबने तन, मन, धन वा वस्तु, जो भी थी वो अर्पण कर दी। संकल्प किया कि सब कुछ तेरा, ऐसा नहीं थोड़ा धन मेरा थोड़ा बाप का,थोड़ा धन किनारे रखें, जेबखर्च रखा है, थोड़ा-थोड़ा आईवेल के लिए किनारे करके रखा है। आइवेल के लिए किनारे कर रखना यह समझदारी है। जितना ही मेरा होगा उतना ही जहाँ मेरा-मेरा होता वहाँ बहुत बातें हेराफेरी होती हैं। क्योंकि उसको छिपाना पड़ता है ना! भक्ति मार्ग वाले भी समझते हैं- ये मेरे मेरे का फेरा है। इसलिए जब सब कुछ तेरा कह दिया तो कोई भी तन, मन या धन, वस्तु, सिर्फ धन नहीं लेकिन वस्तु भी धन है। वस्तु बनती किससे है? धन से

ही बनती है ना, तो कोई भी वस्तु, कोई भी स्थूल धन, कोई भी मन से संकल्प और तन से व्यर्थ कर्म करना या व्यर्थ समय गँवाना तन द्वारा, यह भी वेस्ट में गिना जायेगा। तो ऑनेस्ट तन को भी व्यर्थ के तरफ नहीं लगाते। संकल्प को भी वेस्ट में नहीं लगाते। जहाँ भी रहते हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हैं, चाहे सेन्टर वाले हैं, चाहे मधुबन वाले हैं, सबका तन-मन-धन बाप का है वा प्रवृत्ति वाले समझते हैं कि हम समर्पण तो है नहीं तो मेरा ही है। नहीं। यह तो बाप की अमानत है। तो ऑनेस्टी अर्थात् अमानत में कभी भी ख्यानत नहीं करें। वेस्ट करना अर्थात् अमानत में ख्यानत करना। ऑनेस्ट की निशानी वह अमानत में कभी भी ख्यानत कर नहीं सकता। छोटी सी वस्तु को भी वेस्ट नहीं करेगा। कई बार अपने बुद्धि के अलबेलेपन के कारण वा शरीर द्वारा कार्य में अलबेलेपन के कारण छोटी-छोटी वस्तु वेस्ट भी हो जाती है। फिर यह सोचते हैं कि मैंने यह जानबूझ कर नहीं किया, तो हो गया अर्थात् अलबेलापन। चाहे बुद्धि का हो, चाहे शरीर के मेहनत का अलबेलापन हो, दोनों प्रकार का अलबेलापन वेस्ट कर देता है। तो वेस्ट नहीं करना है। एक से दस गुना बढ़ाना है, न कि वेस्ट करना है। जिसको बापदादा सदा एक सलोगन में कहते हैं - कम खर्चा बाला नशीन। ये है बढ़ाना और वो है गँवाना। ऑनेस्ट अर्थात् तन मन और धन को सदा सफल करने वाला। यह है ऑनेस्ट आत्मा की निशानी। तो तपस्वी अर्थात् यह सब ऑनेस्टी की विशेषतायें हर कर्म में प्रयोग में आवे। ऐसे नहीं कि समाया हुआ तो सब हैं, जानते भी सब हैं। लेकिन नहीं, तपस्या, योग का अर्थ ही है प्रयोग में लाना। अगर इन विशेषताओं को प्रयोग में नहीं लाते तो प्रयोगी नहीं, तो योगी भी नहीं। यह सब खज़ाने बापदादा ने प्रयोग करने के लिए दिये हैं। और जितना प्रयोगी बनेंगे, तो प्रयोगी की निशानी है प्रगति। अगर प्रगति नहीं होती है तो प्रयोगी नहीं। कई आत्मायें ऐसे अपने अन्दर समझती भी हैं कि न आगे बढ़ रहे हैं, न पीछे हट रहे हैं। जैसे हैं, वैसे ही हैं। और कई ऐसे भी कहते हैं कि शुरु में बहुत अच्छे थे, बहुत नशा था अभी नशा कम हो गया है। तो प्रगति हुई या क्या हुआ? उड़ती कला हुई या ठहरती कला हुई तो प्रयोगी बनो। ऑनेस्टी का अर्थ ही

है प्रगति करने वाला प्रयोगी। ऐसे प्रयोगी बने हो या अन्दर समाकर रखते हो- खज़ाना अन्दर ही रहे? ऐसे ऑनेस्ट हो?

जो ऑनेस्ट होता है उसके ऊपर बाप का, परिवार का स्वत: ही दिल का प्यार और विश्वास होता है। विश्वास के कारण फुल अधिकार उसको दे देते हैं। ऑनेस्ट आत्मा को स्वत: ही बाप का वा परिवार का प्यार अनुभव होगा। बड़ों का, चाहे छोटों का, चाहे समान वालों का, विश्वासपात्र अनुभव होगा। ऐसे प्यार के पात्र वा विश्वास के पात्र कहाँ तक बने हैं? यह भी चेक करो। ऐसे चलाओ नहीं कि इसके कारण मेरे में विश्वास नहीं है,तो मैं विश्वासपात्र कैसे बनूँ, अपने को पात्र बनाओ। कई बार ऐसे कहते हैं कि मै तो अच्छा हूँ लेकिन मेरे में विश्वास नहीं है। फिर उसके कारण लम्बे चौड़े सुनाते हैं। वह तो अनेक कारण बताते भी हैं और कई कारण बनते भी हैं। लेकिन ऑनेस्टी दिल की, दिमाग की भी ऑनेस्टी चाहिए। नहीं तो दिमाग से नीचे ऊपर बहुत करते हैं। तो दिल की भी ऑनेस्टी दिमाग की भी ऑनेस्टी। अगर सब प्रकार की ऑनेस्टी है तो ऑनेस्टी अविश्वास वाले को आज नहीं तो कल विश्वास में ला ही लेगी। जैसे कहावत है सत्य की नांव डूबती नहीं है लेकिन डगमग होती है। तो विश्वास की नांव सत्यता है, ऑनेस्टी है तो डगमग होगी लेकिन अविश्वासपात्र बनना अर्थात् डूबेगी नहीं। इसलिए सत्यता की हिम्मत से विश्वासपात्र बन सकते हो। पहले सुनाया था ना कि सत्य को सिद्ध नहीं किया जाता है। सत्य स्वयं में ही सिद्ध है। सिद्ध नहीं करो लेकिन सिद्धि स्वरूप बन जाओ। तो समय के गति के प्रमाण अभी तपस्या के कदम को सहज और तीव्र गति से आगे बढ़ाओ। समझा- तपस्या वर्ष में क्या करना है? अभी भी कुछ समय तो पड़ा है। इन सब विधियों को स्वयं में धारण कर सिद्धि स्वरूप बनो।

(18.12.1991)

सच्चा प्यार अर्थात् एक दो से तन से वा मन वे अलग नहीं हो। न अलग हो सकते हैं, न कोई कर सकता है। चाहे सारी दुनिया की सर्व करोड़ों आत्माएं

प्रकृति, माया, परिस्थितियाँ अलग करने चाहे, किसकी ताकत नहीं जो इस परमात्म मिलन से अलग कर सके। इसको कहा जाता है सच्चा प्यार। प्यार को मिटाने वाले मिट जाएं लेकिन प्यार नहीं मिट सकता। ऐसे पक्के सच्चे प्रेमी हो ना?

आज पक्के प्यार का दिन मना रहे हो ना। ऐसा प्यार अब और एक जन्म में ही मिलता है। इस समय का परमात्म प्यार अनेक जन्म प्यार सम्पन्न जीवन की प्रालब्ध बना देता है लेकिन प्राप्ति का समय अभी है। बीज डालने का समय अभी है। इस समय का कितना महत्व है। जो सच्चे दिल वाले के प्यारे हैं वो सदा लव में लीन रहने वाले लवलीन हैं। तो जो लव में लीन आत्मायें हैं ऐसे लवलीन आत्माओं के आगे किसी के भी समीप आने की, सामना करने की हिम्मत नहीं है। क्योंकि आप लीन हो, किसी का आकर्षण आपको आकर्षित नहीं कर सकता।

(13.02.1992)

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि कई बच्चों की नजदीक की नज़र बहुत तेज हो रही हैं और कई बच्चों की फिर दूर की नज़र बहुत तेज हो रही है। लेकिन मैजारिटी की दूर की नज़र तेज है, नजदीक की नज़र कुछ ढीली है। देखना चाहते हैं लेकिनि स्पष्ट देख नहीं पाते हैं और फिर होशियारी क्या करते हैं? कोई भी बात होगी तो अपने को सेफ रखने के लिए दूसरों की बात बड़ी करके स्पष्ट सुनायेंगे। अपनी बड़ी बात को छोटा करेंगे और दूसरे की छोटी बात को बड़ा करेंगे यह होशियारी मैजारिटी की देखी। दूसरी होशियारी क्या देखी? आजकल एक विशेष भाषा बहुत यूज़ करते हैं कि हमसे असत्य देखा नहीं जाता, असत्य सुना नहीं जाता, इसलिए असत्य को देख झूठ को सून करके अन्दर में जोश आ जाता है। तो यह भाषा राईट है? अगर वह असत्य है और आपको असत्य को देख जोश आता है तो जोश सत्य है या असत्य है? जोश भी तो असत्य है ना! हम यह करके दिखायेंगे, यह चैलेन्ज करना राइट है? यह सदैव याद रखो कि सत्यता की निशानी क्या है! जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना चाहता है, लक्ष्य तो

बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। आवेशता या जोश यह सत्यता की निशानी है? सत्यता में जोश आयेगा? तो अगर झूठ को देख करके मुझे गुस्सा आता है, तो राईट है? कोई आग लगायेगा तो सेक नहीं आयेगा कि सेक प्रुफ हो सकते हैं? अगर हमें नॉलेज है कि यह असत्यता की आग है और आग का सेक होता है तो पहले अपने को सेफ करेंगे ना कि सेक में थोड़ा सा जल भी जाए तो चलेगा, हर्जा नहीं। तो सदैव यह याद रखो कि सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे, सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्ण। अगर सभ्यता को छोड़कर असभ्यता में आकरके सत्य को सिद्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिद्ध नहीं होगा। आप सत्य को सिद्ध करना चाहते हो लेकिन सभ्यता को छोड़ करके अगर सत्यता को सिद्ध करेंगे तो जिद्द हो जायेगा। सिद्ध नहीं। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्माण। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा। समझा - दूसरी होशियारी! ऐसे होशियार नहीं बनना। तो यह भी होमवर्क है कि ऐसे होशियारी को छोड़कर निर्माण बनो। बिल्कूल निर्माण। मैं राईट हूँ, यह रांग है यह निर्माणता नहीं है। दुनिया वाले भी कहते हैं कि सत्य को अगर कोई सिद्ध करता है तो कुछ न कुछ समाया हुआ है। कई बच्चों की भाषा हो गई है मैं बिल्कुल सच बोलता हूँ, 100 परसेन्ट सत्य बोलता हूँ। लेकिन सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है जो छिप नहीं सकता। चाहे कितनी भी दीवारें कोई आगे लाये लेकिन सत्यता का प्रकाश कभी छिप नहीं सकता। सच्चा आदमी कभी अपने को यह नहीं कहेगा कि मैं सच्चा हूँ। दूसरा कहे कि आप सच्चे हो और भी हंसी के बात सुनाएं? सुनने का इन्टरेस्ट अच्छा है। करने का भी है ना?

बापदादा को एक बात पर बड़ी हंसी आती है। वर्तमान समय कई बच्चों के समाचार आते हैं? बाप को भी चैलेन्ज कर रहे हैं कि बापदादा ने कहा है ना कि टीचर्स को चेन्ज करेंगे अभी देखेंगे बाबा क्या करता है? जो कहा है वह करता है

या नहीं करता है। बाप ने कहा है तो बाप पर है। बाप करे या न करे। या ऐसे चैलेन्ज करनी है कि कहा है तो करना ही है। बाप को जो करना है वह न किसके कहने से करेंगे। वा किसके ना कहने से नहीं करेंगे। लेकिन बाप को भी चैलेन्ज के बहुत अच्छे पत्र आते हैं। जो टीचर्स से नाराज है उन्हों को यह चांस बड़ा मिल गया है। कल्याणकारी बाप हर कार्य में जो भी करेगा वह कल्याणकारी ही होता है। यह भूल जाते हैं फिर डायरेक्शन के पत्र लिख रहे हैं कि आप जरुर करना, बाप के भी शिक्षक बहुत बन गये ना तो बाप अपने ऐसे बच्चों को भी मुबारक देते हैं। लेकिन सदा संयम में स्वयं को आगे बढ़ाते चलो। सभ्यता पूर्वक बोल, सभ्यता पूर्वक चलन, इसमें ही सफलता होती है। अगर सत्यता है और सभ्यता नहीं है तो सफलता नहीं मिलती है। और सफलता नहीं मिलती तो और जोश में आते हैं। और जब जोश में कोई होश नहीं रहता। क्या कर रहे हैं, क्या कह रहे हैं वह भी होश नहीं आता और जब होश नहीं होता तो माया को चांस मिल जाता है बेहोश करने का। इसलिए अगर कोई असत्य बात देखते भी हो, सुनते भी हो तो असत्य वायुमण्डल नहीं फैलाओ। कई कहते हैंक यह पाप कर्म है ना पाप कर्म देखा नहीं जाता और स्वयं वायुमण्डल में असत्यता की बाते फैलाना यह क्या है? इसको क्या कहेंगे? पुण्य कर रहे हैं ना वे, असत्य देखा वा सुना, फिर भी परिवार है, लौकिक परिवार में भी अगर कोई ऐसी बात देखी जाती है, सुनी जाती है तो क्या किया जाता है?फैलाया जाता है? अखबार में डाला जाता है? कि कान में सुना और दिल में छिपाया। तो यह भी व्यर्थ बातों का फैलाव करना यह भी पाप का अंश है। यह छोटे-छोटे पाप जो होते हैं वह अपनी उड़ती कला के अनुभव को समाप्त कर देते हैं। क्योंकि सबसे भारी ते भारी है पाप। अगर पाप का अंश भी है तो उड़ेगा कैसे? बोझ वाला उड़ेगा? आजकल बहुत रॉयल भाषा में फैलाव करते हैं। कहते हैं यह नया समाचार लाया हूँ। आप तो बहुत बुद्धू हो आपको कोई समाचार का पता नहीं पड़ता। हम देखो नॉलेजफुल हैं कितने समाचार का पता है। ऐसे समाचार सुनने वालों के ऊपर भी पाप और सुनाने वाले के ऊपर और ज्यादा पाप। इसीलिए

तपस्या वर्ष में यह सूक्ष्म पापों का बोझ समाप्त हो तब समान बन सकेंगे। नहीं तो सोचते हैं कि हमने तो कोई गलती की नहीं लेकिन यह रॉयल गलती बहुत करते हैं। इसको रॉयल समझते हैं। मैंने सुना तो ऐसे ही सुना दिया। भाव कोई नहीं था मेरा। लेकनि रिजल्ट क्या है। फैलाना अर्थात् बोझ के अधिकारी बनना। तो आजकल यह भी एक रिवाज हो गया है। आपस में मिलेंगे ना तो पहले तो समाचार सुनायेंगे, नये नये समाचार। कहेंगे किसको सुनाना नहीं सिर्फ आपको ही सुना रहे हैं। लेकिन बाप ने तो सुना। रजिस्टर में दाग तो हुआ या नहीं? इसलिए इस बात का भी अटेन्शन अन्डरलाइन करो। ऐसे नहीं समझो कि बापदादा को पता ही नहीं पड़ता। दादियाँ तो कोने में बैठी हैं उनको क्या पता। दादियों को नहीं पता लेकिन आपके रजिस्टर में आटोमेटिक नोट हो जाता है। जब आजकल के कम्प्युटर में सारा रिकार्ड भर जाता है तो क्या आपके रजिस्टर में आटोमेटिक यह रिकार्ड भर नहीं जायेगा। दादियाँ नहीं देखती, और नहीं देखते लेकिन रजिस्टर देख रहा है। तो ऐसा परिवर्तन करो। क्योंकि बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि तपस्या पॉवरफुल न होने का कारण क्या है? सदा विजयी बनने में विघ्न रुप क्या है? इन विघ्नों को स्वयं से समाप्त करो। दूसरा बदले तो मैं बदलूं, इनको चेंज करो तो हम चेंज होंगे, यह भाषा यथार्थ है? बड़ों के आगे बात रखना इसके लिए सबको हक है लेकिन सत्यता और सभ्यता पूर्वक।

(15.04.1992)

सत्य और असत्य का विशेष अन्तर

आज दिलाराम बाप अपने सर्व बच्चों के दिल की आश पूर्ण करने के लिए मिलन मनाने आये हैं। अव्यक्त रूप में तो सदा सर्व बच्चे मिलन मनाते रहते हैं। फिर भी व्यक्त शरीर द्वारा अव्यक्त मिलन मनाने की शुभ आश रखते हैं। इसलिए बाप को भी अव्यक्त से व्यक्त में आना पड़ता है। बापदादा इस समय चारों ओर देश-विदेश के बच्चों को देख रहे हैं-मन से मधुबन में हैं। आप साकार में हो

और अनेक बच्चे अव्यक्त रूप से मिलन मना रहे हैं। बापदादा भी सर्व बच्चों के स्नेह का रिटर्न दे रहे हैं। जहाँ भी हैं लेकिन याद द्वारा बाप के समीप दिल में हैं। सबके स्नेह के साज़ बापदादा सुन रहे हैं। बाप जानते हैं कि बच्चों के लिए सिवाए बाप के और कोई याद करने वाला है नहीं और बाप को भी सिवाए बच्चों के और कोई है नहीं। सदा इसी स्मृति में रहते हैं कि मैं बाबा का और बाबा मेरा। यही स्मृति सहज भी है और समर्थ बनाने वाली है। ऐसा स्मृति-स्वरूप स्नेही बच्चा साकार में तो क्या लेकिन स्वप्न में भी कभी असमर्थ हो नहीं सकता। असमर्थ होना अर्थात् 'मेरा बाबा' के बजाए कोई और 'मेरापन' आता है। एक मेरा बाबा-यह है मिलन मनाना। अगर 'एक' के बजाए 'दो' मेरा हुआ तो क्या हो जाता? वह है मिलना और वह है झमेला।

कई बच्चे समझते हैं-बाबा तो मेरा है ही लेकिन और भी एक-दो को मेरा करना ही पड़ता है। कहते हैं-और कोई नहीं, सिर्फ एक आधार चाहिए। लेकिन वायदा क्या है-एक बाप दूसरा न कोई या एक बाप एक और? भोले बन जाते हो। उस एक में अनेक समाये हुए होते हैं, इसलिए झमेला हो जाता है। इस पुरानी दुनिया में भी ऐसे खिलौने मिलते हैं जो बाहर से एक दिखाई देता है लेकिन एक में एक होता है। एक खोलते जाओ तो दूसरा निकलेगा, दूसरा खोलेंगे तो तीसरा निकलेगा। यह भी ऐसा ही खिलौना है। दिखाई एक देता लेकिन अन्दर समाये हुए अनेक हैं। और जब झमेले में चले गये तो मिलन मनाना कैसे हो सकता? झमेले में ही लगे रहेंगे या मिलन मनायेंगे? सिर्फ दो नहीं सोचो। सिवाए एक बाप के संकल्प में भी अगर कोई आत्मा को वा प्रकृति के साधन को मेरा सहारा स्वीकार किया तो यह आटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी बहुत फास्ट गति से कार्य करती है। जिस सेकेण्ड अन्य को सहारा बनाया, उसी सेकण्ड मन-बुद्धि का बाप से किनारा हो जाता है। सत्य बाप से किनारा होने के कारण बुद्धि असत्य को सत्य, रांग को राइट मानने लगती है, उल्टी जजमेंट देने लगती है। कितना भी कोई समझायेगा कि यह राइट नहीं है, लेकिन वह यथार्थ को, सत्य को भी असत्य की शक्ति से

समझाने वाले को रांग सिद्ध करेगा। यह सदा याद रखो कि आजकल ड्रामा अनुसार असत्य का राज्य है और असत्य के राज्य-अधिकारी प्रेजीडेंट रावण है। उसके कितने शीश हैं अर्थात् असत्य की शक्ति कितनी महान् है! उसके मन्त्री-महामन्त्री भी बड़े महान् हैं। उसके जज और वकील भी बड़े होशियार हैं। इसलिए उल्टी जजमेन्ट की प्वाइन्ट्स बहुत वैराइटी और बाहर से मधुर रूप की देते हैं। इसलिए सत्य को असत्य सिद्ध करने में बहुत होशियार होते हैं।

लेकिन असत्य और सत्य में विशेष अन्तर क्या है? असत्य की जीत अल्पकाल की होती है क्योंकि असत्य का राज्य ही अल्पकाल का है। सत्यता की हार अल्पकाल की और जीत सदाकाल की है। असत्य के अल्पकाल के विजयी उस समय खुश होते हैं। जितना थोड़ा समय खुशी मनाते वा अपने को राइट सिद्ध करते, तो समय आने पर असत्य के अल्पकाल का समय समाप्त होने पर जितनी असत्यता के वश मौज मनाई, उतना ही सौ गुणा सत्यता की विजय प्रत्यक्ष होने पर पश्चाताप करना ही पड़ता है। क्योंकि बाप से किनारा, स्थूल में किनारा नहीं होता, स्थूल में तो स्वयं को ज्ञानी समझते हैं लेकिन मन और बुद्धि से किनारा होता। और बाप से किनारा होना अर्थात् सदाकाल की सर्व प्राप्तियों के अधिकार से सम्पन्न के बजाए अधूरा अधिकार प्राप्त होना। कई बच्चे समझते हैं कि 'असत्य के बल से असत्य के राज्य में विजय की खुशी वा मौज इस समय तो मना लें, भविष्य किसने देखा। कौन देखेगा-हम भी भूल जायेंगे, सब भूल जायेंगे।' लेकिन यह असत्य की जजमेंट है। भविष्य वर्तमान की परछाई है। बिना वर्तमान के भविष्य नहीं बनता। असत्य के वशीभूत आत्मा वर्तमान समय भी अल्पकाल के सुख के-नाम, मान, शान के सुखों के झूले में झूल सकती है और झूलती भी है, लेकिन अतीन्द्रिय अविनाशी सुख के झूले में नहीं झूल सकती। अल्पकाल के शान, मान और नाम की मौज मना सकते हैं लेकिन सर्व आत्माओं के दिल के स्नेह का, दिल की दुआओं का मान नहीं प्राप्त कर सकते। दिखावा-मात्र मान पा सकते हैं लेकिन दिल से मान नहीं पा सकते। अल्पकाल का शान मिलता है लेकिन बाप से सदा

दिलतख्त-नशीन का शान अनुभव नहीं कर सकते। असत्य के साथियों द्वारा नाम प्राप्त कर सकते हैं लेकिन बापदादा के दिल पर नाम नहीं प्राप्त कर सकते। क्योंकि बापदादा से किनारा है। भविष्य की बात तो छोड़ो, वह तो अन्डरस्टुड है। लेकिन वर्तमान सत्यता और असत्यता की प्राप्ति में कितना अन्तर है? एक दूसरा मेरा बनाया अर्थात् असत्य का सहारा लिया। कितना झमेला हुआ! कहने में तो कहेंगे-और कुछ नहीं, सिर्फ कभी-कभी थोड़ा सहारा चाहिए। लेकिन वायदा तोड़ना अर्थात् झमेले में पड़ना। क्या ऐसा वायदा किया है-एक मेरा बाबा और कभी-कभी दूसरा? दूसरा भी एलाउ है? यह लिखा था क्या? चाहे अल्पकाल के नाम-मान-शान का सहारा लो, चाहे व्यक्ति का लो, चाहे वैभव का लो, जब दूसरा न कोई तो फिर दूसरा कहाँ से आया? यह असत्य के राज्य के झमेले में फंसाने की चतुराइयां हैं। जैसे बाप कहते हैं ना-मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा मुझे नम्बरवार जानते हैं। ऐसे असत्य के राज्य-अधिकारी 'रावण' को भी जो है, जैसा है, वैसे सदा नहीं जानते हो। कभी भूल जाते हो, कभी जानते हो। राज्य-अधिकारी है तो यह ताकत कम होगी! चाहे झूठा हो, चाहे सच्चा हो लेकिन राज्य तो है ना। इसलिए अपने को चेक करो, दूसरे को नहीं।

आजकल दूसरों को चेक करने में सब होशियार हो गये हैं। बापदादा कहते हैं-अपना चेकर बनो और दूसरे का मेकर बनो। लेकिन करते क्या हो? दूसरे का चेकर बन जाते हो और बातें बनाने में मेकर बन जाते हो। बापदादा रोज़ की हर एक बच्चे की कौनसी कहानियाँ सुनते हैं? बहुत बड़ा किताब है कहानियों का। तो अपने को चेक करो। दूसरे को चेक करने लगते हो तो लम्बी कथायें बन जाती हैं और अपने को चेक करेंगे तो सब कथायें समाप्त हो एक सत्य जीवन की कथा प्रैक्टिकल में चलेगी। सभी कहते हैं-बाबा, आप से बहुत प्यार है! सिर्फ कहते हो वा करते भी हो, क्या कहेंगे? कभी कहते हो, कभी करते हो। बाप के प्यार का प्रत्यक्ष सबूत बाप ने दे दिया। जो हो, जैसे हो-मेरे हो। लेकिन अभी बच्चों को सबूत देना है। क्या सबूत देना है? बाप कहते हैं-जो हो, जैसे हो-मेरे हो। और

आप क्या कहेंगे? जो है वह सब आप हो। ऐसे नहीं-थोड़ा-थोड़ा और भी है। बाप से प्यार है लेकिन कभी-कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में आ जाते हैं।

(24.09.1992)

ज्ञान का अर्थ भी यह नहीं कि प्वाइन्ट रिपीट करना या बुद्धि में रखना। ज्ञान अर्थात् समझ-त्रिकालदर्शी बनने की समझ, सत्य-असत्य की समझ, समय प्रमाण कर्म करने की समझ। इसको ज्ञान कहा जाता है।

(30.11.1992)

विश्व कल्याणकारी बापदादा अपने सर्व मास्टर विश्व कल्याणकारी बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे का इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य अति श्रेष्ठ है। हर एक नम्बरवन पुरूषार्थ करने का लक्ष्य रखते हुए आगे उड़ते जा रहे हैं। लक्ष्य सभी का नम्बरवन का है लेकिन लक्षण नम्बरवार हैं। तो लक्ष्य और लक्षण दोनों में अन्तर क्यों है? ज्ञान दाता बाप भी एक है, योग की विधि भी एक है, दिव्य गुण धारण करने का सहज प्रत्यक्ष प्रमाण साकार ब्रह्मा बाप भी एक है, सेवा के साधन और सेवा की विधि सिखाने वाला भी एक है। मुख्य बात है-पढ़ाई और पालना-दोनों ही देने वाला एक और एक नम्बर है, फिर भी प्रत्यक्ष जीवन में लक्षण नम्बरवार क्यों? ये तो सभी स्वयं को अच्छी तरह से जानते ही हो कि लक्षण धारण करने में मैं किस नम्बर में हूँ? नम्बरवार होने का विशेष आधार है एक ही शब्द पॉइन्ट। पॉइन्ट स्वरूप को अनुभव करना। दूसरा, कोई भी संकल्प, बोल वा कर्म व्यर्थ है उसको पॉइन्ट लगाना अर्थात् बिन्दी लगाना। तीसरा, ज्ञान की वा धारणा की अनेक पॉइन्ट्स को मनन कर स्व प्रति वा सेवा प्रति समय पर कार्य में लगाना। तो शब्द एक ही पॉइन्ट है लेकिन तीनों स्वरूप की पॉइन्ट को समय पर स्मृति में, स्वरूप में लाना-इसमें अन्तर पड़ जाता है। स्मृति सबको रहती है लेकिन स्मृति को स्वरूप में लाना, इसमें नम्बरवार हो जाते हैं। कई बार बापदादा सभी बच्चों को

देखते हैं कि स्मृति में बहुत होशियार होते हैं। ऐसा होना चाहिये-वह सोचते भी रहते हैं; यह राइट है, यह रॉंग है-यह ज्ञान भी इमर्ज होता है। ज्ञान अर्थात् नॉलेज और नॉलेज इज़ लाइट, नॉलेज इज माइट कहा जाता है तो जहाँ लाइट भी है, माइट भी है वहाँ ये होना चाहिये, नहीं होता। क्या सोचते हैं कि बापदादा यह कहते तो हैं, बनना तो है, ज्ञान तो यह है, लेकिन उस समय मेरे में क्या है, वह चाहिये-चाहिये में ही रह जाता है। इसका अर्थ है कि ज्ञान को लाइट और माइट के रूप से समय प्रमाण कार्य में नहीं लगा सकते। इसको कहा जाता है-स्मृति में है लेकिन स्वरूप में लाने की शक्ति कम है। जब लाइट अर्थात् रोशनी है कि ये रॉंग है, ये राइट है; ये अन्धकार है, ये प्रकाश है; ये व्यर्थ है, ये समर्थ है, तो अन्धकार समझते भी अन्धकार में रहना, इसको ज्ञानी वा समझदार कहेंगे? ज्ञानी नहीं तो क्या हुए? भक्त वा अधूरे ज्ञानी? रॉंग समझते भी रॉंग कर्मों के वा संकल्पों के वा स्वभाव-संस्कार के वशीभूत हो जाएं तो इसको क्या कहा जायेगा? उसका क्या टाइटल होना चाहिये? बापदादा समय की गति को देख सभी बच्चों को बार-बार अटेन्शन दिलाते हैं।

'अटेन्शन' शब्द को भी डबल अन्डर लाइन करा रहे हैं कि ये प्रकृति की तमोगुणी शक्ति और माया की सूक्ष्म रॉयल समझदारी की शक्ति अपना कार्य तीव्र गति से कर रही है और करती रहेगी। प्रकृति के विकराल रूप को जानना सहज है लेकिन भिन्न-भिन्न विकराल हलचल में अचल रहना इसमें और अटेन्शन चाहिये। माया के अति सूक्ष्म स्वरूप को जानने में भी धोखा खा लेते हैं। माया ऐसा रॉयल रूप रखती है जो रॉंग को राइट अनुभव कराती है। है बिल्कुल रॉंग लेकिन बुद्धि को ऐसा परिवर्तित कर देती है जो रीयल समझ को, महसूसता की शक्ति को गायब कर देती है। जैसे कोई जादू मन्त्र करते हैं ना तो परवश हो जाते हैं, ऐसी महसूसता शक्ति गायब करने की रॉयल माया रीयल को समझने नहीं देती है। होगा बिल्कुल रॉंग लेकिन माया की छाया के वशीभूत होने के कारण रॉंग को राइट समझते और सिद्ध करने में माया के सुप्रीम कोर्ट का वकील बन जाते हैं। तो

वकील क्या करते हैं? झूठ को सच सिद्ध करने में होशियार होते हैं। सच को सच सिद्ध करने में भी होते हैं लेकिन झूठ को सच सिद्ध करने में होशियार होते हैं, दोनों में होशियार होते हैं। इसीलिये बापदादा 'अटेन्शन' को डबल अन्डर लाइन करा रहे हैं। महसूसता शक्ति को परिवर्तित करने की सूक्ष्म स्वरूप की माया की छाया से सदा अपने को सेफ रखो। क्योंकि विशेष माया का स्वरूप विशेष इस स्वरूप में अपना कार्य कर रहा है। समझा? अभी क्या करेंगे? केयरफुल रहना। अगर कोई भी विशेष आत्मायें इशारा देती हैं तो अच्छी तरह से माया की इस छाया से निकल बाप की छत्रछाया में अपने को, विशेष मन-बुद्धि को इस छत्रछाया के सहारे में लाओ। क्योंकि मन में निगेटिव भाव और भावना पैदा करने का विशेष माया का प्रभाव चल रहा है और बुद्धि में यथार्थ महसूसता को समाप्त करने का विशेष माया का कार्य चल रहा है। जैसे कोई सीज़न होती है ना तो सीज़न से बचने के लिये उसी प्रमाण विशेष अटेन्शन रखा जाता है। जैसे बारिश आयेगी तो छाते, रैन कोट आदि का अटेन्शन रखेंगे, सर्दी आयेगी तो गरम कपड़े रखेंगे, अटेन्शन देंगे ना। तो मन और बुद्धि के ऊपर प्रभाव नहीं पड़े-इसके लिये पहले ही सेफ्टी के साधन विशेष अपनाओ। वो विशेष साधन है बहुत सहज, पहले भी सुनाया है-एक ही 'पॉइन्ट' शब्द। सहज है ना। लम्बा-चौड़ा तो नहीं सुनाया ना। कहते रहते हैं-हाँ, मैं आत्मा बिन्दू हूँ, ज्योति रूप हूँ, लेकिन उसमें टिकते नहीं हैं। लगाना चाहते हैं पॉइन्ट लेकिन लग जाता है क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की निशानी। पॉइन्ट लगाना सहज या आश्चर्य की निशानी वा क्वेश्चन मार्क की निशानी? क्या सहज है? बिन्दी लगाना सहज है ना। फिर क्वेश्चन और आश्चर्य में क्यों चले जाते हैं? इस विधि को अपनाओ। सीज़न है-झूठ, सच सिद्ध होने का और झूठ, सत्य से भी स्पष्ट और आकर्षण वाला होगा। जैसे आजकल का फैशन है ना-झूठी चीज़ कितनी आकर्षण वाली होती है, उसके आगे सच्चे की वैल्यु कम हो जाती है। रीयल सिल्वर देखो और व्हाइट सिल्वर देखो-क्या सुन्दर लगता है? रीयल सिल्वर काला हो जायेगा और व्हाइट सिल्वर सदा चमकता रहेगा। तो आकर्षण व्हाइट करेगा या रीयल

करेगा? तो सीज़न को पहचानों, माया के स्वरूप को पहचानों, प्रकृति के तमोगुण के भिन्न-भिन्न रंगत को पहचानों। एक है जानना, दूसरा है पहचानना। जानते ज्यादा हो, पहचानने में कभी ग़लती कर देते हो, कभी राइट कर देते हो। अभी क्या करेंगे? सेफ रहेंगे ना। फिर ये नहीं कहना कि हमने तो समझा नहीं, ऐसा भी होता है क्या? यह क्या-क्या नहीं चलेगा। अभी तो फिर भी बाप थोड़ा-थोड़ा रहम करता, थोड़ा-थोड़ा क़दम उठाता है। लेकिन फिर 'क्या' और 'क्यों' कोई नहीं सुनेगा। ऐसा नहीं, वैसा-ये वकालत नहीं चलेगी। जज बनो, माया का वकील नहीं बनो। मज़ा बहुत आता है जब वकालत करते हैं। अनुभवी तो सब हो ना, अनुभव होता है ना। सुन-सुनकर साक्षी हो हर्षित होते रहते हैं। अच्छी तरह से समझा? पाण्डवों ने, शक्तियों ने समझा, टीचर्स ने समझा? सभी हाँ-हाँ तो कर रहे हैं। फ़ोटो निकल रहा है हाँ का।

(10.01.1994)

व्यर्थ को वा उल्टे संकल्प को चेक करो तो उसकी गति बहुत फास्ट होती है। अभी-अभी संकल्प आया, अभी-अभी बोल लिया, अभी-अभी कर भी लिया। संकल्प, बोल, कर्म इकट्ठा-इकट्ठा बहुत फास्ट होता है। उसकी गति का जोश इतना तीव्र होता है जो श्रेष्ठ संकल्प, कर्म, मर्यादा, ब्राह्मण जीवन की महानता का होश समाप्त हो जाता है। व्यर्थ का जोश-सत्यता का होश, यथार्थता का होश समाप्त कर देता है और कुछ समय के बाद जब होश आता तब सोचते हैं करना नहीं चाहिये था, यथार्थ नहीं है लेकिन उस समय जब जोश होता है तो यथार्थ की पहचान बदल कर अयथार्थ को यथार्थ अनुभव करते हैं। तो व्यर्थ का जोश, होश को ख़त्म कर देता है। तो इस वर्ष सभी बच्चे विशेष व्यर्थ से इनोसेन्ट बनो। जैसे जब आप आत्मायें अपने सतयुगी राज्य में थी तो व्यर्थ वा माया से इनोसेन्ट थी इसलिये देवताओं को महान् आत्मायें, सेन्ट कहते हैं, ऐसे अपने वो संस्कार इमर्ज करो, व्यर्थ की अविद्या स्वरूप बनो। समय, श्वास, बोल, कर्म, सर्व

में व्यर्थ की अविद्या अर्थात् इनोसेन्ट। जब व्यर्थ की अविद्या हो गई तो दिव्यता स्वत: ही सहज ही अनुभव होगी और अनुभव करायेगी। अभी तक यह नहीं सोचो कि पुरुषार्थ तो कर ही रहे हैं...। पुरुष इस रथ पर कर रहा है तो पुरुष बन रथ द्वारा कराना-इसको कहा जाता है पुरुषार्थ। पुरुषार्थ चल रहा है, नहीं, लेकिन पुरुषार्थी सदा उड़ रहा है। यथार्थ पुरुषार्थी इसको कहा जाता है। पुरुषार्थ का अर्थ यह नहीं है कि एक बारी की ग़लती बार-बार करते रहो और पुरुषार्थ को अपना सहारा बनाओ। यथार्थ पुरुषार्थी हो, स्वभाव भी स्वाभाविक हो, अति सहज। अभी मेहनत को किनारे करो। अल्पकाल के आधारों का सहारा, जिसको किनारा बनाकर रखा है, ये अल्पकाल के सहारे के किनारे अभी छोड़ दो। जब तक ये किनारे हैं तो सदा बाप का सहारा अनुभव नहीं हो सकता और बाप का सहारा नहीं है इसलिये हद के किनारों को सहारा बनाते हैं। चाहे अपने स्वभाव-संस्कारों को, चाहे परिस्थितियों को, जो किनारे बनाये हैं ये सब अल्पकाल के दिखावा-मात्र धोखे वाले हैं। धोखे में नहीं रह जाओ। बाप का सहारा छत्रछाया है। अल्पकाल की बातें धोखेबाज हैं। माया की बहुत मीठी-मीठी बातें सुनते रहते हैं, बहुत सुन चुके हैं। जैसे द्वापर के शास्त्र बनाने वाले बातें बनाने में बहुत होशियार हैं, कितनी मीठी-मीठी बातें बना दी हैं। तो बातें नहीं बनाओ, बातें बनाने में सब एक-दो से होशियार हैं। न बातें बनाओ, न बातें देखो, न बातें करो। लेकिन क्या करो? बाप को देखो, बाप समान करो, बाप समान बनो। जब कोई बात सामने आती तो बात बनाना सेकण्ड में आ जाता है। क्योंकि माया की गति भी तीव्र है ना। ऐसे सुन्दर रूप की बात बना देती है जो सुनते बाप को तो हंसी आती है लेकिन दूसरे प्रभावित हो जाते हैं-बोलते तो ठीक हैं, बहुत अच्छा है, बात तो ठीक है और स्वयं को भी ठीक लगते हो। लेकिन समय की तीव्र गति को देख अब इस किनारों से तीव्र उड़ान करो। ये अनेक प्रकार की बातें व्यर्थ रजिस्टर के रोल बनाती रहती हैं। रोल के ऊपर रोल बनता जाता है। इसलिये इससे इनोसेन्ट बनो। इस इनोसेन्ट स्टेज़ से बनी-बनाई सेवा की स्टेज़ आपके सामने आयेगी। इस वर्ष के यथार्थ पुरुषार्थ के

प्रत्यक्षफल की निशानी बनी-बनाई सेवा आपके सामने आयेगी। व्यर्थ का सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आयेगी। आप सभी सेवा के निमित्त तो अनेक वर्ष बने, अब औरों को निमित्त बनाने की सेवा के निमित्त बनो। माइक वो हो और माइट आप हो। बहुत समय आप माइक बने, अब माइक औरों को बनाओ, आप माइट बनो। आपके माइट से माइक निमित्त बनें। इसको कहा जाता है तीव्र गति के उड़ान की निशानी। समझा क्या करना है? तीव्र उड़ान है ना। कि कभी तीव्र, कभी स्लो? सदा तीव्र गति के उड़ान से उड़ते रहेंगे। बादलों को देख घबराओ नहीं। ये बातें ही बादल हैं। सेकण्ड में क्रॉस करो। विधि को जानो और सेकण्ड में विधि द्वारा सिद्धि को प्राप्त करो। एक तरफ है रिद्धि-सिद्धि का फोर्स और आपका है विधि सम्पन्न सिद्धि का फोर्स। रिद्धि-सिद्धि है अल्पकाल और विधि-सिद्धि सदाकाल के लिये।

(14.04.1994)

(दादी जी गुजरात तथा गुल्जार दादी बाम्बे चक्कर पर जा रही हैं) चक्कर लगाना है तो चक्कर पर तो जायेंगे। बिना चक्कर के चक्रवर्ती राजा नहीं बनेंगे। आप लोगों को भी चक्कर लगाना अच्छा लगता है ना। जब कोई निमन्त्रण मिलता है तो कितनी खुशी होती है। अच्छा है, चक्कर लगाना अर्थात् अपने अनुभवी मूर्त में और मार्क्स बढ़ाना। जमा होता जाता है। लेकिन ऐसे नहीं सोचना कि हमको चक्कर का निमन्त्रण नहीं मिला तो शायद मैं अच्छी नहीं हूँ। ये नहीं सोचना। कोई मुख से भाषण करते, कोई मन से करते। सिर्फ भाषण करना सेवा नहीं है। ये भी एक विधि है। लेकिन चाहे मन्सा करो, चाहे वाचा करो, चाहे कर्मणा करो, सम्बन्ध-सम्पर्क से करो, चारों ही के मार्क्स 100 हैं। 100 सभी की मार्क्स है। कर्मणा वाले को 50 मिलेगा, भाषण वाले को 100 मिलेगा, ऐसा नहीं है। कोई भी सेवा करो लेकिन सेवाधारी बन सेवा करो, निस्वार्थ सेवा करो तो सेवा का मेवा मिला हुआ ही है। ऐसे समझते हो ना? या बड़ी-बड़ी कान्फ्रेन्स में भाषण करना ही

सेवा है? वो तो एक-दो ही जायेंगे ना, इतने लाखों के लाख चले जाये तो भाषण कैसे होगा। सुनाने वाले 3 लाख और सुनने वाले 100 वो कैसे होगा! तो ऐसे कभी भी नहीं समझना कि मेरे को सेवा का चांस नहीं मिला तो मैं सेवा के योग्य नहीं हूँ। कभी भी दिलशिकस्त नहीं होना। बापदादा के पास सब रिकॉर्ड होते हैं। चांस मिला, नहीं मिला, लेकिन मंसा का चांस ले लिया तो वो चक्कर लगाकर भाषण करके आई, आपने मंसा सेवा किया तो मार्क्स आपको वैसे ही मिलेंगे। इसीलिये कभी यह फिक्र नहीं करना कि मेरा तो भाग्य ही ऐसा है। नहीं, बहुत बड़ा भाग्य है। सन्तुष्ट रहना, चाहे कर्मणा हो, चाहे वाचा हो, चाहे मंसा हो, सन्तुष्ट रहना इसमें मार्क्स मिलनी है। भाषण में गये असन्तुष्ट हो गये, खिटखिट हो गई, खत्म, मार्क्स एक भी नहीं। आप घर बैठे बहुत अच्छी स्थिति में रहे तो आपको 100 मार्क्स मिलेगी। तो हिसाब पूरा है। हिसाब में ऊपर-नीचे नहीं होगा, आपको फुल मार्क्स मिलेंगी। कोई भी सेवा करो लेकिन सच्चे दिल से। मैं और मेरापन नहीं। सेवा भाव। मै-पन का भाव नहीं। अगर सेवाभाव है तो आपको फल पहले मिलेगा। चाहे सदा रोटी पकाते हो, कोई हर्जा नहीं। तो भी 100 मार्क्स मिलेगी। सच्ची दिल से करते हैं ना, तो रोटी बनाते हुए आप जो बल भरते हैं वही भाषण वालों को काम में आता है। समझा! इसीलिये दिलशिकस्त नहीं होना, मेरा नाम कभी भी कोई कान्फ्रेन्स में नहीं आया, मेरा नाम ही कोई नहीं लेता, शायद मैं पीछे हूँ....। नहीं, सन्तुष्ट रहो, सन्तुष्टता ही सफलता का साधन है। कहाँ भी रहो, सन्तुष्ट रहो। ठीक है ना कि कभी-कभी सोचते हो कि महारथी तो यही बनेंगे। हम तो महारथी के लिस्ट में आ नहीं सकते। नहीं, पहले महारथी नम्बरवन आप हो। बाप की लिस्ट में महारथी आप हो। समझा! तो कभी ऐसा-ऐसा फेस नहीं करना। बापदादा बहुत फेस देखते हैं, कभी ऐसा, कभी ऐसा! नहीं, सदा मुस्कराते रहो। अच्छा, सभी ठीक है?

(07.03.1995)

बापदादा को डबल फॉरेनर्स की एक विशेषता बहुत अच्छी लगती है, रोना नहीं अच्छा लगता लेकिन एक विशेषता अच्छी लगती है। कौन सी? सच्ची दिल पर साहेब राजी। सच बताने में डरेंगे नहीं, छिपायेंगे नहीं। तो सच्ची दिल है इसके कारण बाप के डबल प्यार के भी पात्र हो। तो सच्ची दिल रखी, साहेब को तो राज़ी कर लिया लेकिन परिवर्तन भी फिर इतना जल्दी करना चाहिये। उसको बार-बार अपने अन्दर में वर्णन नहीं करो-ये हो गया, ये हो गया....। हो गया, फिनिश। आगे के लिये अटेन्शन। लेकिन कभी-कभी अटेन्शन के बजाय टेन्शन कर लेते हो, वो नहीं करना है। बड़े ते बड़ा जस्टिस बनो। यहाँ भी चीफ जस्टिस होते हैं ना, आप तो चीफ जस्टिस के भी चीफ हो। अपने प्रति जल्दी से जल्दी जस्टिस करो-राँग, राईट। राँग है तो नॉट और डॉट। ऐसा नहीं होता तो ऐसे होता, ऐसे नहीं करते तो ऐसा होता.... ये गँवाने का खाता जमा करते हैं। कमाई खत्म हो जाती, जमा का खाता खत्म होता। सोचो लेकिन व्यर्थ नहीं। और बचाकर दिखाओ-एक घण्टे से इतना बचाया, ये रिजल्ट दिखाओ कि व्यर्थ चालू हुआ लेकिन हमने चेंज किया और जमा किया। वेस्ट को बचाओ। ये बचत का खाता बहुत खुशी दिलायेगा।

(25.03.1995)

बापदादा आज चारों ओर के बच्चों की प्योरिटी की पर्सनालिटी चेक कर रहे थे। प्योरिटी की परिभाषा को भी अच्छी तरह से जानते हो। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत नहीं, ब्रह्मचर्य व्रत में तो आजकल के सरकमस्टांस अनुसार कई अज्ञानी भी रहते हैं। ज्ञान से नहीं लेकिन हालातों को देखकर। कई भक्त भी रहते हैं। वो कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन प्योरिटी को सारे दिन में चेक करो-पवित्रता की निशानी है स्वच्छता, सत्यता। अगर सारे दिन में चाहे उठने में, चाहे बैठने में, चाहे बोलने में, चाहे सेवा करने में, चाहे स्थूल सेवा की वा सूक्ष्म सेवा की लेकिन अगर विधिपूर्वक नहीं की, विधि में भी अगर ज़रा-सा अन्तर रह गया तो वो भी

स्वच्छता अर्थात् पवित्रता नहीं। व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। क्यों? आप सोचेंगे कि हमने पाप तो किया ही नहीं, किसको दुःख तो दिया ही नहीं लेकिन अगर व्यर्थ चला, समय गया, संकल्प गया, सन्तुष्टता गई तो आपके पवित्रता की फाइनल स्टेज के डिग्री में फर्क पड़ जायेगा। 16 कला नहीं बन सकेंगे। 15 कला, 14 कला, साढ़े पन्द्रह कला...... नम्बरवार हो जायेगा। तो अपवित्रता सिर्फ किसको दुःख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो। निकल गया, बोलना नहीं था लेकिन बोल लिया, तो इसको क्या कहेंगे? मालिक हैं? इसीलिये अमृतवेले से लेकर रात तक अपने संकल्प, बोल, कर्म, सेवा-सबको चेक करो। मोटे रूप से नहीं चेक करो। अगर मोटे रूप से चेक करेंगे तो देखो चन्द्रवंशी को मोटी निशानी तीर-कमान दिया है और सूर्यवंशी को कितनी छोटी-सी मुरली दे दी है। मुरली कितनी हल्की है! और तीर कमान कितना मेहनत का है। पहले तो निशाना लगाते रहो, दूसरा बोझ उठाते रहो! और मुरली देखो-नाचो, गाओ, हंसो, खेलो। तो इसीलिये मोटे-मोटे रूप न पुरुषार्थ का रखो, न चेकिंग का रखो। अभी महीन बुद्धि बनो। क्योंकि समय समाप्त अचानक होना है, बताकर नहीं होना है। बापदादा ने तो पहले ही कह दिया है कि कोई उलहना नहीं देना-बाबा, आपने बताया क्यों नहीं? बाप कभी भी टाइम कॉन्सेस नहीं बनायेगा।

(06.04.1995)

अपने पुरुषार्थ में सच्चाई से अपनी चेकिंग अच्छी करते हैं, वो सच्चाई बापदादा के पास पहुँचती है। और सच्चाई बापदादा को प्रिय है। इसलिए सच्चाई के फलस्वरूप बापदादा द्वारा विशेष मदद भी मिलती है। चाहे कोई कमज़ोरी आ भी जाती है लेकिन बाप और सेवा से प्यार होने के कारण वो भी एक्स्ट्रा हिम्मत की मदद दिलाते हैं। समझा?

(07.11.1995)

आज बापदादा विशेष इस पर अटेन्शन दिला रहे हैं कि व्यर्थ बोल जो किसको भी अच्छे नहीं लगते, आपको अच्छा लगता है लेकिन दूसरे को अच्छा नहीं लगता, तो सदा के लिए उस शब्द को समाप्त कर दो। ऐसे सारे दिन में अगर बापदादा अपने पास बच्चों के शब्द नोट करे तो काफी फाइल बन सकती है। यह अपशब्द, व्यर्थ शब्द, ज़ोर से बोलना..... ये ज़ोर से बोलना भी वास्तव में अनेकों को डिस्टर्ब करना है। ये नहीं बोलो-मेरा तो आवाज़ ही बड़ा है। मायाजीत बन सकते हो और आवाज़ जीत नहीं बन सकते! तो ऐसे किसी को भी डिस्टर्ब करने वाले बोल और व्यर्थ बोल नहीं बोलो। बात होती है दो शब्दों की लेकिन आधा घण्टा उस बात को बोलते रहेंगे, बोलते रहेंगे। तो ये जो लम्बा बोल बोलते हो, जो चार शब्दों में काम हो सकता है वो 12-15 शब्द में नहीं बोलो। आप लोगों का स्लोगन है 'कम बोलो, धीरे बोलो'। तो जो कहते हैं ना हमारा आवाज़ बहुत बड़ा है, हम चाहते नहीं हैं लेकिन आवाज़ ही बड़ा है, तो वो गले में एक स्लोगन लगाकर डाल लेवे। होता क्या है? आप लोग तो अपनी धुन में ज़ोर से बोल रहे हो लेकिन आने-जाने वाले सुन करके ये नहीं समझते हैं कि इसका आवाज़ बड़ा है। वो समझते हैं पता नहीं झगड़ा हो रहा है। तो ये भी डिससर्विस हुई। इसलिए आज का पाठ दे रहे हैं - व्यर्थ बोल या किसी को भी डिस्टर्ब करने वाले बोल से अपने को मुक्त करो। व्यर्थ बोल मुक्त। फिर देखो अव्यक्त फरिश्ता बनने में आपको बहुत मदद मिलेगी। बोल, बोल, बोल, बोलते ही रहते हो। अगर बापदादा टेप भरकर आपको सुनाये ना तो आपको भी हंसी आयेगी। तो क्या पाठ पक्का किया है? बोल की इकॉनॉमी करो, अपने बोल की वैल्यु रखो। जैसे महात्माओं को कहते हैं ना-सत्य वचन महाराज तो आपके बोल सदा सत वचन अर्थात् कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले वचन हो। किसको चलते-फिरते हंसी में कह देते हो - ये तो पागल है, ये तो बेसमझ है, ऐसे कई शब्द बापदादा अभी भूल गये हैं लेकिन सुनते हैं। तो ब्राह्मणों के मुख से ऐसे शब्द निकलना ये मानों आप सतवचन महाराज वाले, किसी को श्राप देते हो। किसको श्रापित नहीं करो, सुख दो। युक्तियुक्त

बोल बोलो और काम का बोलो, व्यर्थ नहीं बोलो। तो जब बोलना शुरु करते हो तो एक घण्टे में चेक करो कि कितने बोल व्यर्थ हुए और कितने सत वचन हुए? आपको अपने बोल की वैल्यु का पता नहीं, तो बोल की वैल्यु समझो। अपशब्द नहीं बोलो, शुभ शब्द बोलो। क्योंकि अभी लास्ट मास है और आदि का मास डायमण्ड जुबली है, तो सारा साल डायमण्ड बनेंगे या 6 मास बनेंगे? सारा साल बनेंगे ना! इसलिए बापदादा डायमण्ड जुबली के पहले बच्चों को विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं। बापदादा चारों ओर के दृश्य तो देखते ही रहते हैं। सारा दिन नहीं देखते रहते हैं, सेकण्ड में सब देख सकते हैं। तो पाठ पक्का किया - मुक्त बनना है? या थोड़ा-थोड़ा युक्त और थोड़ा-थोड़ा मुक्त? हर एक अपने को देखो। ये नहीं शुरु करना कि बाबा ने वाणी चलाई फिर भी बोल रहा है, दूसरे को नहीं देखना। अपने को देखो-मैंने बाप की श्रीमत को कितना अपनाया है? अभी तो एक-दो को देखते हैं-ये कर रहा है... लेकिन जब अधिकार मिलने में वो नीचे पद में जायेगा तो उस समय आप साथ देंगे? उस समय देखेंगे? उस समय नहीं देखेंगे। फिर अभी क्यों देखते हो।

(13.12.1995)

सारी मुरली भूल जाये लेकिन दो शब्द याद रखो और प्रैक्टिकल में करते चलो। वो दो शब्द, जानते भी हो, कोई नई बात नहीं है, एक है शुभ चिन्तन, निगेटिव को भी पॉजेटिव करो, इसको कहते हैं शुभ चिन्तन। निगेटिव पॉजेटिव हो सकता है और बदल सकते हो सिर्फ चेक करो कि कर्म करते भी शुभ चिन्तन चला? और दूसरा सभी के प्रति शुभ चिन्तक तो शुभ चिन्तन और शुभ चिन्तक दोनों का सम्बन्ध है। अगर शुभ चिन्तन नहीं है तो शुभ चिन्तक भी नहीं बन सकते। इसलिए इन दो बातों का अटेन्शन रखना। समझा? क्या करेंगे? यहीं नहीं भूल जाना। क्योंकि अभी देखा गया है कि बहुत ऐसी समस्यायें हैं, लोग हैं जो आपके वाणी से नहीं समझते लेकिन शुभ चिन्तक बन शुभ वायब्रेशन दो तो बदल जाते हैं।

और एक बात से मुक्त भी होना है। इस ब्राह्मण जीवन में मुक्त होने वाले हो ना, मुक्त होने की 9 बातें बता दी, अगर इन नौ बातों से मुक्त हो गये तो नौ रत्न बन सकते हैं। तो आज बापदादा एक बात की स्मृति दिला रहे हैं - कभी भी कोई भी शारीरिक बीमारी हो, मन का तूफान हो, तन में हलचल हो, प्रवृत्ति में हलचल हो, सेवा में भी हलचल होती है तो किसी भी प्रकार के हलचल में दिलशिकस्त कभी नहीं होना। बड़ी दिल वाले बनो। बाप की दिल कितनी है, छोटी है क्या! बाप बड़ी दिल वाले हैं और बच्चे छोटी दिल कर देते हैं, बीमार हो गये तो रोना शुरु कर देंगे। दर्द हो गया, दर्द हो गया। तो दिलशिकस्त होना दवाई है? बीमारी चली जायेगी कि बढ़ेगी? जब हिसाब-किताब आ गया, दर्द आ गया तो हिसाब-किताब आ गया ना, लेकिन दिलशिकस्त से बीमारी को बढ़ा देते हो। इसलिए हिम्मत वाले बनो तो बाप भी मददगार बनेंगे। ऐसे नहीं, रो रहे हैं-हाय क्या करूँ, क्या करूँ और फिर सोचो कि बाबा की तो मदद है ही नहीं। मदद उसको मिलती है जो हिम्मत रखते हैं। पहले बच्चे की हिम्मत फिर बाप की मदद है। तो हिम्मत तो हार ली और सोचने लगते हो कि बाप की मदद तो मिली नहीं, बाबा भी टाइम पर तो करता ही नहीं है! तो आधे अक्षर याद नहीं करो, बाबा मददगार है लेकिन किसका? तो आधा भूल जाते हो और आधा याद करते हो कि बाबा भी पता नहीं महारथियों को ही करता है, हमको तो करता ही नहीं है, हमको तो देता ही नहीं है। पहले आप, महारथी पीछे। लेकिन दिलशिकस्त नहीं बनो और मन में अगर कोई उलझन आ भी जाती है तो ऐसे समय पर निर्णय शक्ति चाहिये और निर्णय शक्ति तब आ सकती है जब आपका मन बाप के तरफ होगा। अगर अपने उलझन में होंगे तो हाँ-ना, हाँ-ना, इसी उलझन में रह जायेंगे। इसलिए मन से भी दिलशिकस्त नहीं बनो। और धन भी नीचे-ऊपर होता है, जब करोड़पतियों का ही नीचे-ऊपर होता है तो आप लोग उसके आगे क्या हो। वो तो होना ही है। लेकिन आप लोगों को निश्चय पक्का है कि जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं तो कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। दो-दो सब्जी नहीं खिलायेगा, दाल-रोटी

खिलायेगा। लेकिन ऐसे नहीं करना कि काम से थक करके बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खिलायेगा। ऐसे अलबेले या आलस्य वाले को नहीं मिलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राजी है। और परिवार में भी खिटखिट तो होनी है। जब आप लोग कहते हो कि अति के बाद अन्त होना है, कहते हो! अति में जा रहा है और जाना है तो परिवार में खिटखिट न हो, ये नहीं होना है, होना है! लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो। गृहस्थी बनकर सोचेंगे तो और गड़बड़ होगी। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरा नहीं। ये मेरापन-मेरा नाम खराब होगा, मेरी ग्लानि होगी, मेरा बच्चा और मुझे...., मेरी सास मेरे को ऐसे करती है.... ये मेरापन आता है ना तो सब बातें आती हैं। मेरा जहाँ भी आया वहाँ बुद्धि का फेरा हो जाता है, बदल जाते हैं। अगर बुद्धि कहाँ भी उलझन में बदलती है तो समझ लो ये मेरापन है, उसको चेक करो और जितना सुलझाने की कोशिश करेंगे उतना उलझेगा। इसलिए सभी बातों में क्या नहीं बनना है? दिलशिकस्त नहीं बनना है। क्या नहीं बनेंगे? (दिलशिकस्त) सिर्फ कहना नहीं, करना है। भगवान के बच्चे हैं ये तो पक्का वायदा है ना, इसको तो माया भी नहीं हिला सकती। जब ये पक्का वायदा है, निश्चय है तो भगवान के बच्चे भी दिलशिकस्त हो जायें, तो बड़ी दिल रखने वाले कौन होंगे? और कोई होंगे? आप ही हो ना! तो क्या करेंगे? अभी समर्थ बनो और सन शोज़ फादर का पाठ पक्का करो। कच्चा नहीं करो, पक्का करो। सभी हिम्मत वाले हो ना? हिम्मत है?

(18.01.1996)

'सत्यता का फाउण्डेशन है पवित्रता और निशानी है-चलन वा चेहरे में दिव्यता'

आज सत-बाप, सत-शिक्षक, सतगुरू अपने चारों ओर के सत्यता के शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं। सत्यता का फाउण्डेशन पवित्रता है। और सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे पर और चलन में दिव्यता होगी। दुनिया में भी

अनेक आत्मायें अपने को सत्यवादी कहते हैं वा समझते हैं लेकिन सम्पूर्ण सत्यता पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। तो आप सबका फाउण्डेशन क्या है? पवित्रता। तो पवित्रता के आधार पर सत्यता का स्वरूप स्वत: और सहज सदा होता है। सत्यता सिर्फ सच बोलना, सच करना इसको नहीं कहा जाता लेकिन सबसे पहला सत्य जिससे आपको पवित्रता की वा सत्यता की शक्ति आई, तो पहली बात है अपने सत्य स्वरूप को जाना, मैं आत्मा हूँ-ये सत्य स्वरूप पहले नहीं जानते थे। लेकिन पहला सत्य अपने स्वरूप को जाना। मैं फलानी हूँ या फलाना हूँ, बाडी के हिसाब से वह सत्य स्वरूप था? सत्य स्वरूप है पहले स्व स्वरूप और फिर बाप के सत्य परिचय को जाना। अच्छी तरह से अपना सत्य स्वरूप और बाप का सत्य परिचय जान लिया है? तीसरी बात-इस सृष्टि चक्र को भी सत्य स्वरूप से जाना। यह चक्र क्या है और इसमें मेरा पार्ट क्या है! तो अपना पार्ट अच्छी तरह से स्पष्ट रूप से जान लिया? आपका पार्ट अच्छा है ना? सबसे अच्छा पार्ट संगमयुग का कहेंगे। लेकिन आपका देव आत्मा का पार्ट भी विश्व में सारे चक्र की आत्माओं से श्रेष्ठ है। चाहे धर्म आत्मायें, महान आत्मायें भी पार्ट बजाती हैं लेकिन वो आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं हैं और आप देव आत्मायें शरीर और आत्मा दोनों से पवित्र हैं, जो सारे कल्प में और कोई आत्मा ऐसी नहीं। तो पवित्रता का फाउण्डेशन सिवाए आपके और कोई भी आत्मा का श्रेष्ठ नहीं है। आपको देव आत्मा का पार्ट याद है? पाण्डवों को याद है? देव आत्मा की पवित्रता नेचुरल रूप में रही है। महान आत्मायें, आत्माओं को पवित्र बनाती हैं लेकिन बहुत पुरुषार्थ से, नेचुरल नहीं। न नेचुरल है न नेचर रूप में है। और आपकी आधा कल्प पवित्रता की जीवन नेचुरल भी है और नेचर भी है। कोई पुरूषार्थ वहाँ नहीं है। यहाँ का पुरूषार्थ वहाँ नेचुरल हो जाता है। क्योंकि वहाँ अपवित्रता का नाम-निशान नहीं, मालूम ही नहीं कि अपवित्रता भी होती है। इसलिए आपके पवित्रता का प्रैक्टिकल स्वरूप देवता अर्थात् दिव्यता का है। इस समय दुनिया वाले कितना भी अपने को सत्यवान समझें लेकिन स्व स्वरूप की

सत्यता ही नहीं जानते। बाप के सत्य परिचय को ही नहीं जानते। तो सम्पूर्ण सत्य स्वरूप नहीं कहेंगे। आपमें भी सत्यता की शक्ति सदा तब रहेगी जब अपने और बाप के सत्य स्वरूप की स्मृति रहेगी, तो स्वत: ही हर संकल्प भी आपका सत्य होगा। अभी कभी भूल भी जाते हो, बॉडी कानसेस में आ जाते हो तो संकल्प सदा सत्यता के शक्तिशाली हो, पवित्रता के शक्तिशाली हो, वह सदा नहीं रहता। सदा रहता है कि व्यर्थ भी होता है? तो व्यर्थ को सत्य कहेंगे? झूठ तो बोला ही नहीं तो क्यों नहीं सत्य है? अगर कोई यह समझकर बैठे कि मैं कभी भी झूठ नहीं बोलती, सदा सच बोलती लेकिन सत्यता की परख है कि संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता अनुभव हो। बोल सच रहे हैं लेकिन दिव्यता नहीं है, देखते हो ना-कई बार-बार कहेंगे मैं सच बोलती, मैं सच बोलती। मैं सदा सच्ची हूँ लेकिन बोल में, कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को आपका सच, सच नहीं लगेगा। यही समझेंगे कि यह अपने को सिद्ध कर रही है लेकिन समझ में नहीं आता कि यह सत्य है। सत्य को सिद्ध करने के लिए सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। अगर अपने सत्य को जिद से सिद्ध करते हैं तो वह दिव्यता दिखाई नहीं देती है। ये साधारणता है, जो दुनिया में भी करते हैं। और बापदादा सत्य की निशानी एक स्लोगन में कहते हैं, साकार द्वारा भी सुना जो सच्चा होगा वह कैसे दिखाई देगा! सच तो नच। सदा खुशी में नाचता रहेगा। जब जिद करके सिद्ध करते तो आप अपना या दूसरे का चेहरा नोट करेंगे तो वह खुशी का नहीं होगा। थोड़ा सोचने का और थोड़ा उदासी का होगा। नाचने का नहीं होगा। सच तो बिठो नच, सच्चा खुशी में नाचता है। तो खुशी में जीवन के दिन या रात बहुत अच्छी लगती है। और थोड़ा भी सत्य में असत्य मिक्स है तो उस समय की जीवन इतनी अच्छी नहीं लगेगी। तो सत्यता का अर्थ ही है सत्य स्वरूप में स्थित होके चाहे संकल्प, चाहे बोल, चाहे कर्म करना।

आजकल दुनिया वाले तो स्पष्ट कहते हैं कि आजकल सच्चे लोगों का चलना ही मुश्किल है, झूठ बोलना ही पड़ेगा। लेकिन कई समय पर, कई परिस्थितियों

में ब्राह्मण आत्मायें भी मुख से नहीं बोलती लेकिन अन्दर समझती हैं कि कहाँ-कहाँ चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। उसको झूठ नहीं कहते लेकिन चतुराई कहते हैं। तो चतुराई क्या है? यह तो करना ही पड़ता है! तो वह स्पष्ट बोलते हैं और ब्राह्मण रॉयल भाषा में बोलते हैं। फिर कहते हैं मेरा भाव नहीं था, न भावना थी न भाव था लेकिन करना ही पड़ता है, चलना ही पड़ता है। लेकिन ब्रह्मा बाप को देखा, साकार है ना, निराकार के लिए तो आप भी सोचते हो कि शिव बाप तो निराकार है, ऊपर मजे में बैठा है, नीचे आवे तो पता पड़े क्या है! लेकिन ब्रह्मा बाप तो साकार स्वरूप में आप सबके साथ ही रहे, स्टूडेन्ट भी रहे और सत्यता व पवित्रता के लिए कितनी आपोजीशन हुई तो चालाकी से चला! लोगों ने कितना राय दी कि आप सीधा ऐसे नहीं कहो कि पवित्र रहना ही है, यह कहो कि थोड़ा-थोड़ा रहो। लेकिन ब्रह्मा बाप घबराया? सत्यता की शक्ति धारण करने में सहनशक्ति की भी आवश्यकता है। सहन करना पड़ता है, झुकना पड़ता है, हार माननी पड़ती है लेकिन वह हार नहीं है, उस समय के लिए हार लगती है लेकिन है सदा की विजय।

सत्यता की शक्ति से आज डायमण्ड जुबली मना रहे हैं। अगर पवित्रता और सत्यता नहीं होती तो आज आपके चेहरों से, चलन से आने वालों को जो दिव्यता अनुभव होती है वह नहीं होती। चाहे प्यादा भी है, नम्बरवार तो है ही ना। महारथी भी हैं, नाम के महारथी नहीं, लेकिन जो सच्चे महारथी हैं अर्थात् सत्यता की शक्ति से चलने वाले महारथी हैं। जो परिस्थिति को देखकर सत्यता से ज़रा भी किनारा कर लेते, कहते हैं और कुछ नहीं किया एक दो शब्द ऐसे बोल दिये, दिल से नहीं बोले ऐसे बाहर से थोड़ा बोल दिये तो यह सम्पूर्ण सत्यता नहीं है। सत्यता के पीछे अगर सहन भी करना पड़ता तो वह सहन नहीं है भल बाहर से लगता है कि हम सहन कर रहे हैं लेकिन आपके खाते में वह सहन शक्ति के रूप में जमा होता है। नहीं तो क्या होता कि अगर कोई थोड़ा सा भी सहन करने में कमजोर हो जाता है तो उसे असत्य का सहारा जरूर लेना पड़ता है। तो उस समय

ऐसे लगता है जैसे सहारा मिल गया, ठीक हो गया लेकिन उसके खाते में सहनशक्ति जमा नहीं होती है। तो बाहर से ऐसे समझेंगे कि हम बहुत अच्छे चलते हैं, हमको चलने की चतुराई आ गई है, लेकिन अगर अपना खाता देखेंगे तो जमा का खाता बहुत कम होगा। इसलिए चतुराई से नहीं चलो, एक दो को देखकर भी कापी करते हैं, यह ऐसे चलती है ना तो इसका नाम बहुत अच्छा हो गया है, यह बहुत आगे हो गई है और हम सच्चे चलते हैं ना तो हम पीछे के पीछे ही रह गये। लेकिन वह पीछे रहना नहीं है, वह आगे बढ़ना है। बाप के आगे, आगे बढ़ते हो और दूसरों के आगे चाहे पीछे दिखाई भी दो लेकिन काम किससे है! बाप से या आत्माओं से? (बाप से) तो बाप के दिल में आगे बढ़ना अर्थात् सारे कल्प के प्रालब्ध में आगे बढ़ना। और अगर यहाँ आगे बढ़ने में आत्माओं को कॉपी करते हो, तो उस समय के लिए आपका नाम होता है, शान मिलता है, भाषण करने वाली लिस्ट में आते हो, सेन्टर सम्भालने की लिस्ट में आते हो लेकिन सारे कल्प की प्रालब्ध नहीं बनती। जिसको बापदादा कहते हैं मेहनत की, बीज डाला, वृक्ष बड़ा किया, फल भी निकला लेकिन कच्चा फल खा गये, हमेशा के लिए प्रालब्ध का फल खत्म हो जाता है। तो अल्पकाल के शान, मान, नाम के लिए कॉपी नहीं करो। यहाँ नाम नहीं है लेकिन बाप के दिल में नम्बर आगे नाम है। इसलिए डायमण्ड बनना है तो यह सब चेकिंग करो। ज़रा भी रॉयल रूप का दाग डायमण्ड में छिपा हुआ तो नहीं है? तो सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। कहते भी हो ना कि सत्य की नाव डोलती है लेकिन डूबती नहीं, तो किनारा तो ले लेंगे ना। निर्भय बनो। अगर कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे रखो। ब्रह्मा बाप के आगे दुनिया की परिस्थितियां तो थी लेकिन वेराइटी बच्चों की भी परिस्थितियां रहीं लेकिन संगठन में होते, जिम्मेवारी होते सत्यता की शक्ति से विजयी हो गये। बच्चों की खिटखिट ब्रह्मा बाप ने नहीं देखी क्या? ब्रह्मा बाप के आगे भी वेराइटी संस्कार वाली आत्मायें रही, लेकिन इतनी सब परिस्थितियां

होते हुए सत्यता की स्व स्थिति ने सम्पूर्ण बना दिया।

तो आप सबको क्या बनना है? चतुराई तो नहीं है ना! बहुत अच्छा बोलते हैं - मैंने कुछ नहीं किया थोड़ा चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। लेकिन कब तक? तो सहनशक्ति धारण कर असत्य का सामना करो। प्रभाव में नहीं आ जाओ। कई समझते हैं कि हमने महारथियों में भी ऐसे देखा ना तो फालो तो महारथियों को करना है ना, अभी ब्रह्मा बाबा तो सामने हैं नहीं, महारथी हैं उसको फालो किया। लेकिन अगर महारथी भी मिक्स करता है, चतुराई से चलता है तो उस समय महारथी, महारथी नहीं है। उस समय ग्रहचारी में है न कि महारथी है। इसीलिए बाप ने क्या स्लोगन दिया-फालो फादर या सिस्टर ब्रदर? तो साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को आगे रखो, फालो करो और अशरीरी बनने में निराकार बाप को फालो करो। चाहे अच्छे-अच्छे बच्चे भी हैं लेकिन वह भी फालो फादर करते हैं। तो आपको क्या करना है? फालो फादर। पक्का या थोड़ा-थोड़ा एडॅवान्टेज मिलता है तो ले लो भविष्य में देखा जायेगा? कई ऐसे भी सोचते हैं कि सतयुग में चाहे कम पद पायेंगे लेकिन सुखी तो होंगे ही। दुख तो होगा ही नहीं। सब प्राप्तियां तो होंगी। चाहे प्रजा की भी प्रजा होगी तो भी अप्राप्ति तो होगी नहीं, तो अभी तो मज़ा ले लें, पीछे देखा जायेगा। लेकिन यह अल्पकाल का मज़ा, सज़ा के भागी बना देगा। तो वह मंजूर है, सजा खायेंगे थोड़ी! वह भी मज़ा ले लो? नहीं!

तो तीनों बातें याद रखो-पवित्रता, सत्यता और दिव्यता। ऐसे साधारण बोल नहीं, साधारण संकल्प नहीं, साधारण कर्म नहीं, दिव्यता। दिव्यता का अर्थ ही है दिव्य गुण द्वारा कर्म करना, संकल्प करना, वही दिव्यता है। जैसे लोग पूछते हैं ना कि पाप कर्म क्या होता है? तो आप कहते हो कि कोई भी विकार के वश कर्म करना यह पाप है। ऐसे समझाते हो ना! तो दिव्यता अर्थात् दिव्य गुण के आधार पर मन-वचन और कर्म करना। तो सत्यता का महत्व जाना! (ड्रिल)

(27.02.1996)

बापदादा देख रहे हैं कि डबल फारेनर्स मैजारिटी अभी नालेजफुल अच्छे बन गये हैं। माया को परखने की नज़र अब अच्छी तेज हो रही है। इसलिए बापदादा पत्रों से खुशबू लेते हैं और सच्ची दिल वाले हैं। गिरने की भी सच्चाई लिखते हैं तो उड़ने की भी सच्चाई लिखते हैं। साफ दिल हैं। तो जहाँ साफ दिल है, तो बापदादा सदा कहते हैं साफ दिल मुराद हांसिल। जो उमंगें, आशायें रखते हैं वह प्राप्त हो जाती हैं अर्थात् मुराद हांसिल हो जाती है।

(14.12.1997)

यह वर्ष सर्व बातों से मुक्त वर्ष मनाओ। मुक्ति वर्ष। जब यह मुक्ति वर्ष मनायेंगे तब मुक्तिधाम में जायेंगे। इसके लिए क्या करेंगे? बहुत छोटी सी बात है, बड़ी बात नहीं है। बापदादा सिर्फ छोटा सा स्लोगन दे रहे हैं - 'सफल करो सफलता लो'। समझा! सफल करो, सफलता लो। क्या सफल करना है? जो भी आपके पास है, अपनी जो प्रापर्टी है ना - समय, संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सफल करो, व्यर्थ न गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो। संकल्प को भी सफल करो। एक-एक संकल्प - यह आपकी प्रापर्टी है। जैसे धन स्थूल प्रापर्टी है, वैसे सूक्ष्म प्रापर्टी है समय, श्वांस, संकल्प। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं जाये, सफल हो। चाहे मन्सा सेवा द्वारा, चाहे वाचा द्वारा, चाहे कर्म द्वारा - चेक करो, सफल कितना किया? जमा कितना किया? और बापदादा इस वर्ष यह विशेष वरदान दे रहे हैं - सफल करो और पदमगुणा सफलता का अनुभव करो। यह प्रत्यक्ष फल सहज प्राप्त कर सकते हो, सिर्फ सच्ची दिल से। सच्ची दिल पर भोलानाथ बाप बहुत सहज राज़ी हो जाता है, इसलिए सफल करो। ज्ञान धन, शक्तियों का धन, गुणों का धन हर समय सफल करो। सफल करना आता है वा किनारे करना वा सम्भालने बहुत आता है? किनारे नहीं करो, लगाओ। जब कहते हो कि अचानक सब होना है, एवररेडी बनना है। तो जो भी है उसको सफल करो। बापदादा को नहीं चाहिए, अपने लिए जमा करो। बापदादा तो दाता है लेकिन सफल करना

अर्थात् जमा करना क्योंकि बापदादा ने समय प्रमाण जमा का खाता देखा, हर एक बच्चे के जमा का खाता बापदादा के पास है। तो जमा के खाते में क्या देखा? कई बच्चे समझते वा कहते बहुत हैं कि हमारा यह भी जमा है, यह भी जमा है, बाहर से जमा का खाता बहुत वर्णन करते हैं लेकिन बाप के जमा के खाते में जो जितना कहते हैं, समझते हैं उससे बहुत कम जमा है। क्यों? वही पहला पाठ 'मैं और मेरा-पन'। मैंने किया, मेरी यह सेवा है, मेरा यह कार्य है। तो जमा करते समय, वह समझते हैं कि जमा कर रहे हैं लेकिन वह ऑटोमेटिक जमा के खाते से निकल, व्यर्थ के खाते में जमा हो जाता है। यह ऑटोमेटिक सूक्ष्म मशीनरी है। बाबा ने कराया, बाबा की सेवा है, मेरी सेवा नहीं है। मैंने किया, नहीं। वर्णन नहीं करो, मैंने यह किया, मैं यह करती हूँ, मैं यह करता हूँ...यह मैं-मैं नहीं। बाबा, बाबा बोलो तो पदमगुणा जमा होगा। और मैं मेरा बोलेंगे तो ट्रांसफर होकर व्यर्थ के खाते में जमा हो जायेगा। यह ऑटोमेटिक मशीनरी बहुत फास्ट है, आप लोगों को पता भी नहीं पड़ता है। इसकी चेकिंग भी बहुत सच्चे दिल से, मैं-पन से न्यारे होकर करने वाले कर सकते हैं। जब आप आदि रत्न आदि में स्थापना में निकले, सेवा में निकले तो क्या भाव रहता था? क्या बोल निकलता था? मैं-पन था? बाबा-बाबा कहा तभी वारिस बाबा के बने, जो आज सेवा के आदि बनें, यह बाबा-बाबा कहने का सबूत है।

(31.12.1997)

30 वर्ष वाले तो बहुत मौज में हैं ना! (1000 आये हैं) बापदादा को इस ग्रुप के लिए बहुत-बहुत-बहुत दिल से सम्मान है क्यों? यही पाण्डव हैं, यही मातायें हैं जिन्होंने सेवा की स्थापना में, सेन्टर्स स्थापन करने में जब बेगरी लाइफ थी, बेगरी लाइफ में सेन्टर खुले हैं, ऐसे आईवेल के समय इस सेना ने अपने तन-मन-धन से निमित्त बन के सेवास्थान स्थापन किये हैं। आईवेल के समय जो सहयोगी

बनता है उनका आठ आना, आठ करोड़ बन जाते हैं। बापदादा को याद है - खुद बांधेली होते हुए भी एक कटोरी में आटा, एक कटोरी में चीनी, एक कटोरी में घी, ऐसे कटोरी-कटोरी करके लाती थी। तो सोचो कितने सच्ची दिल वाले रहे। अपने घर खर्चे से बापदादा के सेन्टर चलाये हैं, अपने पर्सनल जमा खाते से, अपने खर्चे से बचत करके सेन्टर स्थापन किये हैं, तो कितना भाग्य है इन्हों का! ऐसे समय पर सहयोगी आत्माओं को बापदादा भी नमस्ते कहते हैं। इन्हों के अनुभव बहुत अच्छे हैं, सारा भागवत इन्हों का है।

(30.03.1998)

सदा बुद्धि को क्लीयर रखना। जिसको दूसरे शब्दों में बापदादा कहते हैं - सच्ची दिल पर साहेब राजी। सच्ची दिल, साफ दिल। वर्तमान समय में सच्चाई और सफाई की आवश्यकता है। दिल में भी सच्चाई, परिवार में भी सच्चाई और बाप से भी सच्चाई। समझा।

(13.02.1999)

बापदादा देखते हैं प्यार ने ही बाप का बनाया है। प्यार ही मधुबन निवासी बनाता है। चाहे अपने स्थान पर कैसे भी रहें, कितना भी मेहनत करें लेकिन फिर भी मधुबन में पहुंच जाते हैं। बापदादा जानते हैं, देखते हैं, कई बच्चों को कलियुगी सरकमस्टांश होने के कारण टिकेट लेना भी मुश्किल है परन्तु प्यार पहुंचा ही देता है। ऐसे है ना? प्यार में पहुंच जाते हैं लेकिन सरकमस्टांश तो दिनप्रतिदिन बढ़ते ही जाते हैं। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तो होता ही है। लेकिन स्थूल सहयोग भी कहाँ न कहाँ कैसे भी मिल जाता है। चाहे डबल फारेनर्स हों, चाहे भारतवासी, सबको यह बाप का प्यार सरकमस्टांश की दीवार पार करा लेता है। ऐसे है ना? अपने-अपने सेन्टर्स पर देखो तो ऐसे बच्चे भी हैं जो यहाँ से जाते हैं, सोचते हैं पता नहीं

दूसरे वर्ष आ सकेंगे या नहीं आ सकेंगे लेकिन फिर भी पहुंच जाते हैं। यह है प्यार का सबूत।

(01.03.1999)

आज विदेशियों को खास चांस मिला है। अच्छा है। पहला चांस विदेशियों ने लिया है, लाडले हो गये ना। सभी को मना किया है और विदेशियों को निमन्त्रण दिया है। बापदादा को भी याद तो सभी बच्चे हैं फिर भी डबल विदेशियों को देख, उन्हों की हिम्मत देख बहुत खुशी होती है। अभी वर्तमान समय इतनी हलचल में नहीं आते हैं। अभी फ़र्क आ गया है। शुरू शुरू के क्वेश्चन जो होते थे ना - इन्डियन क्लचर है, फारेन क्लचर है.... अभी समझ में आ गया। अभी ब्राह्मण क्लचर में आ गये। न इन्डियन क्लचर, न फारेन क्लचर, ब्राह्मण क्लचर में आ गये। इन्डियन क्लचर थोड़ा खिटखिट करता है लेकिन ब्राह्मण क्लचर सहज है ना! ब्राह्मण क्लचर है ही स्वमान में रहो और स्व-राज्य अधिकारी बनो। यही ब्राह्मण क्लचर है। यह तो पसन्द है ना? अभी क्वेश्चन तो नहीं है ना, इन्डियन क्लचर कैसे आये, मुश्किल है? सहज हो गया ना? देखना फिर वहाँ जाकर कहो थोड़ा यह मुश्किल है! वहाँ जाकर ऐसे नहीं लिखना। सहज कह तो दिया लेकिन यह थोड़ा मुश्किल है! सहज है या थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? जरा भी मुश्किल नहीं है। बहुत सहज है। अभी सारे खेल पूरे हो गये हैं इसलिए हंसी आती है। अभी पक्के हो गये हैं। बचपन के खेल अभी समाप्त हो गये हैं। अभी अनुभवी बन गये हैं और बापदादा देखते हैं कि जितने पुराने पक्के होते जाते हैं ना तो जो नये-नये आते हैं वह भी पक्के हो जाते हैं। अच्छा है, एक-दो को अच्छा आगे बढ़ाते रहते हैं। मेहनत अच्छी करते हैं। अभी दादियों के पास किस्से तो नहीं ले जाते हैं ना। किस्से-कहानियां दादियों के पास ले जाते हैं? कम हो गये हैं! फर्क है ना? (दादी जानकी से) तो आप अभी बीमार नहीं होना? किस्से-कहानियों में बीमार होते, वह तो खत्म हो गये। अच्छे हैं, सबमें अच्छे ते अच्छा विशेष गुण है - दिल की सफाई

अच्छी है। अन्दर नहीं रखते, बाहर निकाल लेंगे। जो बात होगी सच्ची बोल देंगे। ऐसा नहीं, वैसा। ऐसा वैसा नहीं करते, जो बात है वह बोल देते, यह विशेषता अच्छी है। इसीलिए बाप कहते हैं सच्ची और साफ दिल पर बाप राज़ी होता है। हाँ तो हाँ, ना तो ना। ऐसे नहीं - देखेंगे...! मजबूरी से नहीं चलते। चलते हैं तो पूरा, ना तो ना।

(23.10.1999)

डबल विदेशी भी बहुत बैठे हैं। डबल विदेशी हाथ उठाओ। देखो, डबल विदेशियों को चांस भी बहुत मिलता है। हर ग्रुप में डबल विदेशी हैं। डबल विदेशियों को कोई भी टर्न में मना नहीं है। तो यह कम भाग्य है क्या? आप सभी जानते हो कि इन्हों के त्याग, इन्हों की हिम्मत और दिल की सफाई पर बापदादा सदा खुश होता है। आप लोग क्या कहते हो? सच्ची दिल तो मुराद हांसिल... तो यह साफ और सच्ची दिल वाले हैं। अगर गिरेंगे तो भी सच बतायेंगे, छिपायेंगे नहीं और सच सुनाने से आधा माफ हो जाता है। इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को सदा याद करते हैं और सदा यादप्यार देते हैं। कमाल तो है और कमाल करते-करते बापदादा के साथ अपने घर में पहुंच जायेंगे। तो विशेष डबल विदेशियों को पदमगुणा यादप्यार। ऐसे नहीं भारतवासियों को नहीं है। भारतवासियों को फिर पदम-पदमगुणा यादप्यार।

(30.11.1999)

एक बात बापदादा ने मैजारिटी में देखी है। मैनारिटी नहीं मैजारिटी। क्या देखा? जब कोई सरकमस्टांश सामने आता है तो मैजारिटी में एक, दो, तीन नम्बर में क्रोध का अंश न चाहते भी इमर्ज हो जाता है। कोई में महान क्रोध के रूप में होता, कोई में जोश के रूप में होता, कोई में तीसरा नम्बर चिड़चिड़ेपन रूप में

होता है। चिड़चिड़ापन समझते हो? वह भी है क्रोध का ही अंश, हल्का है। तीसरा नम्बर है ना तो वह हल्का है। पहला जोर से है, दूसरा उससे थोड़ा। फिर भाषा तो आजकल सबकी रॉयल हो गई है। तो रॉयल रूप में क्या कहते हैं? बात ही ऐसी है ना, जोश तो आयेगा ही। तो आज बापदादा सभी से यह गिफ्ट लेने चाहते हैं कि क्रोध तो छोड़ो लेकिन क्रोध का अंश मात्र भी नहीं रहे। क्यों? क्रोध में आकर डिस-सर्विस करते हैं क्योंकि क्रोध होता है दो के बीच में। अकेला नहीं होता है, दो के बीच में होता है तो दिखाई देता है। चाहे मन्सा में भी किसके प्रति घृणा भाव का अंश भी होता है तो मन में भी उस आत्मा के प्रति जोश जरूर आता है। तो बापदादा को यह डिस-सर्विस का कारण अच्छा नहीं लगता है। तो क्रोध का भाव अंश मात्र भी उत्पन्न न हो। जैसे ब्रह्मचर्य के ऊपर अटेन्शन देते हो, ऐसे ही काम महाशत्रु, क्रोध महाशत्रु गाया हुआ है। शुभ भाव, प्रेम भाव वह इमर्ज नहीं होता है। फिर मूड ऑफ कर देंगे। उस आत्मा से किनारा कर देंगे। सामने नहीं आयेंगे, बात नहीं करेंगे। उसकी बातों को ठुकरायेंगे। आगे बढ़ने नहीं देंगे। यह सब मालूम बाहर वालों को भी पड़ता है फिर भले कह देते हैं, आज इसकी तबियत ठीक नहीं है, बाकी कुछ नहीं है। तो क्या जन्म-दिवस की यह गिफ्ट दे सकते हो? जो समझते हैं कोशिश करेंगे, वह हाथ उठाओ। सौगात देने के लिए सोचेंगे, कोशिश करेंगे वह हाथ उठाओ। सच्ची दिल पर भी साहेब राज़ी होता है। (कई भाई-बहिनें खड़े हुए) धीरे-धीरे उठ रहे हैं। सच बोलने की मुबारक हो। अच्छा जिन्होंने कहा कोशिश करेंगे, ठीक है कोशिश भले करो लेकिन कोशिश के लिए कितना समय चाहिए? एक मास चाहिए, 6 मास चाहिए, कितना चाहिए? छोड़ेंगे या छोड़ने का लक्ष्य ही नहीं है? जिन्होंने कहा कोशिश करेंगे वह फिर से उठो। जो समझते हैं कि हम दो तीन मास में कोशिश करके छोड़ेंगे वह बैठ जाओ। और जो समझते हैं 6 मास चाहिए, अगर 6 मास पूरा लगे भी तो कम करना, इस बात को छोड़ना नहीं क्योंकि यह बहुत जरूरी है। यह डिस-सर्विस दिखाई देती है। मुख से नहीं बोलो,

शक्ल बोलती है। इसलिए जिन्होंने हिम्मत रखी है उन सब पर बापदादा ज्ञान, प्रेम, सुख, शान्ति के मोतियों की वर्षा कर रहे हैं।

(03.03.2000)

डबल विदेशी:-आज की सभा में डबल विदेशियों का ग्रुप भी बड़ा है और सामने भी बैठे हैं। नाम ही डबल विदेशी है। तो अपना ओरीज्नल विदेश, तो डबल विदेशी नाम सुनने से ही याद आता। जब और भी कोई आप सभी को डबल विदेशी कहते हैं तो उन्हों को भी याद आता और आप सबको तो है ही। डबल विदेशियों को बापदादा सदा मैजारिटी को हिम्मत में और साफ दिल में आगे रखते हैं। कुछ भी हो जाता लेकिन हिम्मत रख आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। **बापदादा को सबसे समीप रत्न वही लगता है जिसमें सफाई और सच्चाई है। दिल साफ और सच्ची है तो वह बच्चे चाहे कितना भी दूर हों लेकिन वह सबसे समीप बापदादा के दिल पर रहते हैं। इसलिए इस विशेषता को सदा ही सामने रख अपनी विशेषता को बढ़ाते रहना। यह समीप आने का बहुत सहज साधन है।** वैसे तो सभी के लिए है, भारतवासियों के लिए भी है। लेकिन डबल विदेशियों में मैजारिटी में यह विशेषता है, अब इसी विशेषता को अपने में भी बढ़ाओ और बढ़ाते-बढ़ाते समीप आते-आते समान बन ही जाना है। ठीक है ना! बापदादा सदा अमृतवेले वरदानों की झोली ले चारों तरफ चक्कर लगाते हैं। अच्छा। डबल विदेशी बच्चों को विशेष हिम्मत में आगे बढ़ने की और जन्म-दिन की डबल मुबारक।

(03.03.2000)

आज बापदादा अपने 'होली-हैपी-हंसों' की सभा में आये हैं। चारों ओर होली हंस दिखाई दे रहे हैं। होलीहंसों की विशेषता को सभी अच्छी तरह से जानते हो। 'सदा होली हैपी हंस अर्थात् स्वच्छ और साफ दिल'। ऐसे होलीहंसों की स्वच्छ

और साफ दिल होने के कारण हर शुभ आशायें सहज पूर्ण होती हैं। सदा तृप्त आत्मा रहते हैं। श्रेष्ठ संकल्प किया और पूर्ण हुआ। मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्यों? बापदादा को सबसे प्रिय, सबसे समीप साफ दिल प्यारे हैं। साफ दिल सदा बापदादा के दिलतख्त नशीन, सर्व श्रेष्ठ संकल्प पूर्ण होने के कारण वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में सरल और स्पष्ट एक समान दिखाई देते हैं। **सरलता की निशानी है - दिल, दिमाग, बोल एक समान।** दिल में एक, बोल में और (दूसरा) - यह सरलता की निशानी नहीं है। सरल स्वभाव वाले सदा निर्माणचित, निरहंकारी, निर-स्वार्थी होते हैं। होलीहंस की विशेषता - सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि।

आज होली मनाने आये हो ना! लास्ट टर्न होने के कारण पहले होम-वर्क बता दिया लेकिन होली का अर्थ औरों को भी सुनाते हो कि होली मनाना अर्थात् बीती सो बीती करना। होली मनाना अर्थात् दिल में कोई भी छोटा बड़ा दाग नहीं रहना, बिल्कुल साफ दिल, सर्व प्राप्ति सम्पन्न। बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि बापदादा का बच्चों से प्यार होने के कारण एक बात अच्छी नहीं लगती। वह है - मेहनत बहुत करते हैं। अगर दिल साफ हो जाए तो मेहनत नहीं, दिलाराम दिल में समाया रहेगा और आप दिलाराम के दिल में समाये हुए रहेंगे। दिल में बाप समाया हुआ है। किसी भी रूप की माया, चाहे सूक्ष्म रूप हो, चाहे रॉयल रूप हो, चाहे मोटा रूप हो, किसी भी रूप से माया आ नहीं सकती। स्वप्न मात्र, संकल्प मात्र भी माया आ नहीं सकती। तो मेहनत मुक्त हो जायेंगे ना! बापदादा मन्सा में भी मेहनत मुक्त देखने चाहते हैं। मेहनत मुक्त ही जीवनमुक्त का अनुभव कर सकते हैं।

(19.03.2000)

बापदादा सदा ही बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में देखने चाहते हैं। जब कहते ही हो, बाप ही मेरा संसार है। यह तो सब कहते हो ना! दूसरा भी कोई संसार है क्या? बाप ही संसार है, तो संसार के बाहर और क्या है? सिर्फ संस्कार परिवर्तन

करने की बात है। ब्राह्मणों के जीवन में मैजारिटी विघ्न रूप बनता है - संस्कार। चाहे अपना संस्कार, चाहे दूसरों का संस्कार। ज्ञान सभी में है, शक्तियां भी सभी के पास हैं। लेकिन कारण क्या होता है? जो शक्ति, जिस समय कार्य में लानी चाहिए, उस समय इमर्ज होने के बजाए थोड़ा पीछे इमर्ज होती हैं। पीछे सोचते हैं कि यह न कहकर यह कहती तो बहुत अच्छा। यह करने के बजाए यह करती तो बहुत अच्छा। लेकिन जो समय पास होने का था वह तो निकल जाता है, वैसे सभी अपने में शक्तियों को सोचते भी रहते हो, सहनशक्ति यह है, निर्णय शक्ति यह है, ऐसे यूज़ करना चाहिए। सिर्फ थोड़े समय का अन्तर पड़ जाता है। और दूसरी बात क्या होती है? चलो एक बार समय पर शक्ति कार्य में नहीं आई और बाद में महसूस भी किया कि यह न करके यह करना चाहिए था। समझ में आ जाता है पीछे। लेकिन उस गलती को एक बार अनुभव करने के बाद आगे के लिए अनुभवी बन उसको अच्छी तरह से रियलाइज कर लें जो दुबारा नहीं हो। फिर भी प्रोग्रेस हो सकती है। उस समय समझ में आता है - यह रांग है, यह राइट है। लेकिन वही गलती दुबारा नहीं हो, उसके लिए अपने आपसे अच्छी तरह से रियलाइजेशन करना, उसमें भी इतना फुल परसेन्ट पास नहीं होते। और माया बड़ी चतुर है, वही बात मानो आपमें सहनशक्ति कम है, तो ऐसी ही बात जिसमें आपको सहनशक्ति यूज़ करना है, एक बार आपने रियलाइज़ कर लिया, लेकिन माया क्या करती है कि दूसरी बारी थोड़ा- सा रूप बदली करके आती है। होती वही बात है लेकिन जैसे आजकल के जमाने में चीज़ वही पुरानी होती है लेकिन पालिश ऐसी कर देते हैं जो नई से भी नई दिखाई दे। तो माया भी ऐसे पालिश करके आती है जो बात का रहस्य वही होता है, मानों आपमें ईर्ष्या आ गई। ईर्ष्या भी भिन्न-भिन्न रूप की है, एक रूप की नहीं है। तो बीज ईर्ष्या का ही होगा लेकिन और रूप में आयेगी। उसी रूप में नहीं आती है। तो कई बार सोचते हैं कि यह बात पहले वाली तो वह थी ना, यह तो बात ही दूसरी हुई ना। लेकिन बीज वही होता है सिर्फ रूप परिवर्तित होता है। उसके लिए कौन-सी शक्ति चाहिए?- 'परखने की

शक्ति'। इसके लिए बापदादा ने पहले भी कहा है कि दो बातों का अटेन्शन रखो। एक - सच्ची दिल। सच्चाई। अन्दर नहीं रखो। अन्दर रखने से गैस का गुब्बारा भर जाता है और आखिर क्या होगा? फटेगा ना! तो सच्ची दिल - चलो आत्माओं के आगे थोड़ा संकोच होता है, थोड़ा शर्म - सा आता है - पता नहीं मुझे किस दृष्टि से देखेंगे। लेकिन सच्ची दिल से, महसूसता से बापदादा के आगे रखो। ऐसे नहीं मैंने बापदादा को कह दिया, यह गलती हो गई। जैसे आर्डर चलाते हैं - हाँ, मेरे से यह गलती हो गई, ऐसे नहीं। महसूसता की शक्ति से, सच्ची दिल से, सिर्फ दिमाग से नहीं लेकिन दिल से अगर बापदादा के आगे महसूस करते हैं तो दिल खाली हो जायेगी, किचड़ा खत्म। बातें बड़ी नहीं होती है, छोटी ही होती है लेकिन अगर आपकी दिल में छोटी-छोटी बातें भी इक्ट्ठी होती रहती हैं तो उनसे दिल भर जाती है। खाली तो नहीं रहती है ना! तो दिल खाली नहीं तो दिलाराम कहाँ बैठेगा! बैठने की जगह तो हो ना! तो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। जो हूँ, जैसी हूँ, जो हूँ, जैसा हूँ, बाबा आपका हूँ। बापदादा तो जानते ही हैं कि नम्बरवार तो होने ही हैं। इसीलिए बापदादा उस नज़र से आपको नहीं देखेगा। लेकिन सच्ची दिल और दूसरा कहा था - सदा बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। लाइन में डिस्ट्रबेन्स नहीं हो। कटआफ नहीं हो। बापदादा जो एक्स्ट्रा समय पर शक्ति देने चाहते हैं, दुआयें देने चाहते हैं, एक्स्ट्रा मदद देने चाहते हैं, अगर डिस्ट्रबेन्स होगी तो वह मिल नहीं सकेगी। लाइन क्लीयर ही नहीं है, क्लीन नहीं है, कटआफ है, तो यह जो प्राप्ति होनी चाहिए वह नहीं होती। कई बच्चे कहते हैं, कहते नहीं हैं तो सोचते हैं - कोई-कोई आत्मा को बहुत सहयोग मिलता, ब्राह्मणों का भी मिलता, बड़ों का भी मिलता, बापदादा का भी मिलता, हमको कम मिलता है। कारण क्या? बाप तो दाता है, सागर है, जितना जो लेने चाहे बापदादा के भण्डारे में ताला-चाबी नहीं है, पहरेदार नहीं है। बाबा कहा, जी हाजिर। बाबा कहा - लो। दाता है ना। दाता भी है और सागर भी है। तो क्या कमी होगी? इन्हीं दो बातों की कमी होती है। एक सच्ची दिल, साफ दिल हो, चतुराई नहीं करो। चतुराई बहुत करते हैं। भिन्न-भिन्न

प्रकार की चतुराई करते हैं। तो साफ दिल, सच्ची दिल और दूसरा बुद्धि की लाइन सदा चेक करो क्लीयर है और क्लीन है? आजकल के साइन्स के साधनों में भी देखते हो ना थोड़ी भी डिस्ट्रबेन्स क्लीयर नहीं करने देती। तो यह जरूर करो।

(30.03.2000)

नये-नये बच्छे भी बहुत आये है। वृद्धि तो होनी ही है। जो इस कल्प मे, इस बारी पहले बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा किया। हिम्मत रखके पहुंच गये तो पहुंच गये ना। जो बैठ गये, वह बैठ गये और हुआ कुछ भी नही। हिम्मत बहुत आवश्यक हे। कोई भी कार्य मे हिम्मत है तो समझो सफलता है। हिम्मत कम सफलता कम। इसलिए हिम्मत और निर्भय, भय मे नही आना, यह क्या हो रहा है। मर रहा है कोई तो वह मर रहा है, भय आपको आ रहा है। निर्भय। ठीक है उसको शान्ति का सहयोग दो, उस आत्मा को रहम दिल की भावना से सहयोग दो, भय मे नही आओ। भय सबसे बडे मे बडा भूत है। और भूत निकल सकते है, भय का भूत बहुत मुश्किल निकलता है। किसी भी बात का भय, सिर्फ मरने वालों का भय नही, कही बातों का भय होता है। जो अनेक प्रकार के भय है, अपनी कमजोरी के कारण भी भय होता है। उन सब मे निर्भय बनने का जो सहज साधन है, वह है - 'सदा साफ दिल, सच्ची दिल'। तो भय कभी नही आयेगा। जरूर कोई दिल मे बात समाई हुई होती है जिस से भय होता है। साफ दिल, सच्ची दिल तो साहेब राजी और सर्व भी राजी।

(04.02.2001)

डबल विदेशी:- ड़बल विदेशियों को बापदादा सदा ड़बल मुबारक देते हैं क्योंकि मैजॉरिटी ड़बल विदेशियों की विशेषता है कि वह ड़बल कार्य कर रहे हैं। लौकिक भी कर रहे हैं और सेन्टर भी चला रहे हैं। चाहे सेन्टर चला रहे हैं, चाहे सेन्टर पर सहयोगी हैं लेकिन ड़बल काम कर रहे हैं। मैजॉरिटी। वैसे भारत में भी

हैं लेकिन यहाँ मैजॉरिटी ऐसे हैं। और बापदादा कभी-कभी जानबूझ के सीन देखते हैं, बापदादा के पास नेचरल टी.वी. है, यह टी.वी. नहीं। देखते हैं कैसे भागते हैं, नाश्ता किया, यह किया वह किया, भागा। अच्छा लगता है। ऐसे ही पुरुषार्थ में भी ड़बल मार्क्स लेना। लेने वाले हैं और परिवर्तन किया भी है और करने का उमंग भी अच्छा है। बापदादा को ड़बल विदेशियों की नेचरल नेचर एक बहुत अच्छी लगती है कि साफ दिल हैं। जो भी होगा छिपायेंगे नहीं, स्पष्ट। गिरेंगे तो भी स्पष्ट, चढेंगे तो भी स्पष्ट। तो साफ दिल बापदादा को प्रिय लगती है। अच्छा है। ड़बल मुबारक हो।

(15.12.2004)

भोले बाप को राज़ी करने का जो साधन है - सच्ची दिल पर साहेब राजी, वह ड़बल विदेशियों की विशेषता है। बाप को राज़ी करना बहुत होशियारी से आता है। सच्ची दिल बाप को क्यों प्रिय लगती है? क्योंकि बाप को कहते ही हैं सत्य। गॉड़ इज ट्रुथ कहते हैं ना! तो बापदादा को साफ दिल, सच्ची दिल वाले बहुत प्रिय हैं। ऐसे है ना! साफ दिल है, सच्ची दिल है। सत्यता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है।

(18.01.2005)

बापदादा को तो एक विशेषता डबल विदेशियों की बहुत प्यारी लगती है। जानते हो ना वह! सच बोलते हैं। चाहे गिरते भी हैं तो भी सच बोलते हैं, चढ़ते हैं तो भी सच बोलते हैं। तो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होता है। अब ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो एक दो को देखकर सभी जैसे रेस करते हैं ना, रीस नहीं रेस करते हैं तो कोशिश करते हैं नम्बर आगे जायें। लेकिन आप खुद तो आगे जाओ लेकिन साथियों को भी ऐसी लिफ्ट दो जो वह भी आगे जायें।

(16.11.2006)

डबल विदेशी बापदादा को बहुत प्यारे लगते हैं, प्यारे तो सभी लगते हैं लेकिन इसीलिए प्यार करते हैं कि सच्ची दिल वाले हैं। महसूस जल्दी करते हैं लेकिन परिवर्तन की शक्ति अभी और एड करनी है। एड करेंगे ना। परिवर्तन की शक्ति एडीशन करो। बाकी महसूस करते हो, जानते हो, इसीलिए बाबा का प्यार है कि सच्ची दिल हैं लेकिन परिवर्तन करने की थोड़ी और एडीशन करो।

(15.12.2006)

'सत्यता और पवित्रता की शक्ति को स्वरूप में लाते बालक और मालिकपन का बैलेन्स रखो'

आज सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरू अपने चारों ओर के सत्यता स्वरूप, शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं क्योंकि सत्यता की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। इस सत्यता की शक्ति का आधार है सम्पूर्ण पवित्रता। मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वप्न में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। ऐसी पवित्रता का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या दिखाई देता? ऐसी पवित्र आत्मा के चलन और चेहरे में स्पष्ट दिव्यता दिखाई देती है। उनके नयनों में रूहानी चमक, चेहरे में सदा हर्षितमुखता और चलन में हर कदम में बाप समान कर्मयोगी। ऐसे सत्यवादी सत बाप द्वारा इस समय आप सभी बन रहे हो। दुनिया में भी कई अपने को सत्यवादी कहते हैं, सच भी बोलते हैं लेकिन सम्पूर्ण पवित्रता ही सच्ची सत्यता की शक्ति है। जो इस समय इस संगमयुग में आप सभी बन रहे हो। इस संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति है - सत्यता की शक्ति, पवित्रता की शक्ति। जिसकी प्राप्ति सतयुग में आप सभी ब्राह्मण सो देवता बन आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र बनते हो। सारे सृष्टि चक्र में और कोई भी आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं बनते। आत्मा से पवित्र बनते भी हैं लेकिन शरीर पवित्र नहीं मिलता। तो ऐसी सम्पूर्ण पवित्रता इस समय आप सब धारण कर रहे हो। फलक से कहते हो, याद है क्या फलक से कहते हो? याद करो। सभी दिल से कहते हैं, अनुभव से कहते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार

है, जन्म सिद्ध अधिकार सहज प्राप्त होता है क्योंकि पवित्रता वा सत्यता प्राप्त करने के लिए आप सभी ने पहले अपने सत स्वरूप आत्मा को जान लिया। अपने सत बाप, शिक्षक, सतगुरू को पहचान लिया। पहचान लिया और पा लिया। जब तक कोई अपने सत स्वरूप वा सत बाप को नहीं जानते तो सम्पूर्ण पवित्रता, सत्यता की शक्ति आ नहीं सकती।

तो आप सभी सत्यता और पवित्रता की शक्ति के अनुभवी है ना! हैं अनुभवी? अनुभवी हैं? वह लोग प्रयत्न करते हैं लेकिन यथार्थ रूप में ना अपने स्वरूप, न सत बाप के यथार्थ स्वरूप को जान सकते। और आप सबने इस समय के अनुभव द्वारा पवित्रता को ऐसे सहज अपनाया जो इस समय की प्राप्ति का प्रालब्ध देवताओं की पवित्रता नेचरल है और नेचर है। ऐसी नेचरल नेचर का अनुभव आप ही प्राप्त करते हो। तो चेक करो कि पवित्रता वा सत्यता की शक्ति नेचरल नेचर के रूप में बनी है? आप क्या समझते हो? जो समझते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है वह हाथ उठाओ। जन्म सिद्ध अधिकार है कि मेहनत करनी पड़ती है? मेहनत करनी तो नहीं पड़ती ना! सहज है ना! क्योंकि जन्म सिद्ध अधिकार तो सहज प्राप्त होता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती। दुनिया वाले असम्भव समझते हैं और आपने असम्भव को सम्भव और सहज बना दिया है।

(30.11.2007)

याद करो - बाप का स्नेह क्या है! बाप के स्नेह से क्या-क्या अनुभव किया! तो स्नेह की स्मृति से मेहनत बदल जायेगी क्योंकि बापदादा को किसी भी बच्चे की मेहनत की स्थिति अच्छी नहीं लगती। मेरे बच्चे और मेहनत! तो मेहनत मुक्त कब बनेंगे? यह संगमयुग ही है जिसमें मेहनत मुक्त, मौज़ ही मौज़ में रह सकते हैं। मौज नहीं है तो कोई न कोई बोझ बुद्धि में है, बाप ने कहा है बोझ मुझे दे दो। मैं-पन को भूल ट्रस्टी बन जाओ। जिम्मेवारी बाप को दे दो और स्वयं दिल के सच्चे बच्चे बन खाओ, खेलो और मौज करो क्योंकि यह संगमयुग सभी युग में से

मौज़ों का युग है। इस मौजों के युग में भी मौज नहीं मनायेंगे तो कब मनायेंगे?

(18.01.2008)

हर एक अपने आपको चेक करो कि सदा दिल के स्नेह का अनुभवी हैं वा बीच में कोई स्नेह लीकेज तो नहीं है? अगर कोई भी आत्मा की तरफ प्रभावित हैं चाहे उनकी विशेषता पर, चाहे विशेष गुण पर प्रभावित हैं तो परमात्म प्यार के अन्दर अविनाशी के बदले लीकेज हो जाता है। इसलिए हर एक अपने आपको चेक करे कि लीकेज वाले सदा के स्नेही, सदा बाप के साथी, सदा बाप के हाथ का वरदान माथे पर हो, यह अनुभव नहीं कर सकते हैं इसलिए ज्ञानी तू आत्मा प्रिय हैं लेकिन ज्ञान के साथ-साथ सच्ची दिल, अविनाशी बाप का स्नेह आवश्यक है। अगर ज्ञान के साथ स्नेह बाप के साथ थोड़ा भी कम है, सच्ची दिल, साफ दिल का स्नेह थोड़ा भी कम है तो कहाँ-कहाँ मेहनत करनी पड़ती है। पुरुषार्थ में युद्ध करनी पड़ती है।

(15.11.2008)

हर एक अपने आपको देखो कि अनुभव की अथॉरिटी के तख्त पर वा सीट पर रहते हैं? अनुभव की सीट पर सेट रहने वाले अर्थात् संकल्प किया और हुआ, मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। समय नहीं लगाना पड़ेगा। हर श्रीमत से जीवन नेचुरल सहज सम्पन्न होगा क्योंकि पहले सुनाया सच्ची दिल साफ दिल पर बापदादा भी स्नेही आत्मा पर, लवलीन आत्मा पर हाजिर हो जाते हैं। जो हर श्रीमत पर हाजिर होता है तो बाप भी कहते हैं मैं भी हज़ूर हाजिर हूँ। आप जी हजूर करो तो हजूर सदा हाजिर है। सहज याद तो ब्राह्मण जीवन का नेचुरल गुण है।

(15.11.2008)

बापदादा क्या चाहता है? एक तो सच्ची दिल, साफ दिल का स्नेह। भोलानाथ बाप सच्ची दिल पर बहुत सहज राज़ी हो जाते हैं। जब भोलानाथ राज़ी तो धर्मराज काज़ी आँख भी नहीं उठा सकते। धर्मराज को भी बाय-बाय करके चले जायेंगे। वह भी आप बापसमान बच्चों को नमस्ते करेगा, झुकेगा। आप ऐसे बाप के प्यारे हो लेकिन सिर्फ चेक करना, कोई स्नेह में लीकेज नहीं हो। अपने देहभान वा दूसरे की कोई भी विशेषता की लीकेज खत्म। अनुभवीमूर्त।

(15.11.2008)

एक दो का अनुभव सुनने से कईयों को अनुभव द्वारा भी बल मिलता है। मानों कोई दिलशिकस्त हो जाता है तो दूसरे का अनुभव सुनता है, तो यह सदा खुशमिजाज रहता है इसकी शक्ल कभी मुरझाये नहीं, दिलखुश। तो एक दो का अनुभव सुनने से उल्हास में आ जाते। एक दो का अनुभव कम नहीं होता है, हर एक को ड्रामानुसार कोई न कोई विशेषता बाप द्वारा मिली हुई है। तो वह अनुभव सुनने से उमंग में आता है, यह कर सकता है तो मैं क्यों नहीं कर सकता! कभी भी दिल छोटा नहीं करना। बड़ी दिल, बड़ा बाबा। छोटा बाबा है क्या, बड़े ते बड़ा बाबा है, तो बच्चों की दिल सदा बड़ी। बापदादा का स्लोगन है बड़ी दिल, सच्ची दिल, साफ दिल तो हर मुराद हाँसिल। जो भी किचड़ा आवे ना, किचड़े की दुनिया है ना, तो कभी वायुमण्डल में किचड़ा उड़के आ जाता है लेकिन किचड़ा अपने पास नहीं रखो। जैसे स्थूल कमरे में सोते हो और किचड़ा हो जाए तो क्या होता है, सफाई नहीं करो तो मच्छर हो जाते हैं, फिर बीमारियाँ होती हैं, तो यह भी अगर मन में कोई भी बात रख ली, निकाला नहीं तो वह वृद्धि को पाती रहती। बस बाबा, मेरा बाबा, कहो तो हाजिर बाबा, बंधा हुआ है। बच्चा, बाप का बच्चा, भगवान का बच्चा, याद करे मेरा बाबा और बाबा हाज़िर नहीं हो, यह हो नहीं सकता। आपके पास बाप को बांधने की रस्सी है! क्या है? दिल का प्यार। कईयों को बाप से प्यार है, नहीं है यह नहीं कहेंगे, लेकिन दो प्रकार का प्यार है - एक है

नॉलेज के आधार से, मैं आत्मा हूँ, शरीर तो हूँ ही नहीं और आत्मा का बाप परमात्मा ही है और परमात्मा ज्योति के सिवाए और कोई सबका परमात्मा हो ही नहीं सकता। तो बाप बाप तो है, ज्योति स्वरूप है, सहयोग देता है, लेकिन हर समय दिल के स्नेह से मेरा बाबा निकले ऑटोमटिकली। साथी बनाया जाता है समय के लिए, आईवेल के लिए साथी काम में आता है, तो आपने बाप को कम्बाइन्ड रखा है, साथी बनाया है तो समय पर साथ लो। स्नेह से याद करो, एक है नॉलेज के आधार से स्नेह, एक है दिल के प्यार से स्नेह। तो चक करो प्यार है मीठे से, तो मीठा याद आता है, भूलता है? डॉक्टर की दवाई करेंगे लेकिन मीठा खायेंगे। तो चीज़ से प्यार है तो कहने से भी नहीं छोड़ते हैं और यह तो बाप है, सर्व प्राप्ति का अनुभव कराने वाला है। अभी चेक करो कि दिल का प्यार है? खुदा को दोस्त बनाय है? दोस्त किसलिए बनाते हैं? बाप से भी दोस्त से ज्यादा प्यार होता है। तो खुदा दोस्त बनाया है ना! कोई भी बात आवे, बाबा आप सम्भालो। छोटे बच्चे बन जाओ, बड़े नहीं बनो। तो बाप ले लेगा। प्यार की रस्सी से ऐसा बांधके रखो जो हिल नहीं सके। समझा!

(05.02.2009)

खुशी के लिए क्या कहते हैं? खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। तो वेल्थ हुआ ना। है वेल्थ आपके पास। खुशी है? हाथ उठाओ। खुशी है ना! तो वेल्थ है। और खुशी जैसा कोई भोजन नहीं, खुशी जैसी कोई खुराक ही नहीं है चाहे 36 प्रकार के भोजन हो लेकिन खुशी नहीं तो सूखा। और खुशी है तो सूखी रोटी 36 प्रकार का सुख देगी और बाप का वायदा भी है जो सच्ची दिल, साफ दिल, बड़ी दिल। तीन बातें याद रखो सच्ची दिल, सफ दिल, बड़ी दिल यह तीनों बातें अगर याद रहें, तो कोई भी समय दुनिया की हालतें कैसी भी हों लेकिन तीन ही बातें याद हैं तो आप सबको दाल रोटी बाप खिलायेगा। दो चार सब्जी नहीं खिलायेगा। दाल रोटी खिलायेगा। दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ। अनुभव किया है ना! पुराने

जो पहले पहले आये हैं उन्हों ने अनुभव कर लिया है। कभी भूखे रहे? और ही जो गुड़ है ना उसको बोर्नवीटा बनाके बापदादा हाथ से खिलाता था। और बापदादा के हाथ से रोटी खाते सबका पेट भर गया। बोर्नवीटा बनाने आता है, नहीं आता? कैसी भी हालत हो यह गुड़ सब्जी नहीं हो, दाल नहीं हो, यह बोर्नवीटा बहुत सुख देता है, बनाने सीख जाओ। सभी यहाँ सीख के जाना। आईवेल में यह बोर्नवीआ बहुत काम में आयेगा। लेकिन चार बातें याद करना। ऐसे नहीं एक भी बात कम होगी तो ढूंढना पड़ेगा, सहज नहीं मिलेगा। इसलिए चेक करो चार ही बातें हैं - सच्चाई, तन की, मन की, धन की, सम्बन्ध-सम्पर्क की, दिल की सच्चाई, दिल बड़ी। दिल बड़ी होती है तो जो भी इच्छा होती है, जरूरत होती है वह पूर्ण हो ही जाती है। करके देखो। जहाँ दिल बड़ी है ना वहाँ सब इच्छायें हो जाती है। दिल छोटी करेंगे तो सब क्रियेशन छोटी हो जाती। बाप राज़ी तो क्या कमी है। तो पुरुषार्थ करो।

(22.02.2009)

बापदादा फिर भी सभी बच्चों को प्यार देकर केहते हैं कि अपना वर्तमान और भविष्य निर्विघ्न बनाओ। संगदोष में नहीं आओ। संगदोष में आ जाते हैं, टैम्पटेशन है, संगदोष में नहीं आओ। हद की प्राप्तियाँ के आकर्षण में नहीं आओ क्योंकि बापदादा को तरस पड़ता है कि कहता है मेरा बाबा, कहता है मेरा बाबा और करता क्या है? इसीलिए आज होली का दिन है ऐसी-ऐसी बातें समझदार बनके जला दो। फिर टूलेट के बोर्ड से आगे बदल जाओ, बापदादा मदद करेगा लेकिन सच्ची दिल को। साफ दिल मुराद हाँसिल, करके देखो दिल से। सच्ची दिल और मुराद हाँसिल नहीं हो, हो नहीं सकता।

(09.03.2009)

यज्ञ सेवा का हजार गुणा पुण्य ज्यादा बनता है। तो आप जो सच्ची दिल, बड़ी दिल से सेवा करने वाले बने उन्हों को हजार गुणा ज्यादा पुण्य का खाता जमा हुआ।

(07.04.2009)

रोज़ रात को सोने के पहले बापदादा को गुडनाइट करने के पहले अपने सारे दिन का पोतामेल देना। अच्छा किया या बुरा किया? जो भी किया वह पोतामेल देके और अपने बुद्धि को खाली करके गुडनाइट करना। बाप से भी और बाप की याद में ही आप भी सो जाना। आपकी नींद बहुत अच्छी होगी। पहले खाली करना अपने को, बुद्धि में कोई बात नहीं रखना, बाप के रूप में सारा पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो आपको धर्मराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी हो जायेगा।

(31.03.2010)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501

राजस्थान, भारत

मोबाईलः +919414007497, +919414150607

फैक्स – 02974-238951

ई-मेल – bksparc@gmail.com